समभाव-समदृष्टि के सबक़

दिनांक 5 अप्रैल 2020 - 6 सितम्बर 2020

एकता का प्रतीक

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"सतयुग दर्शन वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN :978-93-85423-28-4

प्रथम संस्करण
सितम्बर, 2020

समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 5अप्रैल - 6सितम्बर 2020

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

★ महामन्त्र ★

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है।

उसी को जानो,

मानो और वैसे ही

गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु,
शरीर नहीं है।

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं,

ज्ञान को अपनाओ ।

निमित्त में नहीं,

नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
अप्रैल 2020		
1. दि: 05 का सबक़		01
2. दि: 12 का सबक़	वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 1	06
3. दि: 19 का सबक़	वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 2	11
4. दि: 26 का सबक़	वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 3	15
मई 2020		
5. दि: 03 का सबक़	वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 4	19
6. दि: 10 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...तीन ताप.. भाग 1	23
7. दि: 17 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...तीन ताप.. भाग 2	29
8. दि: 24 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 3 मीटिंग का उपदेश	35
9. दि: 31 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 4 (सर्गुण-निर्गुण)	40
जून 2020		
10. दि: 07 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 5 (सर्गुण-निर्गुण)	45
11. दि: 14 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 6	49
12. दि: 21 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 7 मैं ब्रह्म हूँ	55
13. दि: 28 का सबक़	वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 8 हीरा	60

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
जुलाई 2020		
14. दिः 05 का सबक़	वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 1	68
15. दिः 12 का सबक़	वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 2 (विराट्)	72
16. दिः 19 का सबक़	वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 3	77
17. दिः 26 का सबक़	वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 4	81
अगस्त 2020		
18. दिः 02 का सबक़	वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 5	86
19. दिः 09 का सबक़		92
20. दिः 16 का सबक़		98
21. दिः 23 का सबक़		102
22. दिः 30 का सबक़		106
सितम्बर 2020		
23. दिः 06 का सबक़		115

दिनाँक 5 अप्रैल 2020 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि सबको विदित ही है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित युक्ति अनुसार, आज से आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति दूसरे साल की पढ़ाई का शुभारंभ होने जा रहा है। इसलिए इस सर्वोच्च लक्ष्य की समयबद्ध प्राप्ति हेतु हिम्मत दिखाना और युग-युग में फर्स्ट निकलने वाले भक्त शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार नेक कमाई करते हुए उन्हीं की तरह तेजस्वी व प्रतापी बन जगत हितकारी नाम कहाना। जानो यह अपने आप में शब्द विचारों पर स्थिरता से बने रह जगत कल्याण के निमित्त सब कुछ निष्काम भाव से धर्मसंगत करते हुए अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त होने जैसी मंगलकारी बात है। केवल यही नहीं इस परम श्रेष्ठ उद्यम द्वारा ही आप सच्चेपातशाह जी की तरह अपना जीवन चरित्र भी परम पवित्र बनाने में सक्षम हो सकते हो। इसके प्रति सबके मन में तीव्र उमंग व उत्साह भरने के लिए आओ सजनों अब सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द सुनते हैं जो इस प्रकार हैंः-

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।
श्री राम नाम दी रटन लगा लै, राम नाम दी रटन लगा लै।
लगा लै दिल लगा के श्री राम नाम बोल।।

तेरा क्या लगेगा मोल श्री राम नाम बोल।
रे बोल रे बोल सजन श्री राम नाम बोल।
तेरा क्या लगेगा मोल श्री राम नाम बोल।।

जीवन चरित्र जीवन इन्हां दी ए बाणी।
सारी विश्व ते हिन ओ अस्थित।।

साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

जल और थल पवन और पानी, सूरज चांद विच चमकन ओ नित।
साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

जीव जन्तु जड़ चेतन प्रकाशे, प्रकाश रहे ने जगत दे विच।
साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

चौदह भवन नौ खण्ड ब्रह्माण्ड प्रकाशे, सप्तद्वीप गगन मण्डल विच।
साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

ओ३म् मकान ओन्हां दा ओ३म् स्थान है ओ३म् दी रटन लगाओ सजनों नित।
साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।

कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

ध्वनि:-

सिंहासन ते जब बैठे, ओ बैठे कुर्सी बिछा के।
हार गले विच पाके, गोदी विच चाके।।

हो हो हो हो हार गले विच पाके, गोदी विच चाके।
हां हां गोदी विच चाके, हूं हूं गोदी विच चाके।
हो हो हो हो हार गले विच पाके, गोदी विच चाके।।

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित इस कीर्तन को सुनने के पश्चात् हम सबको समझ आ गया होगा कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में अटलता से बने रहने पर व उनके वचनों की पूरी निष्ठा से पालना करने का पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम सच्चेपातशाह जी की भांति मंगलकारी व आनन्दप्रदायक परिणाम प्राप्त कर ब्रह्म नाल ब्रह्म हो सकते हैं।

सजनों सुनिश्चित रूप से ऐसा ही हो, इस हेतु आज ही से हम सब मिलकर अपने महान लक्ष्य को समयबद्ध प्राप्त करने की ओर आगे बढ़ने लगे हैं। इस विषय में जानो कि जीवन में जब कोई जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतु आत्मोन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होता है, तो उसके लिए पहले पड़ाव तक उसने जो भी सत्यज्ञान रूप में सीखा, समझा व धारण किया है उसको स्मृति में रखना अनिवार्य होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि स्मृति में रखे हुए सत्यज्ञान अनुसार आगे बढ़ने पर ही वह पूरी तरह से विकसित हो सकता है व परिपूर्णता को प्राप्त कर सकता है।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों आगे बढ़ने से पूर्व ऐसा सुनिश्चित करने का दृढ़ संकल्प लो और एक स्थिर बुद्धि व जितेन्द्रिय इंसान की तरह, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए, अगले चैत्र के यज्ञ से पहले आत्मज्ञानी बनने का अपना निर्धारित लक्ष्य पूरा कर महाराज जी के सुपुत्र कहाओ।

इस संदर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि कलियुग में ऐसे सुनहरी अवसर हर किसी को नहीं मिलते अपितु किसी विरले को ही प्राप्त होते हैं। अतः आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते अपने आप को सौभाग्यशाली समझो और इस आत्मज्ञान रूपी अनमोल धन को प्राप्त कर 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो जाओ। इस तरह धीरता से विचारसंगत पुण्य कर्म करते हुए व प्रभु हुकम अनुसार निर्लिप्तता से इस जगत का उद्धार करते हुए, शान से अपने वास्तविक इलाही स्वरूप में स्थिर हो जाओ और अपने यथार्थ स्वरूप को पाओ।

याद रखो सजनों इस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति हेतु, सुदृढ़ता से ताकतवर पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में समर्पित भाव से बने रह उनके वचनों की पालना करनी होगी व नाम ध्यान और निष्काम रास्ते पर विधिवत् बने रह परमपिता का आज्ञाकारी सुपुत्र बनना सुनिश्चित करना होगा। जानो तब ही तीनों तापों से छुटकारा पा, विश्रामपूर्वक सर्गुण-निर्गुण की खेडां खेडते हुए, बिना यत्न अपना नज़रिया समभाव अनुरूप बना, परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए एक रूप में स्थित हो पाओगे। सजनों जानो यह अपने आप में महाराज जी से मेल खा उत्तम पुरुष बनने जैसी मंगलकारी बात है।

सबकी जानकारी हेतु हम सब भी ऐसे उत्तम व्यक्ति बन सकें उसके लिए अगले सप्ताह से, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के सार रूप, बुधवार के बोर्डों की तरह ही अब क्रमबद्ध वीरवार के बोर्डों में वर्णित युक्तियों के व्यावहारिक रूप से आपको परिचित कराया जाएगा।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों आप सबके लिए बनता है कि बताई जाने वाली युक्ति को ठीक ढंग से समझने के लिए, वीरवार के बोर्डों को ध्यानपूर्वक दो-तीन बार अवश्य ही गहनता से पढ़कर आना ताकि यहाँ से जो भी बताया जाए, उसे धारण करने में आपको किसी विध् भी कोई कठिनाई न हो। जानो ऐसा

सुनिश्चित करने पर ही आप समयबद्ध आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बन पाओगे व परोपकार प्रवृत्ति में ढल अपने सोए भाग्य को जगा जीवन विजयी हो जाओगे।

अंत में सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार हिम्मत दिखाओ और जीवन लक्ष्य प्राप्ति के प्रति, अपने साथ-साथ संगी साथियों की भी हिम्मत बढ़ाई जाओ यानि उन्हें भी विचार पकड़ना व सत् बोलना सिखाई जाओ। इस प्रकार जेहड़ा प्रकाश है जे मन मन्दिर, ओही प्रकाश सारे जग अन्दर देखते हुए, एकता में आ जाओ और एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन हो अपना जीवन सफल बनाओ।

वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि विदित ही है कि गत वर्ष से आरम्भ करके विगत कक्षाओं तक हमने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विधिवत् वर्णित बाल अवस्था की और युवावस्था की युक्ति के जीवन महत्त्व को जाना। इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमने जो शब्द विचारों को अन्दर धारण करके, इस शरीर को पवित्र करने व खालस सोना होकर प्रभु के साथ प्रभु होने का संकल्प लिया था, आओ आज उसी के प्रति अपना आत्मनिरीक्षण करते हुए यथार्थता समझते हैं कि हम उन वचनों को वर्त-वर्ताव में ला एकता दिखाने में व महाराज जी के साथ मेल खा उत्तम पुरुष बनने में सफल हुए हैं या नहीं।

इस संदर्भ में सजनों आत्मनिरीक्षण कर अपना सही तरीके से जायज़ा लेने हेतु वीरवार के पहले बोर्ड में श्री साजन जी कहते हैं कि 'तीन प्रकार के पुत्र होते हैं उत्तम, मध्यम व मंद अधम'। जहाँ उत्तम पुत्र पिता का आज्ञाकारी होता है और खुशी से हर कारज समय पर प्रभु इच्छा अनुसार सिद्ध करने हेतु तत्पर रहता है, वहीं मध्यम पुत्र गिर-गिर कर फिर खड़ा होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह कारज करने के योग्य तो होता है पर खुशी के साथ नहीं करता। यही

कारण है कि वह सुकर्म पकड़ तो लेता है मगर कष्ट-क्लेश तथा दुःख आने पर छोड़ देता है। इसी प्रकार मंद अधम पुत्र पिता के वचनों के विरुद्ध मनमत अनुसार चलता है अर्थात् कहने पर भी हुकम अनुसार सत्य-धर्म के सीधे रास्ते पर नहीं चलता और सुकर्म नहीं करता।

सजनों उपरोक्त तीनों प्रकार के पुत्रों के स्वाभाविक स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए ही हमें समझाने हेतु श्री साजन जी स्पष्टतया कहते हैं कि केवल उत्तम पुरुष ही महाराज जी को प्यारा है क्योंकि वही कष्ट-क्लेश, दुःख-सुख में स्थिर बने रहता है और सुकर्मों को नहीं छोड़ता यानि सच्चाई-धर्म में स्थिर रहता है और तदनुरूप अपने फर्ज़ अदा को सच्चाई-धर्म से ही निभाता है। दुनियां वाले उस पर कितना ही घेरा क्यों न डालें वह किसी के घेरे में नहीं आता अपितु हर समय महाराज जी की गोद में अटल रहता है और हकूमत की कुर्सी पर हमेशा स्थिर रहता है। इस तरह स्थिर होकर थोड़े दिनों में ही वह जोत के साथ मेल खा कर तीनों कालों की पहचान कर त्रिकालदर्शी हो जाता है। जीवनदायक इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमें चाहिए कि हम महाराज जी के वचनों पर चलने का पुरुषार्थ दिखा उत्तम सुपुत्र बन के दिखाएं क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ यही कह रहा है किः-

उत्तम दा सीस ताज सुकर्म, उत्तम दा अटल राज सुकर्म।
सुकर्मों में उत्तम जकड़ता है, दुःख क्लेश कष्ट में आवे।

तो भी सुकर्म वह छोड़ता नहीं।
सच वर्ते सच वर्त वर्तावे, सुकर्मा नूं धारण कर,
फिर किसी से ओ डरता नहीं।
किस अग्गों सजनों ओ हथ जोड़े,
किस अग्गों टेके वह मत्था।
किस अग्गों टेके वह मत्था।
जेहड़ा है नाम ओ शब्द है गुरु,
किस अग्गों रखे ओ भेंटा, किस अग्गों रखे भेंटा।

इस तथ्य से सजनों समझ में आता है कि उत्तम पुत्र कलियुग में प्रचलित कर्मकांड व आडम्बरयुक्त चलन के अनुसार किसी शरीरधारी के आगे हाथ नहीं जोड़ता, न ही किसी के आगे मस्तक झुका भेटें चढ़ाता है अपितु वह तो 'जो नाम है वही शब्द गुरु है', इस तथ्य को स्वीकारते हुए सच का वर्त-वर्ताव करता है और सुकर्मों को धारण करके फिर किसी से नहीं डरता है। इस तरह वह महाराज जी के वचनों पर सुदृढ़ता से बने रह, आत्मनिर्भरता से इस मायावी जगत में निर्भय होकर स्वतन्त्रता व निष्कामता पूर्वक विचरने में सक्षम हो जाता है और त्रिकालदर्शी बन परोपकारी नाम कहाता है।

सजनों हम सब भी ऐसे ही योग्य उत्तम इंसान बनें इस हेतु वीरवार के पहले बोर्ड में जहाँ श्री साजन जी कहते हैं कि 'मखट्टू पुत्रां दा महाराज जी ने हाल फरमाया है फिर ओ लिखत विच आया है, ओ लिखत विच आया है', वहीं सजन श्री शहनशाह महाबीर जी ऐसे कुपुत्रों को सावधान करते हुए कहते हैं कि 'मखट्टू पुत्र नहीं ओ प्यारा बेटा, निकल जावे तो उस नूं निकलने देवो, फिर उसने आना है इस द्वारे बेटा'।

सजनों उपरोक्त के संदर्भ में यदि आत्मनिरीक्षण द्वारा हमने भली विध् खुद के स्वाभाविक स्वरूप को समझते हुए, अपने आपको मध्यम या मंद अधम पुत्रों की गणना में पाया है तो हमारे लिए उत्तम पुत्र बन, जीवन की हारी हुई बाज़ी को जीत में परिवर्तित करने हेतु, अविलम्ब संभलकर, शास्त्रविहित् महाराज के मुख की वाणी को धारण करना यानि कुदरती आए हुए शब्द ब्रह्म विचारों को आत्मसात् कर व्यवहार में लाना बनता है। सजनों जानो कि ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम महाबीर जी की आज्ञा अनुसार आत्मीय स्वभावों में स्थिर हो सकते हैं और अपने बदन से खोट निकाल व खालस सोना हो जोत के साथ मेल खा सकते हैं। याद रखो जोत के साथ मेल खाने पर ही हम अनादि अवस्था को प्राप्त हो सकते हैं और फिर धीरे-धीरे त्रिकालदर्शी बन सकते हैं।

सजनों अपना ऐसा मंगल करने हेतु उत्साह में आओ क्योंकि श्री साजन जी कह रहे हैं कि 'उस परमपिता ने अब बगीचे की सफाई करनी है छांगणा है और मुश्क हटानी है'। अतः इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों समय रहते ही अपना

जीवन बनाने हेतु यथार्थ स्वभावों में स्थिर रह कर महाराज जी की गोद में बने रहो। इस तरह अपना ध्यान प्रभु में इस्थर रखते हुए प्रभु को पा लो। अन्य शब्दों में सजनों ध्यान में प्रभु के संग जुड़े रहते हुए सर्गुण में परिपक्व रहो और अपने फर्ज़-अदा को सच्चाई धर्म से निभाओ। साथ ही साथ इस उत्तम अवस्था में निरंतर स्थिर बने रहने हेतु सदा सावधान व सतर्क रहो और किसी विध् भी किसी के घेरे में आ अपना ख़्याल व ध्यान जगत के संग नहीं जुड़ने दो। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही त्रिकालदर्शी बन पाओगे और उत्तम पुत्र कहलाओगे।

आगे श्री साजन जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहते हैं कि यद्यपि सर्गुण में स्थिर होना यानि फर्ज़ अदा को पूरा निभाना मुश्किल है तथापि यदि आप यह पराक्रम दिखा कर स्थिर हो जाते हो तो जोत के साथ मेल खाना कोई मुश्किल नहीं। कहने का आशय यह है कि यदि आप उस प्रभु को पाना चाहते हो तो आपको अपने शारीरिक स्वभावों को जीत कर परिपक्व होना ही होगा। ऐसा करने से आप जल्दी कामयाब हो जाओगे और सर्गुण में उसी कुर्सी पर स्थिर हो महाराज जी की गोद में रहते हुए घट-घट में स्थित हो जाओगे।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हम सब बताई युक्ति अनुसार महाराज जी के उत्तम सुपुत्र बनने में कामयाब हो जाएँ इस हेतु श्री साजन जी हमें श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि देखो श्री रामचन्द्र जी ने ईश्वर का हुकम प्रवान करने हेतु राज्य का लोभ छोड़कर, दुर्गम वनों में जा कर वनवास के कष्ट भोगना उचित समझा। इस पर लक्ष्मण जी ने क्रोध भी किया और कहा कि भरत से राज्य ले लिया जाए, परन्तु श्री रामचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि यह राज्य तो थोड़े दिनों का है, आखिर इसको तो एक दिन छोड़ना है, अगर हमने भरत के साथ विरोध किया तो दुनियां वाले कहेंगे कि श्री रामचन्द्र जी आत्मिक ज्ञान पाकर भी अपने स्वभावों पर स्थिर न रहे। इसलिए उन्होंने धर्म सच्चाई को न छोड़ा। इस तरह सजनों हुकम पर खड़े होने पर जब वह सुदृढ़ता से सच्चाई धर्म पर अटल हो गए तो उन्हें फिर वह राज्य गद्दी मिल गई। यह है सजनों सबसे उत्तम पुत्र की पहचान।

यकीन मानो सजनों आप भी इन अर्थों को धारण कर उत्तम पुरुष बन, त्रिकालदर्शी बन सकते हो। इसलिए आपको चाहिए कि इस दुनियां में रहकर धर्म सच्चाई पकड़ो, यश लो अपयश न लो क्योंकि यश की हमेशा जीत होती है व अपयश की हमेशा हार होती है। कहने का आशय यह है कि सबके प्रति समदृष्टि रखो और सर्व राम रूप समझो। इस तरह समभाव-समदृष्टि की युक्ति का अनुशीलन कर व विचार शब्द पर खड़े हो अपने स्वभावों पर फतह पा जाओ और कामयाब हो अमर पद पाओ। अंत में हम तो यही कहेंगे, यश कमाओ, यश कमाओ व अपना जीवन सफल बनाओ।

आप सबकी जानकारी हेतु विचार शब्द पर सुदृढ़ता से खड़े होने हेतु अगले सप्ताह हम विचार और अविचार इन दो शब्दों का अंतर समझते हुए जानेंगे कि विचारयुक्त रास्ता अपनाना क्यों आवश्यक है?

वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों आओ आज सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित विचार शब्द पर सुदृढ़ता से खड़े हो अपना जीवन सार्थक बनाने के योग्य बनने हेतु सजन श्री शहनशाह महाबीर जी द्वारा बताए विचार और अविचार दो शब्दों में क्या अंतर है, उसे गहराई से समझते हैं ताकि हम परमार्थी पिता के विचारशील आज्ञाकारी उत्तम सुपुत्र बनने में कामयाब हो सकें।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के अनुसार जहाँ विचार महाराज जी के मुख की वाणी है व कुदरती आई हुई है, वहीं अविचार कुसंग के कारण मनुराज ने रची है। फिर वह कहते हैं कि विचार ही सजनों जीत और फतह है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में एक कीर्तन के अंतर्गत कहा भी गया हैः-

विचार ते अविचार दो शब्द हैन।
विचार सबनां बातां वल्लों जित और फतह।
अविचार है हार अविचार है हार।।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए वह सर्वहितकारी हर मानव को सुझाव देते हैं कि जो बात किसी के साथ करो विचार कर करो और विचार से ही उत्तर दो। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी बात के विषय में कुछ निश्चित करने से पूर्व, एक न्यायाधीश की भांति, मन में उसके बारे में भली-विध् विवेकशीलता से चिंतन करो ताकि असावधानी के कारण कोई अनुचित विचार आपके हृदय में घर न कर जाए। इस तरह भ्रम व संशय रहित होकर, एकाग्रचित्तता से जीवन का प्रत्येक निर्णय सोच-समझ कर लेना अपने स्वभाव के अंतर्गत कर बेखौफा-बेखतरा परमार्थ के सवलड़े रास्ते पर आगे बढ़ते जाओ।

सजनों जानो कि ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप विचार-शक्ति से युक्त हो, अपनी बुद्धि का सदुपयोग करने में सक्षम हो पाओगे व वास्तविक रूप से विचारशील इंसान बन जाओगे। कहने का आशय यह है कि ए विध् आप विचार करने की पद्धति यानि चिंतन विधि में पारंगत हो जाओगे और निश्चित रूप से आपकी गणना समझदार इंसानों में होने लगेगी। ऐसा होने पर सजनों आप स्वतन्त्र रूप से किसी बात या विषय पर विचार कर निर्णय लेने में व अन्यों के समक्ष अपने विचार स्पष्टतया प्रकट करने के योग्य बन जाओगे। इस तरह विचार या चिंतन करने की विशेष क्षमता प्राप्त होने पर आपके अन्दर इस मिथ्या जगत से कुछ भी अविचारयुक्त धारने की अभिलाषा ही नहीं पनपेगी और आपके लिए विचार के साथ कुल दुनियां में और जनचर, बनचर, जड़-चेतन में एक प्रकाश समझ जगत विजयी होना सहज हो जाएगा।

इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि विचार को पकड़ो अर्थात् विचार के साथ सबमें भगवान निगाह आए और सर्वभगवानमय दृष्टि हो जाए। जनचर-बनचर, जड़-चेतन सब में एक भगवान हो जाए। यह है सर्वव्यापी भगवान को मानना। इसी पर दृष्टि को खड़ा कर लो। इस प्रकार एक दृष्टि-एक दर्शन हो जाएगा। जब ऐसा हो गया तो फिर क्रोध किस से करोगे? भगवान के साथ। निन्दया किस की करोगे किस की सुनोगे? भगवान की। वैरी-दुश्मन किसको समझोगे? भगवान को। झूठ किस से बोलोगे? भगवान से। याद रखो सर्वव्यापी भगवान सब कुछ देख रहे हैं। इस तरह हौं-मैं मिट जाएगी

और अफुर अवस्था आ जाएगी। इसीलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

ओ दाता हनुमान जी आ-आ-आ, जेहड़ा शब्द विचार बता रहे हो।
जैं शब्द विचार पकड़ लिया, ओहदे सारे रोग हटा रहे हो।।

उपरोक्त विवेचना के दृष्टिगत सजनों विचारवान बनो क्योंकि विचारवान ही विवेकी, सत्यदर्शी, सहनशील, ध्यानी, विवादहीन, बुद्धिजीवी व सावधान होता है। इसके विपरीत अविचारी विवेकहीन, लापरवाह, असावधान, अधीर व वाद-विवाद युक्त होता है इसलिए विचारमूढ़ यानि अज्ञानी व बुद्धिहीन कहलाता है और उसे सरलता से बहकाया जा सकता है। इस संदर्भ में द्वापर युग के विचारमूढ़ अर्जुन का उदाहरण हमारे सामने ही है जिसको जाग्रति में ला विचारवान बनाने के लिए भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता का उपदेश दिया। अब भी सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा समभाव समदृष्टि का स्कूल खोलकर हम विचारमूढ़ कुबुद्धि इंसानों को पुनः विचारवान बना सद्‌बुद्धि में लाने का यत्न किया जा रहा है। अतः इस यत्न से लाभ उठाओ और समय रहते ही विचार पर खड़े हो अपना जीवन बनाओ। इस संदर्भ में अब सुनो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा हैः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

युक्ति जैं प्रवान कीती आ-आ-आ, ओहदी भक्ति वी सावधान होई।
विचार शब्द जैं पकड़ लिया, ओहदी दुनियां ते उच्ची शान होई।।

बात बताऊं है सुनने वाली आ-आ-आ, बात बताऊं उसे जेहड़ा सुनने योग्य होवे।
किस तरह बताऊं उसे साजन जी, जेहड़ा पुत्र ही अयोग्य होवे।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

ओ दाता हनुमान जी आ-आ-आ, जेहड़ा शब्द विचार बता रहे हो।
जैं शब्द विचार पकड़ लिया ओहदे सारे रोग हटा रहे हो।।

चरण शरण दयालु श्री राम जी दी आ-आ-आ, साडी अरज़ सुणों जरूर।
रोग हटे संकट मिटे,एहो साडी अरज़ी करो मन्जूर।।

रोग सारे मिट गये आ-आ-आ, मिट गया ओहदा परिवार।
मुक गई ओहदी आरबला, जेहड़ा रोग रिहा हाई दिखाल।।

रोग हटे कलेश हटे गई विपत्ति सारी आ-आ-आ, सुख सम्पत्ति घर में बसे।
जित्थे खड़े हो गये कृष्ण मुरारी, कृष्ण मुरारी चतुर्भुजधारी।।

(श्री महाबीर जी कह रहे हैं)

ओ बोल उठे हनुमान, इस विच जीवां दा कल्याण।
अपना आप लवो पहचान, इस विच जीवां दा कल्याण।।

ओ खुशियां माणे ओ हो, ओ खुशियां माणे वाह वाह।
ओ श्री राम जी दा बन गया यार, कैसा सोहणा पावे सिंगार।
ओ देख लवे सारा विस्तार, ओहो रंग माणे वाह वाह, ओहो रंग माणे ओ हो।।

(यह शब्द जनता बोल रही है)

भगवान बैठे कुर्सी ते जनता कैसी हर्षाई ।
के अखियाँ मिच वे गइयां, ओ कैसी रौशनी आई।
के अखियाँ मिच वे गइयां, ओ कैसी रौशनी आई।।

लालसा हाई श्री राम दीदार दी,नहीं कीती असां कमाई।
के अखियाँ मिच वे गइयां, अखियाँ कमज़ोरी दिखाई।
के अखियाँ मिच वे गइयां, अखियाँ कमज़ोरी दिखाई।।

सजनों आपके साथ ऐसा न हो इस हेतु विचार पर खड़े होने की हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और हिम्मत दिखा के जन्म की बाज़ी जीत जाओ।

दिनाँक 26 अप्रैल 2020 का सबक़

वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत दो सप्ताहों में जो अपने संकल्प कुसंगी को संगी बना, उत्तम सुपुत्र बनने के प्रति बातचीत हुई उसको दृष्टिगत रखते हुए श्री साजन जी के आदेश अनुसार सब सजनों को बुलाकर बड़े प्रेम और प्रीति से पूछो कि उस ताकतवर पिता के चरणों में रहना चाहते हो या निकलना चाहते हो?

इस संदर्भ में हम सबसे सही निर्णय लेने में कोई चूक न हो उसके लिए हमारे अन्दर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास का भाव भरने हेतु श्री साजन जी हमें इस सत्य से परिचित कराते हुए कहते हैं कि 'उस पिता के चरणों में रहने से जो चाहोगे सो पाओगे'। इसी बात को खोल कर बताते हुए वह आगे कहते हैं कि जो भी सजन, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए नाम, ध्यान और निष्काम रास्ते को पकड़ लेते हैं उस सजन के संकट दूर हो जाते हैं। अतः इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि उस ताकतवर पिता के चरणों में सब कुछ मिल सकता है अविलम्ब पुरुषार्थ दिखा विचार पर खड़े हो जाओ क्योंकि विचार ही हमारी जीत और फतह-फतह है। सजनों ऐसा ही हो इस हेतु श्री साजन जी कहते हैंः-

‘सजनों अपने जन्म दा है अखण्ड पाठ, तिन वक्त तुसां रखना याद।
अपनी असलियत दा पाओ प्रकाश, तिन वक्त तुसां रखना याद‘ ।।

सजनों जानो कि यह आदेश अपने आप में ख़्याल यानि सुरत के अज्ञानमय अंधकार से उबर, पुनः आत्मस्मृति में आ प्रकाशमय अवस्था में ध्यान स्थिर होने जैसी मंगलकारी बात है। इसीलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बारम्बार शास्त्रविहित् नीति-नियमों अनुसार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा जीवन उद्धार हेतु बताई गई युक्तियों पर सुदृढ़ता से बने रह, निष्काम भाव से परमार्थी धन कमाने को प्राथमिकता देने का सुझाव दे रहा है। ऐसा सद्-पुरुषार्थ दिखाने में हमसे किसी कारण भी कोई चूक न हो उसके लिए हमें श्री साजन जी संसारी पिता-पुत्र का दृष्टांत देते हुए कहते हैं कि ‘सजनों सुनो अगर संसारी पुत्र मखट्टू हो जावे तो उस पिता को कितना क्रोध आता है और अगर वह निकल जावे तो पिता को दुगना क्रोध आता है। ठीक इसी तरह परमार्थी पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ओ दाता ओ ताकतवर जिनसे मौत भी काँपती है उस पिता का पुत्र मखट्टू हो जावे या निकल जावे तो उस पिता को सजनों कितना कोप होगा‘। अतैव याद रखो ‘सजन श्री शहनशाह हनुमान जी नाम का दाम लेते हैं और प्रसन्न होते हैं‘। सजनों इस बात के जीवन उपयोगी महत्त्व को समझते हुए सुनिश्चित करो कि आपके जन्म का अखण्ड पाठ जीवन की किसी भी अच्छी-बुरी परिस्थिति में खंडित न हो। इस तरह सजनों उस परमपिता को प्रसन्न कर उनका संग प्राप्त कर सब कुछ पा लो।

सजनों यही नहीं वह परमेश्वर तो हमें सचेती में लाने के लिए मिसाल के तौर पर सजन सुदामा व मर्दाने का उदाहरण भी देते हैं और कहते हैं कि ‘सजनों सुनो- सुदामा सजन श्री कृष्ण जी का मित्र था, वचनों की पालना न करने के कारण उसने भीख मांगी फिर सजन श्री कृष्ण जी के पास उसे आना पड़ा। इसी तरह मर्दाने ने भी सजन श्री गुरु नानक जी के वचन न पाले। फिर उसको भी उनके पास आना पड़ा और उसने उनसे सब कुछ पाया। स्वार्थ की तरफ से वह सुखी हो गये, और परमार्थ की तरफ से प्रभु से मेल खा गये‘।

सजनों यह सब जानने-समझने के पश्चात्, विचार पर खड़े हो जगत विजयी होने के लिए हमारे लिए यही हितकर है कि हम सहर्ष मनुराज द्वारा रचित जीवन का अविचार युक्त कवलड़ा रास्ता छोड़, कुदरती आए हुए शास्त्रविहित् विचारयुक्त सवलड़े रास्ते को अपना इस तरह विचारवान बन जाएं कि हमारी पकड़ से आद् सत्य कदापि न छूटे और ए विध् हमारा ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जुड़ा रहे और हम भी सजन सुदामा व सजन मर्दाने की तरह स्वार्थ की तरफ से सुखी हो जाएं व परमार्थ की तरफ से प्रभु से मेल खा जाएं। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ यह कार्य सिद्ध करने हेतु हमें क्या समझा रहा हैः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

कवित्तः-

बोलन लगी जनता बोले दयालु करो अराधना,
फिर वक्त नहीं आवना जे।
सजनों जे दिन बीत गए,
ते फेर तुसां पछोतावना जे।।

सजनों भजन बन्दगी है सिंगार तुआडा,
आ-आ-आ-आ, ओही तुआडा गहणा जे।
जे सिंगार ए बैठे विगाड़ सजनों,
ते फेर मारो मार तुसां रोवणा जे।।

इन्सानों कई जन्मा दी हारी होई बाज़ी,
आ-आ-आ-आ, इस जन्म विच न खोवणी जे।
संकटटारी दे वचना ते चल पवो,
फिर सजनों जित तुम्हारी जे।।

सजनों आयु बीतदी जांदी ने, आ-आ-आ-आ,
ते फेर समय नहीं आवणा जे।
संग रहो सजनों असाडड़े,
जे जीवन तुसां बनावणा जे।।

(जनता बोल रही है)

सानूं चाह तां हाई घनेरी,
आ-आ-आ-आ, दयालु तुआडे दीदार दी।
उन्नति न होवन दी ख़ातिर कशिश हाई मन दे विच।
पर न पाया धनुषधार तुआडा दीदार जी।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

अपनी ज़िन्दगी न करो तबाह सजनों,
आ-आ-आ-आ, जे जीवन तुसां बनावणा जे।
साडे नैनां नाल नैन मिलाओ सजनों,
जे मेल जोत नाल खावणा जे।।

इन्सानों जैं जीवन बनाया अपना,
आ-आ-आ-आ, जैंदे छुट गये सारे ख़्याल सजनों।
ओहदी जोत जगे निर्वाण दे अन्दर,
ते जग रही जे ओ कमाल सजनों।।

वीरवार का पहला बोर्ड ...भाग 4

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताहों की बातचीत अनुसार अब जब हमें समझ आ ही गया कि 'विचार ही फ़तह है' तो हमारे लिए बनता है कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की सुदृढ़ता से पालना करते हुए उन प्रियवर के द्वारे पर एक आज्ञाकारी कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र की तरह समर्पित भाव से आजीवन बने रहें। सजनों ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हमारा संकल्प प्रभु को लोचेगा। ए विध् जैसे ही हमारा संकल्प प्रभु की तरफ हो गया तो सजनों जिस तरफ हमारा संकल्प होगा उसी तरफ हमारी दृष्टि हो जाएगी। इस प्रकार हम एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित हो जाएंगे।

इस उत्तम अवस्था को प्राप्त होने पर ही हमें बोध होगा कि 'उस ताकतवर पिता के घर सब कुछ है' और हम जो भी चाहें यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि अगर हमारे मन में अपने बच्चों को नाम रूपी परमार्थी धन दिलवाने की चाहत है तो हम उन्हें भी यहाँ से वह दिलवा अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। इसलिए तो श्री साजन जी पुनः कहते हैं कि 'विचार करके निकलो'। कहने का आशय यह है कि इस तथ्य को सदा स्मृति में रखते हुए कि

'ताकतवर ताकतवर पिता दाता शहनशाह ओ ताकतवर, जो कुछ चाहवो सो लवो मेरे सजनों, सब कुछ है उन्हां दे घर, ओ है जे ताकतवर ओ है जे ताकतवर', इस द्वारे के नीति-नियमों पर स्थिरता से बने रहो। इस तरह श्री साजन जी के वचनानुसार, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर बने रह, उन द्वारा प्रदत्त युक्ति अनुसार बैहरूनी वृत्ति छोड़ कर अन्दरूनी वृत्ति धारण कर, अपनी वास्तविकता को जान जाओ और ए विध् अपने ख़्याल को जगतीय मोह-माया से आज़ाद कर प्रकाशित अवस्था में आ जाओ। अन्यथा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना के विरुद्ध कुछ भी करने पर संकल्प-विकल्प के चक्रव्यूह में पड़, कष्ट-क्लेशों में फँस जाओगे।

सजनों इसी बात को मध्य नजर रखते हुए, वीरवार के प्रथम बोर्ड के अंतिम पहरे में कहा गया है 'झुखना साडा रोना सी, संकल्प झुखता है इन्सान रोता है'। सजनों कहने का आशय यह है कि उस शहनशाह के द्वारे पर होते हुए हम जीवन में दुःख-सुख प्राप्त होने पर यानि अभाव, कष्ट, हानि आदि की अवस्था आने पर, इस दुर्दशा को प्राप्त न हो जाएं, उसके लिए ही संकल्प को ठीक करने का आदेश दिया गया है। इस संदर्भ में संकल्प को ठीक रखने की युक्ति बताते हुए कहा गया है कि यदि 'ख़्याल आपका महाराज जी के साथ जुड़ जाए तो रोना मिट जायेगा'।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों परम पुरुषार्थ दिखा अपने संकल्प को तो स्वच्छ कर ही लो साथ ही सत्संग से भी पूछो कि 'कौन रोना बन्द कर सकता है और कौन बन्द नहीं कर सकता'। जो रोना बन्द कर सकते हैं वह अपना नाम लिख कर दें। जिन्होंने नाम लिख कर दिया है, अगर उसके बाद वह फिर रोयें तो वह जुर्माना दें। जो रोना बन्द नहीं कर सकते वह जुर्माना न दें, फिर भी वह सजन यत्न करें कि रोना मिट जाए। जब उनका रोना मिट जाय, तो वह अपना नाम न रोने वालों के साथ लिखा जाएं। ए विध् सजनों श्री साजन जी के वचनानुसार संकल्प को सजन और संगी बनाओ और रोने-झुखने से निजात पा उत्तम पुरुष बन जाओ। इस संदर्भ में सजनों याद रखो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा है:-

आत्मिक ज्ञान दी जिस सजन नूं होवे चाह,
उस सजन दी जिव्हा न झुखे, संकल्प न झुखे, झुखना है फुरना।
ओ ओ ओ ओ ओ।
सजनों झुखना ओ साडा रोना सी।
ओ झुखना साडा मुक ही गया, ओ रोना साडा हट ही गया।
ओ झुखना साडा मुक ही गया, ओ रोना साडा हट ही गया।।

श्री राम रूप ओ सजनों सारी नगरी है,
जनचर बनचर जड़ चेतन कुल सारी सगली है।
जनचर बनचर जड़ चेतन कुल सारी सगली है।
ओ रोना साडा मुक ही गया,
ओ झुखना साडा हट ही गया, झुखना साडा हट ही गया।।

महाराज जी ने सजनों एकता दिखाई है,
देश देशान्तर सजनों उसे दी रौशनाई है।
देश देशान्तर सजनों उसे दी रौशनाई है।
ओ झुखना साडा हट ही गया, ओ रोना साडा मुक ही गया।।

सर्गुण निर्गुण सजनों एक दा नज़ारा है।
मन मन्दिर प्रकाश रिहा, प्रकाशे सिरजनहारा है।।

मन मन्दिर प्रकाश रिहा, प्रकाशे सिरजनहारा है।
ओ झुखना साडा मुक ही गया,
ओ रोना साडा हट ही गया ओ रोना साडा हट ही गया।।

इक निगाह इक दृष्टि दा नतीजा, जो सजन आ के सुनावेगा।
ओ दिव्य दृष्टि दा सबक लै के, महाराज नाल मेल ओ खावेगा।।

महाराज नाल मेल ओ खावेगा, महाराज नाल मेल ओ खावेगा।
ओ झुखना साडा मुक ही गया, ओ रोना साडा हट ही गया।।

सजनों इक निगाह इक दृष्टि दे विच खलोना जे।
महाराज नाल मेल खा के महाराज हुण होना जे।
महाराज हुण होना जे, महाराज हुण होना जे।।

शब्दः-

सजनों विराट नगरी अपना आप।
फिर अपना आप पहचान लिया, ओ ही चानणा ओ ही प्रकाश।।

अतः आप भी युक्ति की प्रवानगी द्वारा, अपना झुखना रोना मिटा सर्व सर्व प्रभु के दर्शन पाओ और आनन्द से जीवन बिताते हुए अंत मोक्ष को पा जाओ।

दिनाँक 10 मई 2020 का सबक़

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...तीन ताप.. भाग 1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह तो सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान संक्रमण काल में आध्यात्मिक विद्या के अभाव के कारण अधिकतर मानव इस संसार में आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक इन तीनों तापों से संतप्त हो अपना वास्तविक अस्तित्व भूल चुके हैं। इसीलिए आज उन्हें एक सदाचारी इंसान की तरह शास्त्र द्वारा अनुमोदित विधान या पद्धति अनुसार जीवन जीने के महत्त्व की खबर नहीं रही है और वे धर्मानुकूल आचार-व्यवहार करने में असमर्थ हो, मनगढ़ंत आडम्बरी धर्मों का अनुयायी बन पथभ्रष्ट हो चुके हैं। यही कारण है सजनों कि उनकी जिह्वा की स्वतन्त्रता, संकल्प की स्वच्छता व दृष्टि की कंचनता भंग हो गई है और उनके लिए सत्य-धर्म के निष्काम मार्ग पर चलते हुए, एकता, एक अवस्था में बने रहना नामुमकिन सी बात हो गई है। अन्य शब्दों में कहें तो मनुष्य की इसी स्वाभाविक कमज़ोरी के कारण आपसी व्यवहार के दौरान दिखने वाला द्वि-द्वेष व एक-दूसरे पर प्रभुत्व जमाने का खेल, आज अपने चरमोत्कर्ष पर है। मानव की इसी हालत के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

दुनियां वाले इन्सान बिगड़ गये, बिगड़ गई प्रजा ओ सारी।
बिगड़ गया दुनियां दा राजा, बिगड़े ओ खलकत सारी।।

इस संदर्भ में सजनों चाहे तीनों तापों से तापग्रस्त सभी मानव इस निकृष्ट अमानवीय आचरण के कारण अनेकानेक कष्ट, परेशानियाँ व दुःख झेल रहे हैं पर फिर भी वे सब अलगाववाद के स्वभाव से उबर अपने आप को पुनः मानव धर्म अनुरूप साध, सजन भाव अपनाने में असमर्थ पा रहे हैं। कहने का आशय यह है कि अंतर व बाह्य द्वन्द्वों में गलतान हो वे शांति-शक्ति को धारण करने में इतने कमजोर पड़ चुके हैं जिसका कि वर्णन भी नहीं किया जा सकता। इसीलिए तो वे विवेकहीन, असत्य व अधर्म का कामनायुक्त रास्ता अपना, स्वार्थ साधने के निमित्त एक-दूसरे पर घात लगाने से भी नहीं सकुचाते और बारम्बार कहने के बावजूद भी परमार्थ के रास्ते पर प्रशस्त होने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते। कहने का तात्पर्य यह है कि जो मानव सतयुग में समवृत्ति पर स्थिर बने रहते हुए परस्पर समदर्शिता अनुरूप सजनता का व्यवहार करने में सक्षम था, वही मानव आज इस तरह अपराध प्रवृत्ति में ढल गया है कि उसे पुनः उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो जीवन की यथार्थता को समझना कठिन प्रतीत हो रहा है।

सजनों इस तथ्य के दृष्टिगत अगर आप भी आत्मिक विद्या के अभाव के कारण तीनों तापों से परेशान हो, इस दयनीय अवस्था को प्राप्त हो चुके हो तो महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते, उस कष्टमय कंटक भरे मार्ग पर बने रहना व नाना प्रकार की कठिन पीड़ा भुगतना आपको किसी विध् भी शोभा नहीं देता। अतः हमारा सुझाव है कि इस भयावह परिस्थिति से उबर, पुनः मानवता का प्रतीक बनने के लिए, अविलम्ब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को रक्षार्थ दिल से पुकारो और उनके जीवनदायक वचनों की पालना करते हुए, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आध्यात्मिक विद्या को विधिवत् ग्रहण कर, उसे आत्मसात् करने में निपुण हो जाओ। इस तरह सजनों जाग्रति में आ पुनः सजन पुरुष बन जाओ।

इस संदर्भ में जानो कि जब सच्चेपातशाह जी को भी तीनों तापों ने सताया तो उन्होंने भी यही तरीका अपना कर समदृष्टि के रास्ते पर चलने की युक्ति प्राप्त की और अपना जीवन सफल बनाया। ऐसा होने पर वह अत्यन्त सहज भाव से कह उठेः-

ताप लथा रघुनाथ मिले, दासी होई प्रसन्न
रोग सारे मिट गए, मिल गए सूरज चन्द

आप सब भी ऐसा ही शुभ परिणाम प्राप्त करने में सफल हों उसके लिए सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित भजन 'तीनों तापों ने आन सताया ए' का एक-एक शब्द बहुत ध्यान से पढ़ो व अपने स्वभावों को विकृत करने वाले अवगुणों को पहचान, सहर्ष शारीरिक स्वभावों की सफाई कर अपना हृदय सचखंड बना लो। इस प्रकार आत्मसाक्षात्कार कर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लो और स्वाभाविक तौर पर धर्मसंगत निरंतर सत्य पथ पर निष्काम भाव से बने रह परोपकार कमाओ। सजनों यह अपने आप में जीवन की हर अच्छी-बुरी परिस्थिति में समभाव पर स्थित रहते हुए स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन जीने की बात होगी।

निःसंदेह सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आपके लिए अफुरता से अपना ख़्याल प्रभु संग जोड़े रख आत्मज्ञान प्राप्त करना सहज हो जाएगा और समदृष्टि का सबक़ प्राप्त हो जाएगा। सजनों समदृष्टि का सबक़ मिल गया तो तीनों तापों से छुटकारा मिलना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा और एक सत्-वादी इंसान की तरह विचार, एक दृष्टि, एकता, एक अवस्था में सुदृढ़ता से बने रहना सहज हो जाएगा। ऐसा मंगलकारी होने पर सजनों अवश्यमेव ही अपना घर सतयुग बना लोगे और जन्म की बाज़ी जीत जीवन सफल बना लोगे।

ऐसा ही हो उसके लिए सजनों अब इस भजन को ध्यान से सुनो और ऊपर लिखी विधि अनुसार क्रिया करते हुए बेझिझक अपनी यथार्थ स्वाभाविक अवस्था का ब्यान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे करते हुए तीनों तापों से छुटकारा पाने वाले योग्य पात्र बनो।

तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
महाबीर जी दे चरण मैं धो धो पीवां,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
सुत्ती दुनिया नूं आप जगा ही दियो,
नाम हृदय विच अपना बसा ही दियो।
अपने चरणां विच लगाया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
काम क्रोध नूं परे हटाओ भैणां,
महाराज जी नूं जल्दी सजाओ भैणां।
चित्त हरि चरणां विच लाया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
आशा तृष्णां नूं परे हटाओ भैणां,
महाराज जी नूं वस्त्र पहनाओ भैणां।
महाबीर जी ने ऐह समझाया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,

हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
मोह माया दी फाँसी हटा ही दियो,
माला रघुनाथ जी दे गल विच पा ही दियो।
महाबीर जी ने रस्ता बताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
लड़ाई झगड़ा भैणां मिटा ही दियो,
रघुनाथ जी नूं मस्तक तिलक लगा ही दियो।
महाबीर जी आख सुनाया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
नाम कठ्ठा कर के लै आओ भैणां,
रघुनाथ जी दे दर्शन पाओ भैणां।
महाबीर जी ने रस्ता दिखाया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
वाशना नूं परे हटाओ भैणां,
जन्म मरण तों बच जाओ भैणां।
जपो नाम बली ने बताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए,
सुन लौ अर्ज मेरे बलधार जी ए।
समदृष्टि दा रस्ता बताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।
तीनों तापों ने आन सताया ए,
हुन रक्षा करो महाबीर रक्षा करो।

सजनों इसी परिप्रेक्ष्य में अगले सप्ताह वीरवार के दूसरे बोर्ड के अनुसार फिर से चर्चा करेंगे कि हकीकत में समस्त रोगों के उत्पादक ये तीनों ताप क्या हैं और जिनको तीनों तापों ने सताया है, वे सजन चाहे कितना ही यत्न करें, विश्राम क्यों नहीं पा सकते?

तब तक सजनों आप भी आज की सारी बातचीत को ध्यान में रखते हुए इस विषय में पढ़-समझ कर आना ताकि आपको आगामी रविवार सारी बातचीत समझ में आ सके।

दिनाँक 17 मई 2020 का सबक़

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...तीन ताप.. भाग 2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हमने पिछले सप्ताह जो तीनों तापों जैसे गंभीर विषय के बारे में सुना व समझा उस सारी बात को धारण कर आत्मसात् करने के योग्य बनने हेतु आओ अब उसी के बारे में आगे समझते हैं।

इस संदर्भ में सर्वप्रथम सजनों जानो कि ताप शब्द का शाब्दिक अर्थ है हृदय का दुःख, मानसिक कष्ट-क्लेश, बुखार, पीड़ा, अग्न आदि। सजनों यह तापत्रय जड़तत्व के स्वाभाविक गुण हैं तथा चित्त की चंचलता व अस्थिरता के परिचायक हैं। इसी से राग-द्वेष, काम, क्रोध, आशा-तृष्णा, मोह-माया, वाशना व व्याधि यानि रोग, विपत्ति, आवेश, रोष, ग्लानि, जलन, झंझट-बखेड़ा, लड़ाई-झगड़ा, खेद, कष्ट होता है व स्वभावों का टैम्परेचर घटता-बढ़ता है। परिणामतः मन में असंतोष व अधीरता का भाव पैदा हो जाता है और संकल्प का झुखना व इन्सानों का रोना आरम्भ हो जाता है। सजनों इनका लक्षण पीड़ा व संताप है तथा यह साधना में विघ्नकारी सिद्ध होते हैं। परिणामतः मानव की पकड़ से परमार्थ का रास्ता छूट जाता है। आगे इसी विषय को गहराई से समझने हेतु जानो कि शास्त्रों अनुसार इस सृष्टि के कितने अंतवर्त्ती भेद हैं?

जानो इस सृष्टि के तीन अवान्तर यानि अंतवर्त्ती भेद हैं:-अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैव।

अध्यात्म :- जो सीधे अपने साथ सम्बन्ध रखनेवाले हैं, जैसे बुद्धि, अहंकार, मन, इन्द्रियाँ, शरीर और आत्मा।

अधिभूत :- जो अन्य प्राणियों की भिन्न-भिन्न सृष्टि से सम्बन्ध रखने वाले हैं, जैसे गौ, अश्व, पशु-पक्षी आदि।

अधिदैव:- जो दिव्य शक्तियों की सृष्टि से संबंध रखने वाले हैं जैसे पृथ्वी, सूर्य, देवता आदि।

अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैव सृष्टि के संबंध से ही तीन प्रकार का सुख-दुःख होता है.......आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।

आध्यात्मिक सुख-दुःख दो प्रकार का होता है----शारीरिक और मानसिक।

आध्यात्मिक:- शरीर का बलवान, फुर्तीला और स्वस्थ होना शारीरिक सुख है, शरीर का दुर्बल, अस्वस्थ और रोगी होना शारीरिक दुःख है। इसी प्रकार शुभ संकल्प, शांति आदि मानसिक सुख है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, विषाद, अहंकार, ईर्ष्या, तृष्णा, शोक, राग, द्वेष आदि मानसिक दुःख हैं।

आधिभौतिकः- आधिभौतिक सुख वह हैं जो स्थावर व जंगम में दूसरे प्राणियों से मिलता है जैसे गौ आदि से दूध-घृत, पेड़-पौधों से अनाज व सब्जियाँ, घोड़े आदि से सवारी का। आधिभौतिक दुःख वह हैं जो पशु, पक्षी, मनुष्य, पिशाच, मच्छर, सर्प, बिच्छु आदि प्राणियों के काटने से प्राप्त होता है।

आधिदैविकः- आधिदैविक सुख प्रकाश, वृष्टि आदि से होता है और आधिदैविक दुःख देवताओं यानि प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा पहुँचता है जैसे आँधी, अति शीत, अति उष्णता, अतिवृष्टि, वज्रपात यानि सहसा कोई संकट आने व बिजली आदि के गिरने से उत्पन्न होता है।

सबकी जानकारी हेतु आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक दुःख को ही क्रमशः आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ताप कहते हैं। इनमें से आध्यात्मिक ताप के अंतर्गत रोग, व्याधि यानि बीमारी, विपत्ति, आफ़त, झंझट-बखेड़ा आदि शारीरिक/दैहिक दुःख और क्रोध, लोभ आदि मानसिक दुःख आते हैं। आधिभौतिक ताप के अंतर्गत अन्य जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त, रक्त और शुक्रदोष तथा मिथ्या आहार-विहार से उत्पन्न व्याधियाँ आदि आते हैं तथा दैवीय व प्राकृतिक आपदाओं आदि से प्राप्त हुए दुःख को आधिदैविक ताप कहते हैं।

तापों के विषय में जानने के पश्चात् अब यदि ताप उत्पन्न करने वाले कारण पर विचार किया जाए तो ज्ञात होता है कि रजोगुण अर्थात् जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिससे उनमें भोगविलास तथा बनावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है तथा जो चंचल और भोगविलास में प्रवृत्त कराने वाला है, को ही ताप या दुःख का प्रतिकारण माना जाता है।

इस संदर्भ में सजनों यद्यपि यह दुःखत्रय यानि ताप मन की ऐसी कष्टदायक अवस्था है जिससे छुटकारा पाने की इच्छा प्राणियों में स्वाभाविक ही होती है तथापि इससे निवृत्ति प्राणी को कठिन प्रतीत होती है। इसी कारण सजनों त्रिविध दुखों की निवृत्ति अत्यंत पुरुषार्थ का विषय और शास्त्रजिज्ञासा का उद्देश्य माना जाता है व तत्त्वज्ञान व ब्रह्मज्ञान प्राप्ति होने पर ही जीव को इनसे छुटकारा प्राप्त होता है।

उपरोक्त तथ्यों से सजनों स्पष्ट होता है कि अगर कोई पुरुषार्थी इंसान आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर इन तापत्रय के भेदों का भेदन कर इस वास्तविकता को जान लेता है कि यह और कुछ नहीं एक ही तत्त्व से बने पदार्थों की भिन्नता है, तो उस अभेदबुद्धि को इस शाश्वत सत्य का ज्ञान हो जाता है कि ब्रह्म सत्य है और उसके अतिरिक्त सब मिथ्या है। ऐसा ज्ञानदृष्टि अपने यथार्थ स्वरूप के प्रति पूर्ण निष्ठा रखने वाला सत्यभाषी इंसान होता है व अपने जीवन काल में सत्य कर्मों द्वारा सत्य को ही प्रतिष्ठित करने के स्वभाव में ढल इन तीनों तापों से मुक्त हो जाता है।

इसके विपरीत जो इंसान पुरुषार्थ कर इन भेदों की रम्ज़ नहीं जान पाता वह भेद-दृष्टि जीवात्मा और संसार को ब्रह्म से भिन्न मानते हुए भेदभाव के स्वभाव को अपना कर बात-बात में आपस में लड़ता-झगड़ता रहता है। इनके दुष्प्रभाव से मन में स्वतः ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे असाध्य गुप्त रोग पैदा होते हैं जिससे इंसान का शरीर व मन-मस्तिष्क के बल के साथ-साथ आत्मिक बल भी कमज़ोर होना आरम्भ हो जाता है। सजनों यह अपने आप में इंसान के स्वाभाविक रूप से तीनों तापों से ग्रस्त होने के लक्षण होते हैं। ऐसा अनर्थ होने पर इंसान को अपने यथार्थ का अता-पता ही नहीं रहता। यहाँ तक कि वह अपने जीवन का मर्म भी भूल जाता है। सजनों यह अपने आप में स्वभावों में तबदीली होने के कारण ख़्याल का सतयुग से क्रमशः त्रेता, द्वापर व कलियुग में प्रवेश कर अंधकूप में गिरने की बात होती है। इसी संदर्भ में अब आगे जानोः-

सजनों आप मानोगे कि आज के समय में अधिकतर इंसान इसी दुर्दशा को प्राप्त हो माया-मोह में उलझ इतने स्वार्थपर हो चुके हैं कि वे छली-कपटी कई प्रकारों के षड़यन्त्र रच अपनों को ही धोखा देने से नहीं सकुचाते। कहने का तात्पर्य यह है कि यह द्वि-भाव के पुजारी हर किसी को भेददृष्टि से देखते हुए इस तरह भेदभाव युक्त हो चुके हैं कि इन्होंने सब जीवों में ऊँच-नीच, गरीबी-अमीरी, अपना-पराया इत्यादि का भेदभाव भर, भेद-बुद्धि लाने वाली ब्रह्म की माया यानि अविद्या के अधीन कर दिया है। इससे परस्पर सम्बन्धों में प्रेम का अभाव हो गया है और जीवन का वास्तविक आनन्द इस तरह लुप्त हो गया है कि इंसान हर पल मौत के भय से त्रस्त हो रोता-झुखता रहता है।

सजनों आज के इंसान की ऐसी दुर्दशा जानने के पश्चात् घबराओ नहीं वरन् होश में आकर अपने आप को संभालो और मानवता के सिद्धान्त अनुसार जीवनयापन करने के योग्य बनने के लिए खुद सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को नित्य नियमित ढंग से समझ कर पढ़ते हुए उसमें विदित सद्-विचारों को अपनाओ और परस्पर आचार-व्यवहार में उन्हीं पर स्थिरता से बने रह, एक भाव हो एक दर्शन में स्थित हो जाओ। सजनों यह अपने आप में समवृत्ति में ढल

अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताने-बाणे को निर्मल बनाने जैसी शुभ बात है।

सजनों ऐसा ही हो इसलिए हम कलुकालवासियों को सीधे रास्ते पर लाने के लिए श्री साजन जी महाबीर जी को प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं कि 'तीनों तापों ने आन सताया ए, हुन रक्षा करो महाबीर जी रक्षा करो', और सब सजनों को इस योग्य बना दो कि वह सहर्ष समर्पित भाव से आप जैसा सुन्दर आचरण अपनाने के प्रति तत्पर हो जाएं।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जैसे पहले भी कहा गया है कि अपना गहनता से आत्मनिरीक्षण करो और अगर खुद को तीनों तापों से ग्रस्त पा रहे हो तो जानो जो इंसान इस अधम अवस्था को प्राप्त हो तीनों तापों से ग्रस्त हो जाता है वह चाहे कितना ही यत्न करे, विश्राम नहीं पा सकता। इसलिए श्री साजन जी तीनों तापों का खुलासा करते हुए हमें विस्तार से समझाते हैं कि सजनों सुनों तीनों ताप हैं:- आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। आध्यात्मिक ताप है, जन्म का रोग विचार करना कि हमारा जीवन किस तरह बन सकता है। आधिभौतिक ताप है, विचार करना कि किस तरीके से हमें शांति की प्राप्ति हो सकती है तथा आधिदैविक ताप है, सब देवताओं को पूजना आज यह व्रत रखना कल वह व्रत रखना। विचार करना कि हमें किस तरह विश्राम मिल सकता है।

इस संदर्भ में वह आगे समझाते हुए कहते हैं कि सजनों सुनों कि इन तापों के रहते इन्सानों को संसारी फुरना और संसारी बातों का कनरस होता है। फिर जब इंसान इन तापों से मुक्ति पा यथार्थ अवस्था को प्राप्त करने हेतु विचार करता है तो संभल जाता है और फिर शास्त्र को पढ़ता है। उसका ध्यान शास्त्र के ज्ञान के कनरस में पड़ जाता है। संसारी कनरस छोड़ कर फिर शास्त्र का कनरस पड़ जाता है। लेकिन सजन इससे भी कामयाब नहीं हो सकता। यहाँ सवाल उठता है कि फिर इंसान कामयाब कैसे हो? तो इस संदर्भ में जानो कि जब कलुकाल के अंतिम चरण को दृष्टिगत रखते हुए तीनों तापों का अर्थ बता

दिया गया है, वहीं तापमुक्त हो अपने यथार्थ अवस्था में एकरस सधे रहने हेतु इस कठिन कार्य को सुगम तरीके से हल करने की युक्ति बताते हुए श्री साजन जी कहते हैं कि 'पहला ताप जीत लेने से अर्थात् आत्मपद की प्राप्ति कर लेने से बाकी दो ताप यानि आधिभौतिक और आधिदैविक बिना यत्न के समाप्त हो जाते हैं। इसलिए जिन सजनों को यह सुगम रास्ता पकड़ महाराज जी से मेल खाने की चाहना है या जिन सजनों ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर चलते हुए अपना घर सतयुग बना लिया है वे द्वारे पर आकर समवृत्ति ले सकते हैं।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि तीनों तापों से बचने के लिए समभाव समदृष्टि की युक्ति को समुचित ढंग से जीवन व्यवहार में लाते हुए अपने शरीर रूपी मकान को पवित्र कर लो और शास्त्रविहित् वचनों को वर्त वर्ताव में लाते हुए एकता में आ सजनता के प्रतीक बन जाओ। सजनों जानो ऐसा सुनिश्चित करने के लिए आपको अब तक जो भी आनन्द से जीवन व्यतीत करने हेतु पढ़ाया गया है उन युक्तियों पर अटलता से बने रह आत्मज्ञानी बनना होगा क्योंकि ऐसा पराक्रम दिखाए बगैर न तो आपकी रूप रंग रेखा मिट सकेगी और न ही तीनों तापों के टैम्प्रेचर की समाप्ति हो सकेगी। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए हम में से किसी के साथ ऐसा न हो उसके लिए ही सजनों आगामी कक्षाओं में आपको तीनों तापों से मुक्ति पा परमधाम का नज़ारा देखने के योग्य बनने का तरीका यानि कामयाब होने की युक्ति बताई जाएगी। अतः आप भी वह समझने के लिए मन में भरपूर उत्साह व उमंग लेकर आना।

दिनाँक 24 मई 2020 का सबक़

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 3
मीटिंग का उपदेश

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत कक्षा में तीनों तापों से मुक्ति पाने के प्रति हुई बातचीत को दृष्टिगत रखते हुए सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह उठे कि 'इक बात बताऊं सुनो मेरे साजन मीटिंग लिखनी जे लिखनी जे मन चित्त ला के, ध्यान लगा के। इक बात बताऊं साजन जी सुन लीजियो परमधाम दा नज़ारा और चमत्कार सजनां नूं समझा दीजियो। बिन सूरजों अन्धेरा हटा दीजियो'। इस संदर्भ में श्री रामचन्द्र जी के उपदेश अनुसार, श्री साजन जी, परमधाम के नज़ारे और चमत्कार के विषय में सजनों को समझाते हुए, उन्हें अपने मन से बिन सूरजों अंधेरा हटा, प्रकाश नाल प्रकाश हो, सुनिश्चित रूप से कामयाब होने की युक्ति का वर्णन करते हुए इस प्रकार कहने लगेः-

'सजनों सुनोंः- जब संकल्प लोचे प्रभु नूं ते दृष्टि प्रभु वल हो जावेगी। जेहड़े पासे संकल्प उस पासे दृष्टि ओ सजनों उस पासे दृष्टि ओ सजनों उस पासे

दृष्टि, जो संकल्प प्रभु नूं लोचे दृष्टि किवें न जावे प्रभु वल ओ सजनों दृष्टि किवें न जावे प्रभु वल' । इसी बात को विस्तार से सब सजनों को समझाते हुए आगे श्री साजन जी कह उठे कि 'सजनों अलफ़ है अक्षर। अक्षर को पकड़ लो फिर 'ये' अर्थात् अपने वास्तविक परमात्म स्वरूप को पा कर एक रस होकर सर्व-सर्व की जानने वाले हो जाओगे' ।

वह आगे कहते हैं कि सजनों जानो 'जब सजन अलफ़ की रटन लगाता है तो उस को प्रकाश हो जाता है' । इसलिए ऐसा पुरुषार्थ दिखा प्रकाश अवस्था में आ जाओ और जब प्रकाश हो जावे तो उस प्रकाश को खड़ा कर लो और विचार करो कि हम कितने भूले रहे हैं, जो प्रकाश हमने देखा है वही प्रकाश या चमत्कार असलियत मेरा अपना आप है' । ए विध् अपने यथार्थ का बोध होने के पश्चात् 'कार व्यवहार करते हुए निगाह उस चमत्कार के साथ हमेशा के लिए जुड़ जावे और जुड़ कर उस असलियत को पूरी तरह स्थिर कर लेवे' । जानो 'दो साल उस चमत्कार को पूरी तरह देखते रहने से इन्सान पूरी तरह स्थिर हो जाता है' । इस तरह 'जब अलफ़ में खड़ा होकर परिपक्क हो गया तो अनादि जोत की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए जिन सजनों को प्रकाश नहीं होता वह यत्न करें उनका संकल्प महाराज जी को लोचे। हर समय महाराज जी ध्यान लगाने से उनको भी प्रकाश हो जाएगा और उसके बाद वह भी उस चमत्कार में खड़े हो जाएँगे' ।

इस संदर्भ में आगे बताते हुए श्री साजन जी कहते हैं कि 'अलफ़ पक्का हो जाने पर स्वतः ही युवा-अवस्था आ जाती है' । सजनों ऐसा विचित्र होने पर उस सजन को स्वयमेव बल की प्राप्ति होती है और शक्ति ताकतवर हो जाती है। शक्ति ताकतवर होने से जो सजन अपने असली स्वरूप पर खड़ा हो गया फिर उसे 'ये' की प्राप्ति होती है यानि उसका अपने इष्ट मित्र से मिलन हो जाता है। इस परम प्रिय अवस्था को प्राप्त होने पर इन्सान अलफ़ को छोड़ देता है और

‘ये’ अर्थात् ईश्वर है अपना आप के विचार के एक स्वच्छ फुरने में खड़ा हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि दूसरे ख्यालों का नामोनिशान नहीं रहता। सजनों जानो जब अलफ़ छूट जाता है और ‘ये’ मिल जाता है तो ही इन्सान आकाशों-आकाश, पातालों-पाताल, सप्तद्वीप-भूमण्डल में प्रवेश करता हुआ गगन मण्डल में स्थिर हो पाता है। इस तरह जब वह गगन मण्डल में स्थिर हो गया तो फिर वह सजन प्रमादि सर्व-सर्व की जानने वाला हो जाता है। फिर उसकी किरणें सब संसार में फैलती हैं और वह तीनों कालों की जानने वाला हो जाता है। यानि जो गुज़र गई जो इस वक्त जेहड़ी आने वाली तीनों कालों की पहचान कर लेता है। फिर वह कर्ता भी है और अकर्ता भी। संसार में विचरता भी है और नहीं भी विचरता। यह है सजनों सर्वोत्तम उपलब्धि। इस उपलिब्ध के दृष्टिगत हिम्मत दिखाओ और अपने स्थान को पाओ। आप ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु अब ध्यान से सुनो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा हैः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

हां हां पहुंचे ने विच दरबार, गरुड़ ते चल पड़े।
फुल वर्षन हो रही ए जय जयकार, गरुड़ ते चल पड़े।।
हकूमत दी कुर्सी ते रघुवंश मणि बैठ गये,
संग सजन बलधार, गरुड़ ते चल पड़े।
हां हां पहुंचे ने विच दरबार, गरुड़ ते चल पड़े।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

सुनो मेरे साजना सुनाऊं असां इक बात,
रख लौ रखनी होसी तुसां याद।
जिन्हां दा संकल्प तां सजन हो गया,

नैन जुड़े रैहन साडे नैनां दे नाल।
गरुड़ ते चल पड़े, हां हां पहुंचे ने विच दरबार,
गरुड़ ते चल पड़े।।
जद नैन जुड़े साडे नैनां दे नाल,
फिर कई सूरजां दा सूरज चढ़ पवेगा।
फुरने दी सृष्टि वल्लों हो जावनगे आज़ाद,
ओ फुरने दी सृष्टि वल्लों हो जावनगे आज़ाद।
गरुड़ ते चल पड़े, हां हां पहुंचे ने विच दरबार,
गरुड़ ते चल पड़े।।

(श्री साजन जी सजनों को समझा रहे हैं)

संकल्प नूं समझाओ सजनों, संकल्प नूं समझाओ।
अकल टिकाणे आ गई, अकलमन्द नाम कहाओ।।
अकल टिकाणे आ गई, अकलमन्द नाम कहाओ।
फिर तुहाडी जित जित और फ़तह फ़तह, गरुड़ ते चल पड़े।
हां हां पहुंचे ने विच दरबार, गरुड़ ते चल पड़े।।
ईश्वर दे नैनां नाल नैन मिला के, इसे तरह सजनों ईश्वर नूं रिझा के।
फिर सजनों उस ईश्वर नूं पाओ।।
फिर तुहाडी जित जित और फ़तह फ़तह, गरुड़ ते चल पड़े।
हां हां पहुंचे ने विच दरबार, गरुड़ ते चल पड़े।।
ईश्वर नालों सुरत ओ निखड़ी खड़ी, निखड़ी खड़ी ओ बिखड़ी ओ खड़ी।
उस ईश्वर वल मुख भंवा लै, किनां तरीकियां नाल रिझा लै।।

उस ईश्वर दी रख लै चाह, गरुड़ ते चल पड़े।
हां हां पहुंचे ने विच दरबार गरुड़ ते चल पड़े।

शब्द:-

जिन्हां सजनां दी जिव्हा स्वतन्त्र हो गई।
फिर संकल्प दा झुरना हटा, धैर्य दा सिंगार पाओ।
सजनों सच दा तुसां करो वर्ताओ,
धर्म दे रस्ते चल के उस परम पिता नूं पाओ।।

ध्वनि:-

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै।
उस ईश्वर नूं तूं रिझा लै।।

इसी संदर्भ में सजनों जब इंसान शास्त्रविहित् युक्ति अनुसार पराक्रम दिखा इस विशेष उत्तम अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो उसकी सुरत परमधाम स्थित रह किस विध् सर्गुण निर्गुण के खेल देखते व खेलते हुए महाराज जी के साथ मेल खा जन्म की बाज़ी जीत लेती है, उसके विषय में आगामी कक्षा में जानेंगे।

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 4 (सर्गुण-निर्गुण)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों पिछले सप्ताह के सबक़ में जो गगनमंडल में स्थिर हो व त्रिकालदर्शी बन संसार में विचरते हुए भी निर्लिप्तता से सर्गुण-निर्गुण के खेल देखने व खेलने की बात बताई गई उस योग्य बन, जन्म की बाज़ी जीतने के लिए, समभाव नजरों में कर, एक निगाह एक दृष्टि होने का विधान है। सजनों इस शुभ काम में अवश्यमेव सफलता प्राप्त करने के संदर्भ में हम से कोई भूल न हो जाए, इस हेतु आओ आगे बढ़ने से पहले समझते हैं कि सर्गुण, निर्गुण, निर्वाण व परमधाम क्या है?

सर्गुणः- जानो परमात्मा का वह साकार रूप जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त हो सर्गुण कहलाता है। इस प्रकार के भक्ति-भाव के अंतर्गत साधक सगुण ब्रह्म यानि परमात्मा के साकार रूप या किसी अवतार-रूप की उपासना करता है। यही नहीं इस प्रकार के भक्ति-भाव में मुक्ति का संकल्प नहीं होता अपितु भक्त परमात्मा के लीलादर्शन को परम लक्ष्य मानता है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सर्गुण में दीवान लगता है और सुरत-शब्द का खेल चलता है। सर्गुण के तरह-तरह के रंगारंग मनमोहक लुभावने नज़ारों के कारण

ही आराधक के मन पर सर्गुण में स्थित रहने का भाव प्रभावी रहता है और त्रिगुणों के स्तर अनुसार उसकी मानसिक अवस्था बदलती रहती है। यही कारण है कि सर्गुण के सब खेल खेलते हुए भी न तो सुरत सहजता से उस साकार ब्रह्म को पहचान पाती है और न ही उस विराट् दर्शन की भांति इस जगत में विचरते हुए भी उससे निर्लेप रह पाती है। तभी तो ऐसे सजन अनजानपने और थोड़ी बुद्धि होने के कारण सर्गुण अवस्था व व्यवस्था में अपने वास्तविक ज्योति स्वरूप पर स्थिर नहीं रह पाते और ए विध् उनका मन निर्गुण के एकान्त में नहीं लगता।

कहने का आशय यह है कि सर्गुण के खेल खेलने वाले द्वैत-भाव से युक्त होने के कारण वे सेवक-स्वामी, भक्त-भगवान व गुरु-चेले के बंधन में बंधनमान हो, परावलंबी यानि पराश्रित हो जाते हैं और अभेद दर्शी हो एक निगाह एक दृष्टि नहीं हो पाते। इसलिए वे भेददर्शी अनिश्चयात्मक बुद्धि वाले चंचल वृत्ति इंसान कहलाते हैं। यही नहीं परिस्थितियों अनुसार उनका स्वाभाविक टैम्प्रेचर भी घटता-बढ़ता रहता है और वह तीनों तापों से ग्रस्त हो अपने अंतःकरण की विशुद्धता एकरस नहीं साधे रख पाते। इस प्रकार वे इस कारण जगत में ही खो कर रह जाते हैं और निर्वाण पद यानि चिर स्थाई शांति को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने से वंचित रह जीवन की बाज़ी हार जाते हैं। परिणामतः कर्मानुसार आवागमन के चक्कर में फँस, जन्म-मरण की त्रास भुगतते रहते हैं।

इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सर्गुण यानि इस विराट् रूप जगत में परमेश्वर का व्यवहार चलता है। अतः उस परमेश्वर के रचित सर्गुण का अंश होने के नाते उसके विराट् रूप में स्थिरता से निर्भय व अडोल बने रह अपने फर्ज़-अदा को सच्चाई-धर्म से निभाने पर ही हम उस घट-घट में रमने वाले के सार को पा ब्रह्म भाव पर स्थित हो सकते हैं। सजनों यह अपने आप में आत्मतुष्ट होकर जगत उद्धार के प्रति जीवन समर्पित करने की सुन्दर बात है। जानो ऐसा होते ही हम संतोषी व धीर बन, सच्चाई-धर्म की राह पर निष्कामता से चलते हुए ईश्वर की हर आज्ञा का समयबद्ध पालन कर सकते हैं और उत्तम सुपुत्र बन त्रिकालदर्शी बन सकते हैं। इसी तरह हमारी सुरत रानी

बनकर अन्दर महाराज जी के साथ टापू-टापू में विचरती हुई सर्गुण में पहुँच सकती है और महाराज जी के साथ रहते हुए पटरानी बनकर उनकी चालें पकड़ते हुए उनके साथ मेल खा सकती है। जानो ऐसा सुगमता से तभी संभव हो सकता है अगर हम समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगाकर अपनी निगाह उस चमत्कार के साथ हमेशा के लिए जोड़ लें और अनादि जोत की प्राप्ति कर नौजवान युवावस्था में आ जाएं। जानो ऐसा करने पर ही हमारी भक्ति प्रबल और शक्ति ताकतवर हो पाएगी और हम विराट् नगरी कुल दुनियां अन्दर अपना ही प्रकाश देखते हुए उस परमात्मा के सर्गुण रूपी खेल के सार को पा सकेंगे और निर्भयता व निपुणता से उस खेल को खेलते हुए भी इसमें फँसेंगे नहीं। इस तरह सर्गुण-निर्गुण के खेल समकर जान, एक अवस्था में बने रहने का पुरुषार्थ दिखा पाएंगे।

निर्गुणः-सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे निराकार ब्रह्म निर्गुण कहा जाता है। निर्गुण ब्रह्म का कोई रूप, रंग, रेखा, नाम, विशेषताएँ नहीं होती अर्थात् वह गुणों से रहित माना जाता है। कहने का आशय यह है कि निर्गुण में ईश्वर को अनेक नामों का सम्बोधन नहीं प्राप्त होता अपितु यहाँ तो परमात्मा अपने असली ज्योति-स्वरूप में होता है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार निर्गुण में परमात्मा की निराली शान होती है व बिन सूरजों इलाही जोत की चमक होती है। इस तरह निर्गुण में नितांत एकांत होता है और ऐसे एकांतमय वातावरण में सुरत शांतिपूर्वक विचरती हुए निश्चल व आनंदमय बनी रहती है। यही कारण है कि निर्गुण आराधक के मन में निर्गुण में बने रहने का भाव विद्यमान रहता है और उसका स्वाभाविक स्वरूप परिस्थितियों अनुसार बदलता नहीं। इस तरह उस पवित्रात्मा का अंतःकरण शुद्ध व मन-चित्त सदा स्थिर बना रहता है और वह अभेददर्शी व निश्चयात्मक बुद्धि वाला समवृत्ति इंसान कहलाता है। ऐसा होने पर ही सजनों उस प्रभु सत्ता से युक्त पूर्ण इंसान के लिए इस जगत में प्रभुमय होकर सत्य धर्म के रास्ते पर निष्काम भाव से चलते हुए परोपकार कमा ब्रह्म में लीन होना सहज हो पाता है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि मोह-माया व भेदभाव से रहित निर्गुणिया एक दर्शन में स्थित हो

इस जगत में विचरता भी है और नहीं भी विचरता। इसीलिए उसके लिए निर्वाण पद को प्राप्त कर चिर स्थाई शांति यानि मोक्ष को प्राप्त करना सहज हो जाता है।

निर्वाण का अर्थ है शून्यता को प्राप्त हो जाना यानि किसी उदित तत्व का पुनः अपने स्रोत में मिल पूर्णता को प्राप्त होना अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा के संगम या संयोग उपरांत जीवात्मा का उसी में ही लुप्त हो मोक्ष को पा जाना। आशय यह है कि यहाँ ब्रह्म और जीव अभेद हो जाते हैं और एकता, एक अवस्था आ जाती है। जानो जीवात्मा का इस प्रकार निर्मल, शांत और निश्चल अवस्था को प्राप्त होना ही उसके अपने असलियत स्वरूप में स्थित होने का परिचायक होता है। इसलिए यह जीवात्मा की अफुर व विश्राम अवस्था कहलाती है अर्थात् जीवात्मा सुगमता से निष्काम रास्ता अपनाकर अपने असलियत स्थान को पा उस महान पद को प्राप्त कर लेती है जिसे आत्मपद कहते हैं।

परमधाम

सर्गुण-निर्गुण-निर्वाण का मालिक जो सबका पालनहार है वह सच्चिदानन्द, सच्चीसरकार और सिरजनहार अपने घर परमधाम में रहता है। यहाँ परम का अर्थ है जिसके आगे या अधिक और कुछ न हो तथा जो सर्वोच्च हो और धाम का अर्थ है रहने का स्थान। इस प्रकार परमधाम उस आद् ज्योति स्वरूप, परब्रह्म परमेश्वर का शोभा स्थल है। सुरत का परमधाम पहुँचना गगनमंडल में स्थित हो अपने स्थान यानि परमपद को पाना है। इस परमपद को पाकर सुरत जन्म की बाज़ी जीत जाती है और उसकी रूप, रंग, रेखा मिट जाती है। इस तरह तीनों तापों के टैम्प्रेचर की समाप्ति हो जाती है और सुरत आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाती है। इसके पश्चात् फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता। इस विषय में और स्पष्टता देते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैंः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख की शाख)

फिर समभाव समदृष्टि वाले,
सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया और एक ही सुहाया।
ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना सर्गुण निर्गुण
एक निगाह आया और एक ही सुहाया।।

सर्गुण निर्गुण ओहदी सूरत है जे इलाही।
कैसी है सुन्दरताई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सर्गुण निर्गुण में कैसी ओहदी है रहणी बहणी।
रौशनी है सर्व सबाई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।

एक ही मानो एक ही जानो सजनों एक ही करो प्रवान।
इक इक ही सारा जग दिस्से इक है ओ सर्व महान,
ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवनसुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।।

उपरोक्त तथ्यों के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें इस जगत में शास्त्रविहित् विधि अनुसार, सर्वहित के निमित्त अकर्ता भाव से जीवन जीते हुए, अंत मोक्ष को पा अक्षय यश कीर्ति को प्राप्त करने का आवाहन दे रहा है। यह कार्य सजनों कैसे सिद्ध करना है उसकी युक्ति हम आगामी कक्षा में विस्तार से जानेंगे।

दिनाँक 07 जून 2020 का सबक़

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 5 (सर्गुण-निर्गुण)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह के संदर्भ में सजनों श्री साजन जी हमें ब्रह्म भाव में स्थित रह सर्गुण-निर्गुण दियां खेडां देखने की युक्ति बताते हुए कह रहे हैंः-

शब्दः-

कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार।
हकूमत दी कुर्सी ते बैठे भगवान।।
हेठां संस्था बैठ गई, पिच्छों खड़े दरबान।
आलम खिड़ खिड़ हस्से, कुर्सी ते बैठे कृपानिधान।।
जिन्हां सजनां दी जोत जगे निर्वाण, ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे।
ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे, कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार,
निर्गुण में जोत ओ जग रही, बिन सूरजों है ओ रौशनाई।
रोशनी ओ रोशनी है ओ सर्व सबाई।
बिन सूरजों ओ जग रिहा जग रिहा ओ परमधाम,
ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे।
ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे, कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार।

रूप रंग रेखा मुक गई, फिर तीनों तापों के टैम्परेचर की समाप्ति होई।
ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे, ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे,
कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार।

श्री साजन जी आगे सजनों को इस युक्ति की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस सजन की भी जीवन बनाने की चाह हो वह इस युक्ति पर चलकर अपने आप की पहचान कर सकता है और निर्वाण में स्थित रह सर्गुण-निर्गुण के खेल विशेष रूप से देखते व खेलते हुए भी, उनसे निर्लिप्त रह अपने वास्तविक इलाही स्वरूप में एकरस बना रहता है।

इसी संदर्भ में वह आगे कहते हैं कि सजनों अलफ़ के मिलने से पहले इन्सान कठिन होता है यानि उसको संसारी कन रस होता है। अलफ़ के मिलने के बाद वह नर्म हो जाता है यानि उसको शास्त्र का कन रस पड़ जाता है। फिर 'ये' के मिलने पर वह वज्र हो जाता है फिर उस पर ईंट रोड़ा कोई प्रहार नहीं कर सकता। फिर न अलफ़ रहा न 'ये' रहा। यह है अफुर अवस्था। फिर वह सजन गगन मण्डल में जहां रूप रंग रेखा नहीं महाराज जी के साथ मेल खा जाता है। बिन औखियाइयों बिन खेचलों, बिन तकलीफों वह जन्म की बाज़ी को जीत लेता है। यहां पर तीनों तापों का टैम्परेचर जो घटता बढ़ता रहता है वह समाप्त हो जाता है। जैसे बुखार घटता बढ़ता रहता है इसी तरह हमारे स्वभावों का टैम्परेचर भी घटता बढ़ता रहता है। अगर हम संतोष पर काबू पाते हैं तो धैर्य छूट जाता है। धैर्य पर काबू पाते हैं तो सच्चाई-धर्म छूट जाता है। इस युक्ति पर चलने से तीनों तापों का रोग मिट जाएगा और हमारे सब सवाल हल हो जायेंगे। फिर समभाव जो एक निगाह एक दृष्टि देखनी होती है बिना यत्न के उसकी प्राप्ति हो जाएगी, यह है जन्म की बाज़ी को जीत लेना। सजनों आप ने सुना है कि सजन अर्जुन ने सजन कृष्ण महाराज जी को बताया कि मैंने आज चतुर्भुजधार का चमत्कार देखा है। महाराज जी ने कहा कि अर्जुन यह प्रकाश तेरी असलियत अपना आप प्रकाश है। यही प्रकाश कुल दुनियां है। इस पर खड़े हो जाओ। सजन अर्जुन ने वचन प्रवान किए उस चमत्कार के साथ निगाह जोड़ ली और संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर लिए।

सजनों इस सर्वोत्तम परिणाम को सुनिश्चित रूप से प्राप्त करने के लिए हम सबके लिए भी बनता है कि सहर्ष इस युक्ति पर स्थिरता से बने रह उस चमत्कार के साथ निगाह जोड़ लें और संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाएं। अब जानो इस विषय में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा है:-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

ओ है कुदरत दा वाली, कुदरत तुहाडे दर दी सवाली,
ओ है कुदरत दा वाली।
कुदरत दे वाली ने कुदरत उपजाई कुदरत ओ कुदरत, कुदरती आई।
कुदरत ओ सारी हरियाली, ओ है कुदरत दा वाली।।
चार वेद कुदरती आये, छः शास्त्र कुदरत ने रचाये।
इन्हां विचों इन्सानों अलफ़ नूं पा लीजियो।।
अलफ़ अक्षर नूं जप जप के ईश्वर दी पहचान कीजियो।
उन्हां दी सूरत है ओ कैसी निराली, ओ है कुदरत दा वाली।।
आद अक्षर युवा अवस्था दिखावे शक्ति वल्लों ताकतवर हो जावे।
छुट गया अक्षर फिर 'ये' नूं ओ पावे सर्गुण असलियत अपनी पहचान कीजियो।
असलियत दी पहचान कर होया जगत दा वाली,
ओ है कुदरत दा वाली।।
मूल मन्त्र है जे ओ आद अक्षर, आद अक्षर इक रस हो के चलाया।
सर्गुण दा नज़ारा उस सजन ने पाया,
फिर महाराज जी ने 'ये' चलवाया।।
'ये' चला फिर निर्गुण पा लीजियो।
फिर शक्ति है जे ओ ताकतवर ओ सजनों जीवन अपना बना लीजियो,
ओ है कुदरत दा वाली।।
फिर निर्गुण में इक रूप निगाह आया हर अन्दर इक रूप सुहाया।
परमधाम में ओ कुदरत दा वाली चमके।

जैंदी है सूरत निराली, ओ प्रकाशे कुदरत दा वाली।।
फिर निर्गुण में इक रूप निगाह आवे, ओ हर अन्दर इक रूप सुहावे।
परमधाम में प्रकाशे कुदरत दा वाली।
सर्व चमके जैंदी सूरत निराली ओ सूरत निराली।।

शब्दः-

हम प्रकाशित हां प्रकाश रिहा हां जग सारा।
जब जब भीड़ भक्तों पर आई, उन्हां लिया हमारा सहारा।।
आदि अन्त प्रकाश हमारा, बिन सूरजों प्रकाश हमारा।
सूरज चांद नहीं कोई तारा, प्रकाश ही प्रकाश हमारा।
प्रकाश ही प्रकाश नाम कहाते हैं, हम परमधाम में रहते हैं।।

सबकी जानकारी हेतु सजनों ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित युक्ति आगामी सप्ताह बताई जाएगी।

दिनाँक 14 जून 2020 का सबक़

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 6

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों कलुकाल के इस भयावह समयकाल में, जिस सहजता व सुन्दरता से हम जीवों के आत्मोद्धार के निमित्त बुधवार और वीरवार के बोर्डों के अंतर्गत ब्रह्म नाल ब्रह्म होने की युक्ति का क्रमबद्ध वर्णन है, वह अपने आप में हम जीवों पर ईश्वर की अपार कृपा का परिचायक है। इस संदर्भ में सजनों मानो कि जो भी परमार्थ के रास्ते से भटका हुआ इंसान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को पकड़, विचार पर खड़ा हो जाता है वह आत्मज्ञानी अपने जीवनकाल में एक तो इस विचारयुक्त सरल व सहज सवलड़े रास्ते पर चलता हुआ हर पासियों जितदा रैहंदा है और दूसरा जीवन विजयी हो ब्रह्म नाल ब्रह्म हो ईश्वर है अपना आप के यथार्थ को जान जाता है। अतः इस उत्तम अवस्था को प्राप्त करने हेतु हम सबके लिए भी बनता है कि अपना हित साधने की क्षुद्र भावना यानि अपना स्वार्थ पूरा करने की आसक्ति का परित्याग कर शास्त्र द्वारा अनुमोदित विधान या पद्धति अनुसार सर्वहित की भावना अनुसार पुण्य कर्म करते हुए मर्यादित निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर दें।

सजनों जानो यह अपने आप में महान तप है। इस तप द्वारा सुनिश्चित रूप से संसार में भटका हुआ व ठोकरें खाता हुआ इंसान, दाता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त कर, यथार्थ आत्मिक ज्ञान जैसी उत्तम सम्पत्ति प्राप्त कर लेता है व परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाता है। अतः सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते, उनके वचनों पर सुदृढ़ता से चलने का साहस दिखाओ। सुनिश्चित रूप से सजनों आप आत्मोन्नति कर ऐसा करने में कामयाब हों, इस हेतु परमेश्वर परमतत्त्व की साधना करते हुए, ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति को ही सबसे श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानने का युक्तिसंगत आवाहन् इस प्रकार दे रहे हैंः-

मूलमन्त्र है जे ओ आद अक्षर,
जेहड़ा सजन इक रस हो के चलावेगा।
युवा-अवस्था नाले बल दी प्राप्ति,
शक्ति वल्लों ओ ताकतवर हो जावेगा
ओ शक्ति वल्लों ओ ताकतवर हो जावेगा।।

मूलमन्त्र है जे आद अक्षर,
जेहड़ा सजन इक रस हो के चलावेगा।
जेहड़ा मन मन्दिर है जे ओ चमत्कार,
ओही असलियत है जे ओ अपना आप।
प्रकाश नाल प्रकाश हो जावेगा ओ प्रकाश नाल प्रकाश हो जावेगा।।

जेहड़ा सजन उस चमत्कार अपने प्रकाश नाल दोनों नैन मिला के
दो साल परिपक्क हो जावेगा।
विराट नगरी कुल दुनियां अन्दर अपना प्रकाश ही ओ पावेगा
अपना प्रकाश ही ओ पावेगा।।

अपनी असलियत पहचान गया फिर छूट गया अक्षर उस सजन दा
फिर 'ये' नूं ओ पावेगा।
फिर 'ये' इक रस जिस सजन दा ओ चल पड़ा
फिर ओ आकाशों आकाश पातालों पाताल।
और सप्तद्वीप भूमण्डल गगन मंडल में स्थिर हो जावेगा
ओ गगन मंडल में स्थिर हो जावेगा।।

फिर प्रवेश हुआ कुल दुनियां अन्दर
सब दियां जानन वाला हो जावेगा।
जेहड़ी गुज़र गई जेहड़ी इस वक्त जेहड़ी
आने वाली त्रिकालदर्शी नाम कहावेगा,
त्रिकालदर्शी नाम कहावेगा।।

फिर रूप रंग न रेखा कोई,
सजनों बिन सूरजों चानणा हो जावेगा।
फिर ज्योति स्वरूप पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा
ओ पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा।।

इस संदर्भ में सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति पर समर्पित भाव से बने रहने का ऐसा उद्यम दिखाओ कि वह आप पर प्रसन्न हो आपकी जीवन यात्रा को सुगम बना दें और आपके लिए उनके संग रहते हुए अपने ज्योति स्वरूप को पा परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाना सहजकर हो जाए। सजनों इस सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति के दृष्टिगत इस अनमोल मानव चोले के महत्त्व व महानता को समझो और युक्तिसंगत निरन्तर मूलमन्त्र आद् अक्षर का अफुरता से जाप करते हुए आत्मस्वरूप का अनुभव करो और परिपूर्णतया ब्रह्म सत्ता युक्त हो जाओ। इस तरह ब्रह्म शक्ति से उत्पन्न वाणी यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित वाणी को धारण कर अपनी वास्तविक दिव्य शक्तियों व गुणों से युक्त हो जाओ

और ताकतवर होकर जितेन्द्रिय बन जाओ व परब्रह्म परमेश्वर नाम कहा आवागमन के चक्कर से आज़ाद हो अपने स्थान को पा प्रकाश नाल प्रकाश हो जाओ। इस कार्य को युक्तिसंगत करने के विषय में सजनों अब ध्यान से सुनों कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन जी क्या कह रहे हैंः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश, ज्योति स्वरूप।
ब्रह्म नाल सजनों होना जे ब्रह्म।।
सिमरन ये दा करो, जपो अजपा जाप, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

फिर खालस सोना खोट न कोई, जो पकड़े अपना आप।
अलफ़ कोलों ये नूं देख लवे फिर पाये अटल ओ राज।।

फिर ओ पाये अटल ओ राज, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

जिव्हा कोलों अलफ़ छुटकया, ख्याल ने पकड़िया अपने साथ।
ख्याल ने अलफ़ नूं छोड़िया, फिर ये जपे दिन रात।।

फिर ओ ये नूं जपे दिन रात, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

वेद पुराण, कुरान सजनों, सब कोई अलफ़ दा मन्त्र बतांदा है।
एहो मूलमन्त्र दा सिमरन करके फिर ओ ये नूं पांदा है।।

फिर ओ ये नूं पांदा है, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

जिव्हा ख्याल कोलों अलफ़ छुटकिया फिर ये दी करो पहचान।
बिन सूरजों प्रकाश हुआ फिर ज्योति स्वरूप ओन्हुं मान।।

फिर ज्योति स्वरूप ओन्हुं मान, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

अलफ़ पढ़े इन्सान फिर ओ ये नूं पा जांदा है।
अफ़सर होके इन्सान फिर ओ कुर्सी ऊपर बैहंदा है।।

फिर ओ कुर्सी ऊपर है बैहंदा, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

मूल मन्त्र जप के इन्सान फिर ओ ये नूं ही पा जांदा है।
जन्म दी बाज़ी जित्त के, ओ जीवन सफल बनैंदा है।।

फिर ओ जीवन सफल है बनैंदा, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

ओथे अलफ़ ये दा सवाल नहीं, बिन सूरजों प्रकाशे।
ओहदा रूप रंग न रेखा कोई, ओ घट घट विच निवासे।।

फिर ओ घट घट विच निवासे, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

अलफ़ ये फिर मुक गया, होर चीज़ न रही कोई बाकी।
सर्व जग मग जग रिहा, ओ जगे दिन ते राती।।

फिर ओ जगे दिन ते राती, ज्योति स्वरूप।
ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो ओही हैं प्रकाश।।

आपकी जानकारी हेतु जब कोई भाग्यशाली इंसान ईश्वरीय अनुकम्पा से परम पुरुषार्थ द्वारा रूप, रंग, रेखा मिटा बिन सूरजों चानणा हो जाता है और फिर ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाता है तो अपने इस यथार्थ से परिचित होते हुए ही आकस्मिक कह उठता है 'मैं ब्रह्म हूँ'। इसके पश्चात् जो उसे आनन्दप्रदायक अनुभूति होती है चाहे उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है पर फिर भी शास्त्र अनुसार उस परम सुन्दर सर्वोच्च सत्य के विषय में बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे।

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 7
मैं ब्रह्म हूँ

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जो भी खुशनसीब पुण्यात्मा परम आराध्य परमेश्वर की एक महान तपस्वी की तरह आराधना करते हुए उसे प्रसन्न कर अपना बना लेती है केवल वह ही उसके संरक्षण में सुदृढ़ता से बने रह व उसके नैनों से नैन मिला अपनी यथार्थ हस्ती का बोध कर त्रिलोकी की कुर्सी पर आसीन हो परब्रह्म परमेश्वर नाम कहा सकती है। इस संदर्भ में सजनों जब कोई ऐसी परम भाग्यशाली आत्मा इस प्रकार एक दर्शन में स्थित हो जाती है तो सृष्टि की सब शक्तियाँ उसके अधिकार में हो जाती हैं। सजनों यह अपने आप में परमात्मा सम सर्वशक्तिमान होने व निरूपाधि ब्रह्म कहलाने की सर्वोत्तम बात होती है। सजनों जानो ऐसा शक्तिमान पूर्ण इंसान बनने पर, स्वतः ही शास्त्रविहित् अटल ब्रह्म आज्ञाओं का सहर्ष यथा पालन करना उसके स्वभाव के अंतर्गत हो जाता है। आशय यह है कि इस चलन पर स्थिरता से बने रह वह मृतलोक पर फतह पा सर्वोत्तम गति को प्राप्त कर लेता है। जानो जब मोक्ष होने पर कोई जीव परमपद पा लेता है तो परब्रह्म नाम कहाता है। सजनों यह अपने आप में ज्ञान की परम अवस्था होती है जिससे इंसान जीव-ब्रह्म की अभेदता की रमज़ जान यह कह उठता है कि 'मैं ब्रह्म हूँ। इस प्रकार वह सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप को

प्राप्त ब्रह्मज्ञानी कुल सृष्टि के समक्ष अपने ब्रह्मस्वरूप का वर्णन करते हुए कह उठता हैः-

मैं ब्रह्म हूं
ओ३म्
अमर है
आत्मा
आत्मा में है
परमात्मा
एहो असलियत ब्रह्म
स्वरूप प्रकाश
है जे ओ मेरा
अपना
हम ब्रह्म प्रकाश
हम
हम ब्रह्म प्रकाश

हां
हम हर अन्दर निवास
हम
हम हर अन्दर निवास
हां
हम हर अन्दर प्रवेश
हम
हम हर अन्दर प्रवेश
हां
हम हर अन्दर विशेष
हम
हम हर अन्दर विशेष
हां
हम ब्रह्म हम
हम ब्रह्म हां

इस सर्वश्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त होने पर उस ब्रह्मज्ञानी को ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उसे सबसे अनमोल वस्तु प्राप्त हो गई हो और वह अमीरों का अमीर हो गया हो। ऐसा मंगलमय अनुभव होने पर वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सहर्ष कह उठता हैः-

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

ओ कैसा सुन्दर सजदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

बिन सूरजों ओ सूरज जगे, जग मग जगे जगे एक ।
जेहड़ा बुद्धि करे विवेक सजन, जेहड़ा बुद्धि करे विवेक।।

उस सूरजां दे सूरज दा, हर अन्दर हिवे प्रवेश।
ओ अपना आप पहचान सकदा, पहचान सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

सूरजां दा सूरज चढ़या होया है हमेश।
ओ ही सजन देख सकदा है, जेहड़ा सब नूं समझे एक।
जेहड़ा समझे सब नूं एक, ओहदी बुद्धि हो गई सुचेत।।

ओ बिन सूरजां दे सूरज नूं सुजाण सकदा,
सुजाण सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

ब्रह्म शब्द है बड़ा महान, कोई विरला पकड़े सजन इन्सान।
ब्रह्म ही ब्रह्म असलियत अपनी जान सकदा,
ओ जान सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

ब्रह्म ही ब्रह्म कोई विरला ध्यावे।
ब्रह्म दी महिमा कोई विरला गावे।।

ब्रह्म जल थल पवन और पानी।
सप्तद्वीप भूमण्डल गगन मण्डल जानी।
ब्रह्म नाल ब्रह्म ओ हो सकदा, हो सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

फिर ब्रह्म ही ब्रह्म है ओ जग सारा।
ब्रह्म ही आ रिहा अपर अपारा।।

फिर ब्रह्म ही ब्रह्म कोई विरला जाने।
ब्रह्म ही ब्रह्म कोई विरला पहचाने।
ओ ब्रह्म नूं कोई विरला पहचान सकदा,
पहचान सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

निर्वाण दे अन्दर सूरजां दा सूरज जगदा।
ओ हर अन्दर मेरा साजनां कैसा सुन्दर सजदा।।

शब्दः- कला हमारी ओ मेरे साजना, सारे दुःख करदी है दूर।
ओह अपना आप पहचान लैंदा, पहचान लैंदा जरूर।
जेहड़ा ब्रह्म नूं लवे पहचान, फिर ब्रह्म ही ब्रह्म आप नूं जान।।

सजनों इस कीर्तन के भावार्थों को दृष्टिगत रखते हुए हमें मानना होगा कि जब किसी इन्सान का ख़्याल शास्त्रविहित् मर्यादा में एकरस सधे रह गगनमंडल में स्थित हो जाता है तो वह अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप को जान व पहचान लेता है। ऐसा ब्रह्मविद् यानि वेदों के अर्थ और तत्त्व को जानने वाला इस सर्वोच्च सत्य से परिचित हो जाता है कि अध्यात्मविद्या के भंडार, सर्व शक्तिशाली ब्रह्म के कारण ही यह जगत प्रतीत होता है और इस मिथ्या जगत में उसी का साम्राज्य ही चलता है। इसीलिए वह ब्रह्मज्ञानी समर्पित भाव से ब्रह्मशासन को दिल से स्वीकारते हुए ठीक उसी की वेद-विदित आज्ञाओं अनुसार ब्रह्ममय होकर, इस जगत में निष्कामता व निर्विकारता से विचरना उचित समझता है।

सजनों जानो जो भी इन्सान ए विध् निर्लिप्तता से जगत में निष्पाप जीवनयापन करने का पुरुषार्थ दिखाता है केवल वह ही काम पर फतह पा ब्रह्म ऋषि की पदवी प्राप्त करता है और इस सिद्धान्त पर कि 'सम्पूर्ण विश्व ब्रह्ममय है अथवा ब्रह्म-निर्मित है और उसी की शक्ति से चल रहा है', स्थिरता से टिका रह जगत विजयी हो जाता है यानि अति श्रेष्ठ व्यक्ति कहला सकता है। इस प्रकार वह हीरे नाल हीरा हो हीरा कहलाता है और ब्रह्म रूपी हीरे की वेद विदित से सबको पूर्णतः परिचित कराने के काबिल हो जाता है।

सजनों यह अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण बात होती है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन जी ने इसी बात का पूर्णतः बखान करते हुए किस प्रकार वर्णन किया है, उसके विषय में आगामी कक्षा में जानेंगे।

वीरवार का दूसरा बोर्ड ...भाग 8
हीरा

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसे ही महाबीर जी की अपार कृपा से सच्चेपातशाह जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित, हीरे लाल जवाहरों जड़ित, शब्द ब्रह्म विचारों को गहराई से समझते हुए, उन विचार रूपी हीरों को धारण कर अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति के अंतर्गत कर लिया, वैसे ही उन्होंने इस मिथ्या जगत में अनेक रूप, रंगों में स्थित, सृष्टि के रचयिता यानि परमतत्त्व की सार को पा लिया। इस तरह उन्होंने ब्रह्म जैसे श्रेष्ठ व महान पद को प्राप्त कर लिया। ऐसा होने पर सजनों वह सहसा ही कह उठेः-

अंध कूप विचों दासी नूं कढ के, चरणां विच प्रेम बढ़ाया।
महाबीर जी दा गदा हीरियाँ जड़त जड़ाया,
रघुनाथ जी दे दिल नूं लुभाया।।

इस संदर्भ में सजनों यह तथ्य भी सर्वविदित है कि परमेश्वर के जिस किसी भी निर्विकारी आराधक ने सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर अटल रह, भक्त

शिरोमणि महाबीर जी से, हीरियाँ जड़ित गदा यानि शांति-शक्ति प्राप्त कर, सभी चराचर जीवों के प्रति सजन भाव का विकास किया, वह सबके प्रति अपने सजनता से परिपूर्ण व्यवहार के सद्‌प्रभाव के कारण सबका प्रियवर बन गया। इसी बात की पुष्टि करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में आदि, अनादि, परमादि सतवस्तु के वाली श्री साजन जी अपने आप पर कहते हैंः-

ऐसे आनन्द दा सीमा न कोई हर जगह हरषाऊं मैं
ओ ओ ओ ओ हर जगह हरषाऊं मैं, हरषाऊँ मैं।
देखो क्या ही खेल रचा रहा हूँ देखो क्या नज़ारा दिखा रहा हूँ।।

पीले वस्त्र गल वैजन्ती माला चरणां विच लच्छे कमर सजे दुशाला
हीरे लाल रत्न जड़त हार है जेहड़ा हर अन्दर साज यह है मेरा
शेष ते हां विराजमान निर्वाण दे अन्दर स्थान मेरा।
चमक रहा हूँ सारे भूमण्डल हर अन्दर रोशन नाम मेरा।।

जानो यह अपने आप में सजनता का प्रतीक बनने की बात होती है और जो इस सर्वोत्तम वृत्ति में ढल जाता है केवल उसी को ही 'साजन' शब्द से सम्बोधित किया जाता है। जैसा कि कहा भी गया हैः-

स्वरूप देख के आपदा ऊपर फुल बरसाये।
हीरे लालां दा सिंगार आपदा ताज रत्नां जड़त जड़ाया ए।।

इसी परिप्रेक्ष्य में सभी सुरतों के पति परमेश्वर यानि परोपकारी श्री साजन जी सबको चरित्रवान और गुणी बनने के प्रति प्रेरित करने हेतु कहते हैंः-

हीरा मैं पाई ओ जावां।
हीरे दी वेद विदित सब नूं समझाई ओ जावां।।

हीरा जे खालस सोना, खोट न उस बदन में, खोट न उस बदन में।
हीरे दी रौशनी चमक, सब नूं दिखाई ओ जावां, सब नूं दिखाई ओ जावां।।

हीरा है घट घट वासी, हीरा है सर्व निवासी,
हीरा है सर्व निवासी।
हीरे दी पहचान दा तरीका,
सब नूं समझाई ओ जावां,
सब नूं समझाई ओ जावां।।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने,
समभाव दा तरीका समझाया।
ओ झगड़े सारे मुक गये सजनों,
समभाव जदों दा आया, समभाव जदों दा आया।।

हीरा मैं पाई ओ जावां .... ।

निःसंदेह सजनों साजन परमेश्वर का जन समुदाय को ऐसा कहने के पीछे आशय यही रहा कि सबको उनके इस अनमोल मानव चोले की महानता व महत्त्व समझ आए और वे सब भी समभाव अपनाकर इस चोले का भरपूर लाभ उठा, हीरे नाल हीरा होने में सक्षम हो जाएं यानि अपने वास्तविक इलाही ज्योति स्वरूप को पहचान ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाएं। इसी महत्ता के दृष्टिगत वह सजनों को कहते हैंः-

समभाव समदृष्टि नूं समझ के ते,
कोई विरला पहरेवा पावेगा।
जैंदी इक निगाह इक है दृष्टि,
ओ हीरे रत्नां दा सेहरा सजावेगा सजन।।

साथ ही इस उत्तम अवस्था को प्राप्त करने हेतु युक्ति बताते हुए यह भी कहते हैंः-

हीरा सजनों परखना जे, मिल करो हनुमान जी दा संग।
ओ३म् तत् सत् ब्रह्म, ओ३म् तत् सत् ब्रह्म।।

इस विषय में सजनों जानो जो भी समझदार मानव लाख चौरासी भुगतने के पश्चात् प्रभु अनुकम्पा से मिले इस हीरे जैसे जन्म को प्राप्त कर, संसार में उलझ वृथा गँवाने के स्थान पर, विशेष पराक्रम द्वारा आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर सँवार लेता है, उस भाग्यशाली विवेकी का हृदय बिन सूरजों प्रकाशित हो उठता है और वह सर्वश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त कर लेता है। कहने का आशय है कि जो भी सजन, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के इन वचनों को प्रवान कर अपना स्वाभाविक स्वरूप सुन्दर बना लेता है वह सत्यार्थी हीरियाँ जड़त सुन्दर स्वाभाविक पोशाक पहन, धर्म के निष्कंटक रास्ते पर स्थिरता से आगे बढ़ते हुए पुण्यात्मा कहलाता है व अक्षय यश कीर्ति को प्राप्त कर लेता है। इसी संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

ओ पोशाक खरीद करे कोई, कोई विरला खरीदवान होवे।
हीरे जवाहर रत्न लाल चमके, जेहड़ा पावे ओ मालो माल होवे।।

कहने का आशय सजनों यह है कि इस पोशाक से सुसज्जित उसका दिव्य स्वरूप देखकर कुल त्रिलोकी हर्षा उठती है और कह उठती हैः-

इको है रूप इको हीरियाँ वाली वर्दी,
इको है चमक तुम्हारी इको जेही है वर्दी, इको जेही है वर्दी।।

इस प्रकार उसकी वर्दी की चमक देखकर इंसान तो क्या देवतागण भी उसके सकारात्मक पुरुषार्थ की प्रशंसा करते हुए उस पर हर्षोल्लास के साथ फूल बरसाते हैं। सजनों हम सब भी इस अवस्था को प्राप्त कर सकें इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कलुकाल में भटके हुए हम जीवों को अपना मुख संसार की तरफ से घुमाकर, प्रभु की तरफ जोड़ने का आवाहन इस प्रकार देते हैंः-

(हनुमान जी के मुख के शब्द)

श्री साजन जी को कह रहे हैं
ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

चलो रघुवर प्यारे कोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।
ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

अजर अमर अडोल निश्चल, परषोतम अपरापरम्।
शंख चक्र गदा पद्मधारी, हरि ओ३म् नमो नारायण निमश्कारनिंग।।

मच्छ कच्छ नरसिंह वैराह पाय रघुपति पावनिंग।
राम नाम कृष्ण गोपाल।

हरि ओ३म् नमो भगवते माधवा आधारनिंग।
पारब्रह परमेश्वर भगत वत्सल बिन सूरजों चमकारनिंग, चमकारनिंग।।

इस तरह सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार हम सबको आवाहन् दे रहा है कि प्रभु के वचनों पर चलते हुए उन संग इतना प्रेम बढ़ाओ कि आप की सुरत निर्वाण में स्थित हो प्रेम के प्रकाश में हीरे की सार को पा ले और इस प्रकार आप श्री विष्णु भगवान रूपी हीरे को पहचान हीरे नाल हीरा हो जाओ। इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर कहते हैंः-

मैं हीरा हां अनमोल, विरला सजन लैंदा है टोल।
टोले सानुं ओ सजन जैंदे बदन में खोट न राहवे।
टोले ओ सजन जेहड़ा खालस सोना हो के आवे,
खालस सोना हो के आवे।।

जानो यह अपने आप में आत्मा में से परमात्मा रूपी हीरे को ढूँढ जगत का वाली बनने की मंगलकारी बात है। इसलिए तो बार-बार कहा जाता है कि संकल्प को सजन व संगी बना संतोष पर फतह पाओ और धैर्य का सिंगार पहन हीरे नाल हीरा हो जाओ। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में लिखित ही हैः-

फिर सन्तोष वल्लों जित पाओ, सजनों सन्तोष वल्लों जित पाओ।
फिर धैर्य दा हिवे सिंगार सजनों, हीरे लाल जवाहरां दी पहनो वर्दी
हीरे नाल ओ हीरा हो गया, चमके कुल संसार ओ सगली।।

सारतः सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपने सजन बनो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर चलते हुए अपनी किस्मत का ताला खोल एकरूप हो जाओ व विश्राम को पाओ।

अब इसी बात को सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित कीर्तन के माध्यम से इस प्रकार समझोः-

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

गरुड़ ते हनुमान बलवान शक्तिवान चढ़े, श्री रामचन्द्र भगवान।
जिन्हुं विश्व करे प्रणाम दयालु संग चढ़न अग्गों साजन सजन महान।।

संग शक्ति लक्ष्मी होसी अग्गुं साजन चढ़े जा पहुंचे दरबार।
हकूमत दी कुर्सी ते बैठ गये हथ जोड़ खड़े विद्वान।।

मैं हूं सागर सुरत छोटी नदी हो हो कर ओ वाहवे,
सो मेल मेरे नाल किस तरह खावे।

ओ नदी मेरे नाल मिलना चाहवे, कंचन हो के जगत ते वाहवे।
तद ओ मेल मेरे नाल खावे, आ-आ-आ-आ तद ओ मेल मेरे नाल खावे।।

मैं सागर नाल जेहड़ा मिलना चाहवे, अक्ख मेरी नाल अक्ख मिलावे।
कंडे औझड़ इटां रोड़े नज़रों में न आवे, जो निगाह मेरे नाल लावे।
ओ सागर नाल सागर हो जावे, तद ओ मेल मेरे नाल खावे।
आ-आ-आ-आ तद ओ मेल मेरे नाल खावे।।

मैं सागर हूं कुल दुनियां अन्दर, कोई मुश्किल गोता लावे।
जेहड़ा हड़ तुफान दी परवाह नहीं करदा।।

मैं सागर नाल सागर हो जावे, तद ओ मेल मेरे नाल खावे।
आ-आ-आ-आ तद ओ मेल मेरे नाल खावे।।
ओ सागर नाल सागर हो जावे, तद ओ मेल मेरे नाल खावे।

मैं सागर सुरत नदी में फरक नहीं कोई,
मैं शौह नाल जदों बिछड़े विछोड़ा खावे।
चार चुकन्नी भटके ते कष्ट उठावे,
खा मन्दी खुराक खिलरी जगह जगह।।

खेती फुलवाड़ी दरख़त उखाड़े अपने विच बहावे।
फिर ज्ञान उसनूं आवे, तदों ओ शौह नूं पावे,
तद ओ मेल मेरे नाल खावे।
आ-आ-आ-आ तद ओ मेल मेरे नाल खावे।।

खालस सोना हो के आवे, मैं सागर विच टुब्बी लावे।
तदों हीरे दी सार ओ पावे, हीरे नाल हीरा हो जावे।।

बिन सूरजों ओ हीरा चमके, प्रकाश ओ अपर अपारे।
फिर ओही अनादि ओही प्रमादि, अन्त कोई विरला पावे।
तद ओ मेल मेरे नाल खावे आ-आ-आ-आ तद ओ मेल मेरे नाल खावे।।

फिर मैं सागर ओ सागर हो गया, इक रूप ओ जाने।
जोत जगमग जगे निर्वाण ओ अपना आप पछाने।
ओही जोत जगे कुल संसारे,
ओही जोत जगे अपर अपारे मैं सागर नाल सागर हो जावे।।

फिर बेअन्त बेअन्त ओ जाने, बेअन्त ओ नाम कहावे,
फिर अन्त कोई न पावे।
मै हूं सागर ओ लोक उजागर,
सागर नाल सागर हो जावे - कोई विरला।।

कोई विरला गोता लावे - कोई विरला,
हीरे दी सार ओ पावे - कोई विरला।
हीरे नाल हीरा हो जावे - कोई विरला,
त्रिकालदर्शी हो जावे - कोई विरला।।

**ओही अनादि ओही प्रमादि, जोत नाल जोत हो जावे - कोई विरला।
बिन सूरजों प्रकाशे - कोई विरला, सर्व सर्व ओ जापे - कोई विरला।।**

अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत इन बोर्डों के माध्यम से अब तक जिस-जिस बात पर भी चर्चा हो चुकी है उस सबको दृष्टिगत रखते हुए याद रखो कि कुदरती आए हुए ये सारे वचन अपने आप की पहचान करने का अचूक तरीका है यानि इन वचनों पर चलने से इंसान सुनिश्चित रूप से अपने आप की पहचान कर सकता है। इसलिए जब भी सत्संगी सजन आपस में मिलो तो आत्मोन्नति के प्रति उत्साहित करते हुए एक-दूसरे से इस तरह पूछो कि सच बोलो, सच बोलो, सजनों सच बोलो कि गृहस्थ आश्रम आपका ठीक है या नहीं सच बोलो। तीन टाईम आपका अखंड पाठ ठीक है या नहीं सच बोलो। ठीक उत्तर दो प्रकाश है या नहीं सच बोलो। इस तरह सब एक दूसरे को आत्मोद्धार के लिए प्रोत्साहित कर जीवन बनाने के लिए प्रेरित करो ताकि सभी सजन परमार्थ के रास्ते पर सुदृढ़ता से चलते हुए अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में स्थित हो प्रकाश नाल प्रकाश हो जाएं।

सबकी जानकारी हेतु इसी संदर्भ में सजनों आगामी कक्षा में वीरवार के तीसरे बोर्ड के विषय में बातचीत होगी।

वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जब कोई सजन शास्त्रविहित् युक्ति अनुसार पुरुषार्थ दिखा, अपने आप की पहचान कर ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाता है और समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए अपना घर सतयुग बना लेता है तो वह सजनता का प्रतीक बन जाता है। ऐसी सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त होने पर उसके लिए जहाँ बैहरूनी वृत्ति में सबके साथ मैत्री-भाव से सद्भावपूर्ण व्यवहार करते हुए एकता, एक अवस्था में बने रह, अभेद दृष्टि होना सहज हो जाता है वहीं अन्दरूनी वृत्ति में सुरत और शब्द का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है कि सुरत को अपने इष्ट मित्र से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। ऐसा कमाल होने पर सुरत, मन को संतोष प्रदान करने वाला अनमोल परमार्थी धन, प्राप्त कर हर्षा उठती है और इंसान अपने इष्ट मित्र से प्राप्त सत्यज्ञान, सर्वहित की खातिर अथक परिश्रम दिखा, निष्काम भाव से सबमें एकरस बाँटते हुए परोपकार कमाता है। याद रखो ए विध् परमार्थी धन जितना भी बाँटो उतना ही बढ़ता है।

इस संदर्भ में सजनों मानो कि जब सर्वमंगल के सिद्धान्त अनुरूप जीवन जिया

जाता है तो सबमें विश्व की सृष्टि करने वाला सर्वभावन परमात्मा दृष्टिगोचर हो उठता है। परिणामतः उस सर्वशक्तिमान की सर्वव्यापकता का भान हो जाता है व मन में समरूपता का भाव जाग्रत होता है। ऐसा होने पर इंसान को सबके प्रति समानता का व्यवहार करना अच्छा लगता है। सजनों यह अपने आप में समदृष्टि हो समवृत्ति में ढलने की बात होती है। आशय यह है कि ऐसा नज़रिया विकसित होने पर अलग-अलग रूप, रंग को धारण किए हुए जीव एक जैसे ही भासने लगते हैं। तभी तो शास्त्रों के अनुसार जब परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ती हुए सुरत शब्द के स्वाभाविक गुण धर्म को सम्पूर्णतया अपना लेती है और दोनों मित्र समशील बन जाते हैं तो मैं-तूं का फ़रक समाप्त हो जाता है और सुरत ठीक वैसे ही कह उठती है जैसे वीरवार के तीसरे बोर्ड में श्री साजन जी कह रहे हैंः-

बल्ले बल्ले बल्ले ओ बल्ले मेरा मित्र, मेरा मित्र है जित्थे ओ कित्थे।
सानुं लभणा पैणा नहियों, हर अन्दर हर अन्दर ओ है अस्थिते।।

ऊपरवर्णित परम सत्य को दृष्टिगत रखते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हम कलुकालवासियों के दिलों में भी ऐसा उत्तम पुरुषार्थ दिखा सर्व विजयी बनने की उत्कंठा पैदा करने के लिए यह विधि अपनाने की प्रेरणा दे रहे हैं कि :-

'जिस सजन को प्रकाश नहीं वह सजन यत्न करके ख्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल जोड़े ताकि प्रकाश हो जाए। जहां ख्याल है वहां दृष्टि। जिसे खुला प्रकाश है वह नीचे लिखी हुई युक्ति को धारण करे। जो प्रकाश महाराज जी का हृदय में देखे, वह असलियत प्रकाश मेरा अपना आप है समझे। आगे मैं भूला रहा, अब मेरी भूल दूर हो गई है। यही प्रकाश कुल दुनियां में है, अलफ जो आद अक्षर है उससे प्रकाश होता है। 'ये ' में खड़े होने से मेल महाराज जी से होता है। सजनों मोटी मोटी बातों का संकल्प तो हट गया परन्तु सूक्ष्म बातें इस युक्ति को धारण करने से हट जाएंगी। यह घटता बढ़ता हुआ टैम्परेचर समाप्त हो जाएगा'। इसी बात को अन्य शब्दों में समझाते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कह रहे हैंः-

शब्दः-

जिस ने तैनुं है उपजाया, ईश्वर ने है इन्सान बनाया,
ईश्वर ने है इन्सान बनाया।
फिर उस ईश्वर अग्गों फ़रयाद हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
फिर भी तेरी ओ फ़रयाद हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो।।

जिस ने अंग अंग दी सजावट बनाई, उस ईश्वर ने अकल तैनुं दिखाई।
अकलमन्द तूं नाम कहा के, फिर अकल तूं क्यों गंवाई।
फिर उस ईश्वर अग्गों फ़रयाद हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो।।

संकल्प कुसंगी तों बच इन्सान, उस ईश्वर दा जप लै तूं नाम।
प्रकाश में ला लै तूं ध्यान, उस ईश्वर दी कर लै कमाई।।

जिसने तेरी है बनत बनाई, जिस ने तेरी है बनत बनाई।
फिर उस ईश्वर अग्गों फ़रयाद हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो।।

संकल्प दा तूं कर लै इन्तज़ाम, फिर सर्गुण निर्गुण तेरा है स्थान।
फिर 'ये' नूं जप जप के अपनी असलियत लै पहचान।।

ज्योति स्वरूप आप नूं जान, फिर आप दी है रौशनाई,
फिर आप दी है रौशनाई।
फिर किस अग्गों फ़रयाद हो, फिर किस अग्गों फ़रयाद हो।।

निर्गुण जोत जगे महान, शक्ति तेरी खड़ी दरबान।
जेहड़ा ये दे विचों शब्द मिले,
ओन्हुं तिन साल जप जप के फिर ओ पहुँच जायेगा परमधाम।।

फिर ओहदी जोत जगे इलाही, कैसी है जे ओ सुन्दरताई।
फिर किस अग्गों फ़रयाद हो, फिर किस अग्गों फ़रयाद हो।।

अपना आप पहचान लिया, रूप रंग न रेखा कोई।
परमधाम प्रकाशे ओही, परमधाम प्रकाशे ओही।।

सर्व सर्व प्रकाश रिहा, त्रिकालदर्शी नाम कहावे सोई।
प्रकाश नाल होया प्रकाश, प्रकाश नाम कहावे सोई।
फिर किस अग्गों फ़रयाद हो, फिर किस अग्गों फ़रयाद हो।।

हम परमधाम में रहते हैं, एहो कुछ हम कहते हैं,
परमधाम में ईश्वर राहवे।
हम ब्रह्म हूं हम ब्रह्म हां, ओ ब्रह्म नाम कहावे, ब्रह्म जगे सारे ब्रह्माण्ड।।

ब्रह्म है जे अपना नाम, हम ब्रह्म हां हम ब्रह्म हां,
ओ परमधाम ओ परमधाम।
फिर किस अग्गों फ़रयाद हो, फिर किस अग्गों फ़रयाद हो।।

सजनों जानो जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति को अपनाकर इन्सान के स्वभावों का घटता-बढ़ता हुआ टैम्प्रेचर समाप्त हो जाता है तो उसके लिए समभाव नजरों में कर मैत्री भाव से इस ब्रह्ममय जगत में विचरना सहज हो जाता है। फिर सजनों जो भी इंसान इस प्रकार एक मित्र की तरह सबसे स्नेह रखते हुए आत्मज्ञान अनुसार जीवन जीने की कला निपुणता से सीख जाता है वह ही इस जगत में शास्त्रविहित् कर्म करते हुए, अपने मन को अखंडता से प्रभु में लीन रख इस विराट् रूप नगरी की रम्ज़ जान पाता है। ऐसा होने पर वह सहसा ही कह उठता हैः-

हम एक हैं हम एक हैं, कुल संसार नगरी हम एक हैं।
फिर एक ही विराट् हुआ सारी विश्व सारी सगली हम एक हैं।।

इस बात को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमें कैसे एक दृष्टि, एक दर्शन में स्थित होने के योग्य बनने के लिए, अपना ध्यान प्रभु में स्थिर रखते हुए अपने असलियत विराट् रूप को पहचाने के लिए शास्त्रविहित् युक्ति अपनानी है, उसके बारे में आगामी कक्षा में जानेंगे।

वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 2 (विराट्)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कह रहे हैंः-

'विराट् नगरी उस परमपिता परमात्मा दे गर्भ में सुहाये।
उदय हुआ फुरना, फुरने दी सृष्टि प्रकट करके दिखाये।।

सजनों सृष्टि के इस सत्य को दृष्टिगत रखते हुए वेद-शास्त्र भी ब्रह्म की महिमा गाते हुए कहते है कि 'सूक्ष्म से सूक्ष्म है स्थूल इतना कि जिसमें है सारा ब्रह्मांड समाता'। इस संदर्भ में सजनों यहाँ सूक्ष्म का अर्थ है इतना बारीक या महीन जो जल्दी समझ में आने वाला न हो यानि दुर्बोध व दुर्गम हो तथा स्थूल का अर्थ है बड़े आकार वाला जो सामान्य आँखों से देखा जा सके यानि ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहण किया जा सके उदाहरणस्वरूप मिथ्या शरीर व जगत। परब्रह्म को भी सूक्ष्म कहते हैं। इस कथन की पुष्टि में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया हैः-

साजन जी दी सूक्ष्म है वृत्ति,
सूक्ष्म है जे ओन्हां दी चाल डौल, सूक्ष्म है जे ओन्हां दा पहरेवा।।

उपरोक्त विवेचना के विषय में सजनों ज्ञात हो कि जहाँ स्थूल सृष्टि से जुड़ने वाला इंसान, स्थूल ज्ञान प्राप्त कर स्थूल मति बन जाता है और उसका मन चंचल हो अस्थिरता को प्राप्त हो जाता है, वहीं शास्त्रविहित् विधि विधान अनुसार अपना ख़्याल सूक्ष्म ब्रह्म में ध्यान स्थिर रखने में कुशल व्यक्ति सूक्ष्म भाव व दृष्टि द्वारा अंतर्निहित सूक्ष्म तत्त्व यानि आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कर उसे पहचान जाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

ओ बड़भागियो मीतां दा मीत हमारा जैं दिखाया सूक्ष्म अन्दर दा नज़ारा।
ओ बड़भागियो मीतां दा मीत है सोई, ओ मीत हमारा ओही।।

निःसंदेह वह इस अद्‌भुत नज़ारे को देखने में इसलिए कामयाब हो पाता है क्योंकि प्रभु संग मित्रताई लगाने वाले उस सूक्ष्मदर्शी तीक्ष्ण बुद्धि इंसान में सूक्ष्म विषयों या गूढ़ तथ्यों को सोच-समझ कर धारण करने का गुण स्वतः ही विद्यमान होता है।

परिणामतः सजनों हम कह सकते हैं कि जहाँ स्थूलता से जुड़ने वाला अविचारी अधीर व मूर्ख इंसान जीवन में हर कार्य अंदाजे से करते हुए, हर तरफ से हार खा जाता है वहीं सूक्ष्मदर्शी बुद्धिमान इंसान, इस स्थूल ब्रह्मांड को विवेक दृष्टि से देख-समझ कर, उसकी रम्ज़ जान जाता है और माया के आवरण में ढँके होने के बावजूद भी, मायातीत होकर इस ब्रह्ममय जगत में निर्लिप्तता से विचरते हुए अपने वास्तविक स्वरूप में एकरस स्थित बना रह जन्म की बाज़ी जीत जाता है। इसी संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

सूक्ष्म अन्दर जाय के पाया उस विश्राम।
रूप रंग न रेखा राहवे रोशन कर लिया नाम।।
साथ ही इस अवस्था को प्राप्त करने हेतु यह भी कहा गया है:-
निर्मल वृत्ति निर्मल स्मृति, जैं सूक्ष्म युक्ति वल ध्यान दिया।
निर्मल पा लिया बाणा उसने अपना आप पहचान किया,
ओ अपना आप पहचान किया।।

इस विषय में सजनों हम भी सूक्ष्म दृष्टि होकर इस विराट् नगरी में शब्द ब्रह्म विचारों अनुसार विचरने के योग्य बन सकें, उसके लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन जी कहते हैं:-

जेहड़ा नाम ओही प्रभु दा ध्यान लगावेगा।
असलियत अपनी विराट् रूप, एक दृष्टि हो जावेगा।।

इस बात को दृष्टिगत रखते हुए सजनों आओ सबसे पहले विराट् शब्द का शाब्दिक अर्थ समझते हैं:-

शब्दकोश के अनुसार सजनों ब्रह्म का वह स्थूल रूप जिसके अंदर अखिल विश्व है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व जिसका शरीर है, विराट् कहलाता है। इस भावना का निरूपण सजनों वेद शास्त्रों में इस प्रकार किया है कि उस पुरुष के सहस्त्रों मस्तक, सहस्त्रों चरण हैं। वह पृथ्वी में सर्वत्र व्याप्त रहने पर भी दस अंगुल ऊपर अवस्थित है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी परमेश्वर इस कथन की पुष्टि करते हुए कहते हैं:-

संहसर सीस सहंसर नेत्र भुजा सुहावे,
संहसर ओहदे चरण, संहसर चरणां विच आवे
विराट रूप नगरी है जेहड़ी, जेहड़ा शरण आवे ओ मेरी।।

विराट् का शाब्दिक अर्थ जानने के पश्चात् आओ सजनों अब सच्चेपातशाह जी के पत्रों वाली पुस्तक के अनुसार विराट् को समझते हैं। जानो इस पुस्तक में सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

'विराट् क्या है -- शब्द विचार। विचार के साथ सबमें भगवान निगाह आवे अर्थात् सर्वभगवानमय दृष्टि हो जावे। जनचर-बनचर, जड़-चेतन सबमें एक भगवान हो जावे। यह है सर्वव्यापी भगवान को मानना। इसी पर दृष्टि को खड़ा कर लेवें। एक दृष्टि-एक दर्शन हो जावे। जब एक दृष्टि-एक दर्शन हो गया तो फिर:-

1) क्रोध किस से करोगे ? भगवान के साथ, जब दूसरे सजन को क्रोध आ भी जावे अपने अंदर खटका न होवे, सट न लगे बल्कि हँसी आवे कि सर्व भगवान ही तो है।

2) निन्दया किस की करोगे किस की सुनोगे ? भगवान की। क्योंकि करने वाले में भी भगवान है, सुनने वाले में भी भगवान है और जिसकी करोगे उसमें भी भगवान है।

3) वैरी-दुश्मन किसको समझोगे? भगवान को।

4) झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करनी क्योंकि भगवान सर्वव्यापी है। सब कुछ देख रहे हैं। इस तरह अफुर अवस्था हो जाएगी।

इस तरह सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सजनों एक दृष्टि कर लेवें, दृष्टि विराट् रूप हो जावे। दृष्टि उजली हो गई तो चमक पड़ोगे। इसी विचार को पक्का कर लेवें। विराट को पकड़ना है। विराट पर जो खड़ा हो गया उसकी जित-जित, फ़तह-फ़तह।

सजनों हम सब भी इस दिग्विजय को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकें इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार समर्पित भाव से उनकी युक्तियों पर चलते हुए अपनी सुरत को परमेश्वर संग जोड़े रखने में सक्षम बनें ताकि इस संसार में प्रभु आज्ञा अनुसार हम जो भी करने आए हैं उस प्रयोजन को संसार से निरासक्त रह बुद्धिमत्ता से सिद्ध कर सकें और ए विध् निर्विकारता के प्रतीक बन अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाएं।

अगर यह सब जानने समझने के पश्चात् सजनों आपके मन में इसी जीवन में परमपद पाने के प्रति उत्साह व उमंग पैदा हुई है तो वीरवार के तीसरे बोर्ड में विराट् के संदर्भ में लिखी युक्ति को सहर्ष विधिवत् अपना लो और कामयाब हो जाओ। आपकी जानकारी के लिए यह युक्ति इस प्रकार है:-

विराट

‘अलफ़ जो आद अक्षर है उससे प्रकाश होता है। और ’ये’ में खड़ा होने से महाराज जी से मेल होता है। यह है विराट् अर्थात् असलियत की पहचान। जब कोई सजन चाहे वह परिवार के हों, बालक हों, वृद्ध हों, गरीब हों या अमीर हों उसे जय सीता राम, नमस्ते या सत श्री अकाल बुलाते ही दृष्टि उस सजन के हृदय की तरफ देखे, और उस में अपनी असलियत प्रकाश को देखे। बातचीत करते समय ख्याल उसी प्रकाश में ठहरा रहे। बातचीत करने से मुस्कराहट आयेगी, बदन प्रफुल्लित होगा, हृदय खिड़ेगा और मुख चमकेगा। जो सजन यत्न करके ’ये’ में खड़ा होकर महाराज जी के मुख से शब्द लाएगा तो समझो कि वह ही महाराज जी से मेल खायेगा‘ ।

सजनों इस संदर्भ में अगले सप्ताह समझेंगे कि जब अलफ़ आद् अक्षर को एकरस जप-जप कर इंसान का ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल हो जाता है और ए विध् हृदय के प्रकाशित होते ही वह विराट् अर्थात् असलियत की पहचान कर लेता है तो उस सत्-चित्त्-आनन्द स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर की विराट् नगरी में विचरते हुए वह सहसा क्या कह उठता है?

दिनाँक 19 जुलाई 2020 का सबक़

वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत कक्षा के तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए जानो कि जब इन्सान का हृदय प्रकाशित हो जाता है तो वह 'ये' में खड़ा हो यानि 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़ा हो जाता है। यह अपने आप में 'विराट् नगरी उसी की है रौशनाई' मानते हुए यानि सृष्टि के भिन्न-भिन्न रूप-रंगों वाले चराचर जीवों को एकरूप जान, सम अवस्था को प्राप्त होने की बात होती है। इस संदर्भ में सजनों जानो कि जब सच्चेपातशाह जी ने इस पदवी को प्राप्त किया तो वह जगत में विचरते हुए अपना अनुभव बताते हुए सहसा क्या कह उठेः-

फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

शेष में तूं है गणेश में तूं है, देवी देवतियां विच तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

शिव में तूं है ब्रह्मा में तूं है, जिधर देखां सोहणा तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

सूरज में तूं है चांद में तूं है, तारों में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

वैश्य में तूं है शूद्र में तूं है, क्षत्री ब्राह्मण विच तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

सीता वी तूं है, महाबीर जी वी तूं है, चँवर झुलेंदा लक्ष्मण तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

पर्वतों में तूं है दरख़तों में तूं है, फुलवाड़ी में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

इन्द्र में तूं है वरुण में तूं है, कुबेर वी नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, गल बैजन्ती माला साजे
सिंहासन ते सोहणा लगे तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

मस्ताने ने दासियां नूं मस्ती दिखाई मस्ताना बनाया तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

जीव जन्तु तेरे दासी ने देखे, चारे पासे नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।

इस तरह सजनों ज्यों-ज्यों उनके मन में एकरूपता का भाव मज़बूत होता गया और उन्होंने जीवन की हर परिस्थिति में इस ब्रह्म भाव पर स्थिरता से एकरस बने रहने का पुरुषार्थ दिखाया तो द्वि-द्वेष में भटके हुए जगतवासियों को इस आत्मीयता के भाव को अपनाने के प्रति प्रेरित करने हेतु वह कह उठेः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

गरुड़ ते जब चल पड़े, पहुंचे विच दरबार कुर्सी ऊपर बैठ गये,

संग सजन बलधार।
गोदी में साजन सजन, शक्ति लक्ष्मी संग नाल।
हेठां संस्था बैठ गई, पिच्छों आलम रही है पुकार।।
इको रूप तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।
प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।
मन मन्दिर ओही प्रकाशे जग अन्दर ओही ओ जापे।
आ रिहा अपर अपारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।
जनचर बनचर ओही प्रकाशे, जड़ और चेतन ओही ओ जापे।
विराट नगरी नाम तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।
कदम कदम और कदम कदम ते, पब पब और हद हद ते।
प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।
सप्त द्वीप और भूमण्डल में गगन मण्डल है उसे दा नज़ारा।
महाराज जी इको रूप तुम्हारा।
रूप, रंग न रेखा राहवे, बिन सूरजों चमकारा, महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।

सजनों उनकी इस प्रेरणा से प्रेरित होने के पश्चात् जब सत्संग के कुछ सजन परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ गए तो उन्होंने उन्हें विराट् पर खड़े होने की युक्ति बताते हुए इस प्रकार आवाहन दिया कि 'अन्दर विचरो-बाहर विचरो, घर में हों या बाज़ार में, मन-मन्दिर देखो या जग अन्दर, परिवार वाले देखो या रेहड़ी वाले, बाल-वृद्ध, गरीब-अमीर जो सजन भी आगे आवे, उसको ब्रह्म यानि भगवान का रूप ही समझो और प्रसन्न होवो अर्थात् मन ही मन यह विचार कर हर्षाओ कि हे प्रभु तेरे खेल कितने निराले हैं। कितने रूपों में कितनी तरह का खेल, खेल रहे हो और खेल खेलते हुए भी उससे निर्लेप हो। इस तरह जगत के सब दृश्य देखते हुए अपने मन में किसी अन्य प्रकार का भाव पैदा करने के स्थान पर, अपनी ही ब्रह्म सत्ता का अनुभव कर हर्षाओ'।

निःसंदेह सजनों उनका इस प्रकार उन्हें प्रेरित करने का उद्देश्य यही था कि वे भी इस कमाल व विशाल वृत्ति पर ठहर 'ये' में खड़े होकर, महाराज जी के

मुख से शब्द ला, महाराज जी नाल मेल खा अपना जीवन सफल बनाने में कामयाब हो जाएं।

इस संदर्भ में सजनों हम सब भी समभाव नजरों में कर समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने में निपुण हो जाएं और ए विध् एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित हो जाएं उसके लिए हमें शास्त्रविहित शब्द विचारों को धारण कर उन्हें यथा आत्मसात् करने का पुरुषार्थ दिखाना ही होगा। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम अपनी असलियत को पहचान सकेंगे और शब्द की ताकत से माया जाल तोड़ एकरूप में खड़े हो सकेंगे। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर श्री साजन जी कहते भी हैं:-

साडी माया है कठिन प्रबल, कोई विरला ओन्हां ताईं निकल आवे।
ओ है बड़ी जमाल सजनों, उस ताईं ओ जेहड़ा निकल आवे।
ओ मेरे दाता है ओ मेहरां दा वाली।।
जेहड़ा जाल तोड़ के ओ निकल आया, इन्सान फिरदा है निषंग।
ओहदे चिन्ता, फिकर, कलेश गये, दिन रात फिरे हर्षवन्द।
ओ मेरे दाता है ओ मेहरां दा वाली।।
इन्सान जाल विच फसे ते न तोड़ सके, जिवें शेर पिंजरे विच पाया।
भजन बन्दगी दी ताकत देखो,
तरूट्टे जाल छुट्टे सारे फन्दे रोशन नाम कहाया।
ओ मेरे दाता है ओ मेहरां दा वाली।।

यहाँ सजनों जो 'ये' में खड़ा होकर महाराज जी के मुख से शब्द ला, महाराज से मेल खाने की बात हुई है उस संदर्भ में बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे।

दिनाँक 26 जुलाई 2020 का सबक़

वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 4

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जानो कि यह मिथ्या संसार यानि कारण जगत और कुछ भी नहीं केवल शब्द सुरति का खेल है। इसलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हर जीव को मूलमंत्र आद् अक्षर को शब्द गुरु जान, उसे प्रवान करने का आदेश दे रहा है। इस संदर्भ में परमेश्वर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का दृष्टांत देते हुए कहते हैं कि उन्होंने भी मूलमंत्र आद् अक्षर को ही गुरु मान भक्त शिरोमणि जैसे महान पद को प्राप्त किया और युग-युगांतरों से उनका नाम रौशन है और आज भी वह सबसे श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान व सारी दुनियां में ज्ञानवान कहलाते हैं। कहने का आशय यह है कि इस ऊँची शान को प्राप्त होकर ही उन्होंने अमर नाम कहाया। इस तथ्य के दृष्टिगत परमेश्वर कहते हैं कि हे कलुकालवासियो! संभलो और शरीरधारियों को गुरु मान सेवक-स्वामी, भक्त-भगवान व गुरु-चेले के भाव में उलझ पथभ्रष्ट होने की नादानी करने के स्थान पर, समय रहते ही सावधान हो जाओ और मूलमंत्र आद् अक्षर की एकरस रटन लगा अपनी वृत्ति शब्द में जमा लो।

ऐसा सुनिश्चित कर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार मानो

कि यह ही मेरी ब्रह्म सत्ता है और अगर मैं इस महान सत्ता को उन द्वारा बताई युक्ति अनुसार ग्रहण करने में सफल हो जाऊँ तो मैं स्वतः ही 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़ा हो सकता हूँ।

आगे वह शब्द-सुरत के मिलाप की आवश्यकता पर बल देते हुए समझाते हैं कि जानो केवल ए विध् अपनी सुरत को कंचन रखने पर ही शब्द में जुड़ सजन भाव अपना सकते हो और अपना गृहस्थ धर्म ठीक निभाते हुए जो प्रकाश आपके मन मन्दिर में है, उसी प्रकाश का सारे जग में अनुभव कर सकते हो। इस तरह सुरत-शब्द के खेल की वास्तविकता का बोध कर व हर हालत में एकरस रहते हुए अपनी अमरता का भान कर सकते हो। जानो अमरता का भान होने पर ही आपके हृदय में सर्व-सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है, वही ब्रह्म विशेष भी है, निर्लेप भी है और रूप, रंग, रेखा से बाहर है जैसा सर्वोत्तम ब्रह्म भाव पनपेगा जो अपने आप में सजन भाव पकड़ ब्रह्म स्वरूप पर खड़े होने जैसी सर्वोत्तम बात होगी।

आगे सुदृढ़ता से इस अवस्था पर खड़े रहने के प्रति सबको उत्साहित करते हुए वह कहते हैं कि जानो सजन शब्द है अफुर अवस्था जिसे कोई विरला धारण करता है और जो सजन शब्द उच्चारण करता हुआ इस अवस्था को धारण कर लेता है वह किसी से नहीं डरता है। ऐसा शक्तिशाली होने पर उस सजन के लिए निरासक्त हो प्रभु का नाम हृदय में बसा, कुदरत नाल यारी लगा, कुदरती विचारों पर खड़े हो अपनी वास्तविकता का बोध करना सहज हो जाता है।

ऐसा शुभ होने पर संसार समुद्र में भ्रमित हुई सुरत का शब्द से बिछोड़ा समाप्त हो जाता है और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार पुनः मेल होने पर भवसागर से पार उतरना सहज हो जाता है। इस परिणाम को दृष्टिगत रखते हुए ही तो सजनों श्री साजन जी ओ३म् की रटन लगाने का आवाहन देते हुए कह रहे हैं:-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

पहुंचे जब दरबार दे ऊपर, हो रिहा रंग रास जी।

कुर्सी ऊपर बैठ गये सुन रहे वचन विलास जी।।
ओ३म् है जप तप, ओ३म् है पूजा, ओ३म् दा है विस्तार जी।
जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।
ओ ओ ओ जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।।
ओ३म् रटे निष्कामी, ओ३म् रटन ब्रह्मज्ञानी।
ओ३म् दा विचार जी, जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।।
ओ३म् रटे अनुरागी, ओ३म् रटन ओ त्यागी।
ओ३म् दा है प्रचार जी, जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।।
ओ३म् रटे सन्यासी ओ३म् रटन ओ उदासी।
ओ३म् दे विच है ओ सच्ची सरकार जी।
जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।।
ओ३म् रटे अनादि, ओ३म् रटन ओ प्रमादि।
ओ३म् दे विच है ओ सिरजनहार जी।
जपो "ओ३म्-कार" शब्द "ओ३म्-कार" जी।।

सजनों इस प्रकार मूल मंत्र आद् अक्षर शब्द गुरु की महत्ता जानने के पश्चात् हमारे लिए बनता है कि हम महाबीर जी द्वारा बताए जीवन के शांतिपथ पर निरन्तर स्थिरता से प्रशस्त रह, अपना जीवन प्रयोजन सिद्ध करने के योग्य बनने के लिए, अपने ख़्याल को शब्द ब्रह्म में जोड़े रखने के प्रति, अपने मन में ऐसी लगन पैदा करें कि सुरत शब्द का मिलाप हो जाए और हम अनाहद बाजे का शब्द सुन अफुरता से आनन्द अवस्था को प्राप्त हो जाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि ए विध् सुरत को अपने अटल शौह का संग भाने लगे और वह शब्द विचारों पर भ्रमरहित बने रह, आत्मविश्वास के साथ जीवन का खेल-खेलते हुए, उनकी महारानी बन, निष्पाप अवस्था में सध जाए। जानो जीवन विजयी होने के लिए ऐसा सुनिश्चित करना परम आवश्यक है।

आगे सजनों इसी बात को दूसरे तरीके से समझने हेतु जानो कि इस विषय में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

शब्द है राम प्यारा, सुरति महारानी है
चरणां विच सुरति लावां धनुष ओ धारी दे,

उपरोक्त संदर्भ में सजनों जहाँ 'शब्द' पुरुष की संज्ञा है, वहीं 'सुरति' स्त्री को द्योतित कर रही है। इसी कथन की पुष्टि में जैसा कि शास्त्रों में कहा भी गया है:-

एक पुरुष सबाही नार
या फिर
सर्व एकात्मा है और विच परमपिता परमात्मा है।

इसका अर्थ है कि आद् पुरुष ही ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर भक्त वत्सल है और समस्त शरीरधारी जीवात्माएँ सुरत रूप में उनकी स्त्रियाँ हैं और इसीलिए कुदरती विधान अनुसार उनके लिए आवश्यक है कि प्रभु आज्ञा से इस जगत में जो कारज सिद्ध करने आई हैं वह उनके निमित्त समर्पित भाव से ही सम्पन्न करें। आशय यह है कि विधान अनुसार सुरत यानि ख़्याल को शास्त्रविहित् कर्म करते हुए जगत संग जुड़ना वर्जित है यानि उसे ईश्वर आज्ञा अनुसार जो भी करना है वह जगत से आज़ाद रह अपने स्वरूप में स्थित रहते हुए ही करना है। सजनों जानो कि सुरत के लिए इस नीति के विरुद्ध कुछ भी करना संसार संग जुड़ सांसारिक विषयों में आसक्त हो आत्मविस्मृत हो जाने जैसी आत्मघाती बात होती है। इसलिए तो ऐसी सुरत संसार में ही भटक कर रह जाती है और इस प्रकार उस वियोगन के जीवन में वास्तविक आनन्द का अभाव हो जाता है और वह कुसंग के कारण अविचार के रास्ते पर चलती हुए रोती-झुखती रहती है व नाना प्रकार के कष्ट-क्लेश भुगतते हुए आवागमन के दुष्चक्रव्यूह में जा फँसती है।

सजनों यह सब सुनने समझने के पश्चात् परमेश्वर की तरफ से अपना मुख भंवा उसे जगत संग जोड़ने की भूल कदापि मत करना वरना अपने सच्चे शौह से बिछुड़ जगत में ही रुल कर रह जाओगे। अगर कामवश होकर ऐसी भूल कर ली तो जानो सतवस्तु जो आने वाली है उसका नज़ारा कौन देखेगा? जैसा कि

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

कलुकाल दे इन्सान जे हार खा बैठे तां सतवस्तु दा नज़ारा देखे कौन ।
सतवस्तु में चौरासी दग्ध-भस्म हो राहसी तां चतुर्भुजधारी दा नज़ारा देखे कौन।।

अगर सजनों यह अद्‌भुत नज़ारा देखना चाहते हो व आवागमन के चक्कर से छूटना चाहते हो तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन प्रवान करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित ब्रह्म शब्द विचारों को नियमित ढंग से धारने का नेक नियती से पुरुषार्थ दिखा शब्द विचार पकड़ लो। अगर ऐसा सुनिश्चित करने के लिए तैयार हो तो ब्रह्म शब्द विचार पकड़ कर प्रभु को कैसे रिझाना है व पुनः सुरति शब्द विच मिला यानि आत्मस्वरूप को पा, 'ये' में से शब्द कैसे लाना है व एकरूप हो जाना है, उस विषय में आगामी कक्षा में बात करेंगे।

वीरवार का तीसरा बोर्ड ...भाग 5

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत कक्षा में हमने जो जाना उसी क्रमवार आगे बढ़ते हुए सर्वप्रथम समझते हैं कि 'शब्द' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

सजनों शब्द का अर्थ है ध्वनि, आवाज़ या फिर नाद। जानो शब्द दो प्रकार के होते हैं एक सार्थक और दूसरा निरर्थक। याद रखो विचारवान इंसान ही शब्दबद्ध आशय को समझ सकता है और उस आशय को समझ कर वही शब्द धारण करना उचित समझता है जो उसके जीवन का अर्थ सिद्ध करने के प्रति उपयोगी हों। इस तरह वह विवेकशील निरर्थक शब्द धारण करने की भूल कर अपने जीवन पर कदाचित् घात नहीं लगाता। तभी तो वह हर परिस्थिति में अपनी वाणी का निरर्थक प्रयोग करने के स्थान पर सार्थक उपयोग करने में सफल रहता है और ए विध् उसके मन में कभी भी किसी प्रकार की किसी के प्रति निरर्थक सोच नहीं पनपती। परिणामस्वरूप उसका अंतःकरण सदा विशुद्ध अवस्था में सधा रहता है और उसके लिए सद्-चरित्रता का प्रतीक बन इलाही शान से जीवन जीते हुए निर्विकारी जीवन जीना सहज हो जाता है। इस तरह सजनों सार्थक प्रयत्न करने के कारण वह किसी भी संकल्पित कार्य को निर्बाध पूरा कर वांछित परिणाम प्राप्त करने में सदा विजयी रहता है।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि जिस इन्सान के अन्दर यह गुण विकसित हो जाता है वह बुद्धिमान इंसान शब्द को पढ़ते या सुनते समय उसके वास्तविक सार्थक अर्थ को ग्रहण कर अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेता है और तद्नुकूल आचार-व्यवहार दर्शा, अपने शास्त्रविहित् कर्त्तव्यों का समुचित ढंग से निर्वहन करते हुए यथार्थ रूप में ज्ञानवान मानव बन जाता है।

सजनों इसी तथ्य के दृष्टिगत, जीव-ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान रखते हुए, इस संसार में निर्भयता से विचरने के लिए शब्द ब्रह्म यानि प्रणव मंत्र मूल मंत्र आद् अक्षर की रटन द्वारा, शब्द-रूप में ब्रह्मज्ञान यानि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर परमार्थ बनने का विधान है। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही इंसान शास्त्र अनुमोदित मर्यादा अनुसार निष्पाप कर्म करते हुए मानवता का प्रतीक बन सकता है व अपनी सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध कर कर्म गति से आज़ाद हो सकता है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

ब्रह्म शब्द वचन प्रवान करो, ब्रह्म शब्द बड़ा महाने।
आवागमन ओहदा मिट गया, उस पा लिया आत्मिक ज्ञाने।।

सजनों अपना जीवन लक्ष्य सिद्ध करने हेतु हमें भी एक आराधक की तरह, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति पर चलते हुए, इस क्रिया द्वारा अनहद ध्वनि को साध, ध्वनित संकेतक सार्थक ब्रह्म शब्द विचारों को अपने हृदय में प्रकट कर, धारण करने के योग्य बनना होगा ताकि ए विध् आत्मिकज्ञान प्राप्त कर हम समस्त मानसिक दोषों व भ्रमों से मुक्त हो सकें और जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर धीरता व स्थिरता से निर्दोष बने रह अपने जीवन में आनन्द भरने में सक्षम हो जाएं। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

सजनों पकड़ो शब्द विचार हाँ..हाँ..हाँ..हाँ फिर कदे न खासो हार।
शब्द नाल करो सजनों प्यार, सजनों पकड़ो शब्द विचार।।

सजनों जानो ऐसा सुनिश्चित करना समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार

परस्पर सुगमता से सजन भाव का व्यवहार करते हुए, अंतर व बाह्य जगत में सर्व ब्रह्म का अनुभव करने की मंगलकारी बात होगी। ऐसा करने से स्वतः ही तूं-मैं का सवाल समाप्त हो जाएगा और हृदय में सजन-भाव स्थापित हो जाएगा और हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार कह उठेंगेः-

सजन शब्द चलाओ इन्सान, वैरी दुश्मन शत्रु हिन कौन
अतः सजनों सजन शब्द की महानता समझते हुएः-
सजन शब्द चलाओ जितो मृतलोक नूं

जानो ऐसा करने से हमारे लिए युक्तिसंगत नाम ध्यान में अफुरता से स्थिर बने रहते हुए, निष्कामी व ब्रह्मज्ञानी बन अपने ब्रह्म स्वरूप को पाना सहज हो जाएगा।

इस सुन्दर और सर्वोत्तम परिणाम को दृष्टिगत रखते हुए ही तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है किः-

जैं ब्रह्म शब्द पहचान लिया, उस शब्द जिहा शब्द न कोई।
ब्रह्म विचार कोई मुश्किल पकड़े, उस अपना आप पहचान लिया।।

उस ब्रह्म आप नूं मान लिया, और ब्रह्म दृष्टि नूं जान लिया।
ओ ब्रह्म अपर अपार है और ब्रह्म शब्द उच्चारण किया।।

ब्रह्म ही ब्रह्म प्रकाश रहे ओ ब्रह्म शब्द उच्चार रहे।
ब्रह्म ही ब्रह्म आवाज़ां मारन, ब्रह्म ही सर्व अधार रहे।।

ब्रह्म महिमा है अपरम्पार, कोई विरला उतरे पार।
ब्रह्म है सम सन्तोष धैर्य दा सिंगार, ब्रह्म है ओ शब्द विचार।।

सजनों जानो कि जो भी सजन विश्वपति का ध्यान लगा इस प्रकार शब्द ब्रह्म विचार को समझने के योग्य बन जाता है वह सबना गल्लां वल्लों सौखा हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह भूलनहारा इंसान, वशिष्ठ मुनि की

तरह विचार शब्द पकड़ अपना आप पहचान लेता है और इस प्रकार इस सत्य से परिचित हो कि 'इस कुल सृष्टि का मालिक ईश्वर ही है, चार-वेद, छः शास्त्रों को गुरु रूप में धार' उन्हीं द्वारा बताए जीवन के सुखकारी व मंगलकारी रास्ते पर निषंग प्रशस्त हो अपनी अकल टिकाणे ले आता है और चानणे नाल चानणा हो जाता है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा ही गया हैः-

अकल टिकाणे जैंदी आ गई हाँ हाँ हाँ हाँ जैं ब्रह्म शब्द कीता विचार सजनों।
ओ चानणे नाल चानणा हुआ, जेहड़ा आ रिहा अपर अपार सजनों।।

जानो सुलभ ब्रह्म विचार को पकड़ कर, उसकी सच्चे दिल से आराधना करने वाले ऐसे बुद्धिमान इंसान का ख़्याल व ध्यान कभी भी सांसारिकता से नहीं जुड़ता। अन्य शब्दों में उसकी भक्ति सावधान हो जाती है, अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति सदा निर्मल बनी रहती है व हृदय बहार की तरह खिल उठता है। सजनों यह तो हम जान ही चुके हैं कि जिस महान इंसान की दोनों वृत्तियाँ समरस निर्मल अवस्था में सधी रहती हैं, केवल उसी के मन-वचन से पवित्रता झलकती है और वह सुकर्मी ही इलाही रंग में रंग जीवन की मौजें मानते हुए उच्ची शान को प्राप्त होता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों शास्त्र अनुसार मान लो किः-

ब्रह्म शब्द है बड़ा महान, कोई विरला पकड़े सजन इन्सान
ब्रह्म ही ब्रह्म असलियत अपनी जान सकदा,
ओ जान सकदा ओ कैसा सुन्दर लगदा।।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी को एक कान से सुन, दूसरे कान से निकालने की हैवानी दिखा अपना जीवन बरबाद मत करो अपितु इसके स्थान पर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, ब्रह्म शब्द विचारों को धारण करने की जो युक्ति बता रहे हैं उस पर समर्पण व स्थिरता से बने रह, उन ब्रह्म विचारों को हृदय में ठहरा आत्मसात कर लो और ए विध् जीवन के सुगम रास्ते पर चलते हुए खालस सोना हो सचखंड की सैर करने के योग्य बन जाओ। जानो सचखंड में ही निरंकार की जोत जगमगा रही है अतैव उस जोत

नाल जुड़ यानि 'कीड़ी कोलों हाथी अन्दर, ब्रह्मा कोलों तृण अन्दर' सर्व राम रूप देखते हुए, ब्रह्ममय हो जाओ। जैसा कि कहा भी गया है:-

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।
एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।

इस तरह सजनों अपने ब्रह्म स्वरूप पर स्थिर बने रह, फिर जो 'ये' में से शब्द मिले उसे तीन साल जप-जप के परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ। इसी परिप्रेक्ष्य में जानो कि जब श्री साजन जी इस सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त हुए तो हर्षित हो कह उठे कि:-

1. 'कैसा सुन्दर शब्द आया सजन श्री दाते ने दाते ने फ़रमाया सजन श्री दाते ने।

   मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक मुबारिक हो।

   कैसा है ओ सुहाया मुबारिक हो मुबारिक हो।

2. सजन श्री शहनशाह कोलों हमने सब कुछ है पाया

   कैसा है ओ हर्षाया मुबारिक हो मुबारिक हो।

   मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।

3. कैसा सुन्दर शब्द आया, ओही लिखत विच आया

   शहनशाह दाते ने फ़रमाया मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।

4. कैसा सुन्दर शब्द है आया हमें सौखा तरीका बतलाया इको रूप है दिखाया

   मुबारिक हो मुबारिक हो। मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।

   कैसा सुन्दर शब्द आया सजन श्री दाते ने। दाते ने फ़रमाया सजन श्री दाते ने'।

शब्द

एक हूँ एक हां, एक नज़रों में एक ही एक हर अन्दर सुहा रहा जनचर बनचर जड़ चेतन ओ हर्षा रहा। इको रूप तुम्हारा, इको रूप तुम्हारा। शरीर दी बनावट अलग अलग कोई पतला कोई भारा कोई गोरा कोई काला' ।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित बुधवार व वीरवार के बोर्डों के अंतर्गत आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई व गुढ़ाई के विषय में जो सार रूप में अपनाने योग्य युक्तियाँ लिखी हुई हैं, उसका विधिवत् नियमित ढंग से प्रयोग करते हुए हमने अपने जीवन के महान प्रयोजन को इसी जीवन में सिद्ध करने के लिए अब करना क्या है, उसके विषय में आगामी सप्ताह बात करेंगे।

दिनाँक 9 अगस्त 2020 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह तो हम सब अच्छी तरह से जानते हैं कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें भिन्न-भिन्न तरीकों से, असत्य-अधर्म का मार्ग छोड़, सत्य-धर्म का विचारयुक्त निष्काम रास्ता अपना, अपने जीवन के वास्तविक महत्त्व को समझने का, आवाहन बारम्बार दे रहा है।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, कुदरती वाणी है और इसमें हीरे रत्नां जड़ित कुदरती शब्द विचार भरे हुए हैं। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों जो भी मानव दिलचस्पी में आ, इस वाणी को विधिवत् समझकर पढ़ने का नियम बना लेता है केवल वह ही इस सर्वहितकारी ग्रन्थ में विदित कुदरती शब्द विचारों को धारण कर, निर्धारित नीति-नियम अनुसार उन्हें सार्थक रूप से आत्मसात् करने का पुरुषार्थ दिखा, हीरे नाल हीरा हो, अपना जीवन उद्धार कर सकता है। यहाँ आप सब यह भी मानेंगे कि इन विचारों को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर, सुनिश्चित रूप से तद्नुकूल आचार-व्यवहार करने वाला इन्सान ही, इन्सानियत में सधा रह, मानव धर्म अनुरूप मर्यादित जीवन जीने का पुरुषार्थ दिखा सकता है। इस तरह केवल वह ही विचारयुक्त सत्य-मार्ग पर सुदृढ़ता से प्रशस्त रह, अपने जीवन में सब कुछ सर्वहित को ध्यान में रखते हुए, परोपकार प्रवृत्ति से करने का साहस जुटा सकता है। जानो ऐसा करने से उस

परोपकारी सर्वहितकारी के मन में ऐक्य भाव सदा उजागर रहता है जो उसकी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताने-बाने के निर्मल होने के साथ-साथ विवेकशील होने का भी परिचायक होता है।

इसी सक्षमता के कारण वह सत्य-असत्य की परख रखने वाला बुद्धिमान इंसान, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित युक्ति अनुसार, अपने ख़्याल को सचखंड में वसने वाले निरंकार में ध्यान स्थिर रखने में कामयाब हो जाता है और उसके लिए परमार्थ के निष्कंटक रास्ते पर, सीढ़ी दर सीढ़ी मजबूती से एकरस चढ़ते हुए, आत्मीय गुणों पर स्थिरता से बने रह, आत्मसाक्षात्कार कर, जीवन की बाज़ी जीतना सहज हो जाता है।

सजनों अपना अनमोल मानव जीवन सकार्थ करने की इसी महत्ता के दृष्टिगत ही, बार-बार ध्यान कक्ष से आप सबको भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाया जाता है ताकि आपके अन्दर भी ईश्वरीय आज्ञाओं पर चलते हुए, इस जगत में निष्पाप इंसान की तरह अफुरता से जीवन जीने का ढंग अपनाने के प्रति उमंग व उत्साह पैदा हो और आप यथोचित पुरुषार्थ द्वारा, अधम अवस्था से उबर, परमात्मा के आज्ञाकारी सुपुत्र बन जाओ। सजनों जानो ऐसा अदम्य पराक्रम दिखाने पर ही आप प्रभु का संग कर सहजता से उनकी चालें पकड़ सकते हो और जो सांसारिकता अनुरूप बेढंगी चालें अब तक अपनाई हुई हैं उन्हें छोड़ने का साहस दर्शा सकते हो। यही नहीं इसी यत्न द्वारा आप अपने अंधकारमय हृदय को पुनः प्रकाशित कर आत्मबोध कर सकते हो। जीवनदायक इस बात को समझते हुए सजनों हिम्मत लड़ाओ, हिम्मत लड़ाओ और कठिनाईयों से भरा अविचारयुक्त रास्ता छोड़, शास्त्रविहित् नीति नियमानुसार महाराज जी के वचनों पर चलते हुए विचार पर खड़े हो जाओ।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरीके से संकल्प रहित जीवन जीने में कुशल होने के प्रति, कुदरत हमें कदम-कदम पर विचार पकड़ते हुए, विचार से ही प्यार करने का आवाहन दे रही है, आज की भयावह परिस्थितियों के दृष्टिगत अपनी भलाई के निमित्त उसे ध्यान से समझो और मैं-तूं का सवाल मिटा सर्व

राम रूप हो जाओ। इस तरह एकता, एक अवस्था में आ सपरिवार परमार्थ बन जाओ।

याद रखो ऐसा यत्न लड़ाने पर ही आपके मन में एक-दूसरे के प्रति सजन भाव पनपेगा और स्वतः ही सभी अंतर व बाह्य द्वन्द्व समाप्त हो जाएंगे यानि आप सभी के मन शांति का प्रतीक बन जाएंगे। ऐसा मंगलकारी परिणाम प्राप्त होने पर फिर जिस आत्मिक शक्ति का एहसास होगा उसके बलबूते पर आपके लिए युवावस्था के भक्ति भाव पर स्थिरता से बने रह, एक भाव की गरिमा अनुसार परस्पर आचार-व्यवहार करते हुए, सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण इंसान बनना सहज हो जाएगा।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों याद रखो कि जब कभी भी समाज का हर सदस्य ए विध् सत्य धारण कर, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर अकर्त्ता भाव से प्रशस्त हो जाता है तो इन्सानों के हृदय सहित इस धरा से कलियुग छँट जाता है और सतवस्तु का राज स्थापित हो जाता है।

सजनों इसी जीवनकाल में आपको भी अपने जीवन का ऐसा ही मंगलकारी परिणाम प्राप्त हो यानि आप सुनिश्चित रूप से अपने जन्म की बाज़ी जीतने में कामयाब हो जाओ, उस हेतु हम आप सबसे करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि इस काम को सिद्ध करने के प्रति किसी से मत डरो और अगर डरना भी है तो अपने परमार्थी परमपिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से डरो ताकि आप द्वारा भूलवश भी उनकी आज्ञाओं का यथा पालन करने के प्रति कोई उल्लंघना न हो। इस तरह सजनों सतर्कता व सावधानी से इस जगत में विचरते हुए, उनके आज्ञाकारी सुपुत्र बनने का पुरुषार्थ दिखा उनसे दोनों स्वार्थी व परमार्थी राज्य प्राप्त कर लो। कहने का आशय यह है कि ए विध् आत्मतुष्ट होकर धीरता से सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति-भाव पर स्थिर बने रह, अपने अंतःकरण को विशुद्ध कर लो ताकि आपके अन्दर अफुरता का वातावरण पनपे और आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बार-बार कथित मूलमंत्र आद् अक्षर को विधिवत् एकरस चलाते हुए ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने के योग्य बनो। जानो

ऐसा करने से ही आपको अपने अन्दर परिपूर्णता का एहसास होगा और कदाचित् जीवन में कभी कोई कमी नहीं खलेगी।

अतैव सजनों इस महत्त्व को समझते हुए शहनशाली का हुकम मान, शब्द गुरु के प्रति अपनी सुरत पूर्णतः समर्पित कर दो ताकि आपके हृदय में स्वतः ही शब्द ब्रह्म से उद्धृत ब्रह्मज्ञान का प्रवाह चल पड़े। यकीन मानो सजनों यदि आप दोनों वृत्तियों में सुदृढ़ता से इस अवस्था में बने रहने में सफल हो गए तो वह समय दूर नहीं जब आप ब्रह्मज्ञानी बन, संसार में भटके हुए अन्य रोते-झुखते इंसानों को आध्यात्मिक विद्या द्वारा पुनः जाग्रति में ला प्रसन्नचित्तता से जीवन जीने का असीम सुख प्रदान करने में समर्थ हो जाओगे व परोपकारी नाम कहाओगे। इस तरह आपके इस सकारात्मक प्रयास से वे भी स्वार्थ का दुःख भरा रास्ता छोड़ परमार्थ के आनन्दमय रास्ते पर प्रशस्त होने में कामयाब हो जाएंगे।

यहाँ यह भी याद रखना कि यदि इसके विपरीत आप मूलमंत्र आद् अक्षर चलाने की युक्ति की प्रवानगी में किसी विध् भी कमज़ोर रहे यानि पिता के वचनों की उल्लंघना कर, मानसिक तौर पर क्षीण बने रहे तो आप शास्त्रविहित व सार रूप में बुधवार व वीरवार के बोर्डों में वर्णित युक्तियों को पकड़ने में पूरी तरह से असक्षम रहोगे जो अपने आप में आडंबरयुक्त जीवन जीते हुए, जन्म-मरण की भयावह त्रास भुगतने का हेतु होगा। इस विषय में सजनों अगर हकीकत में अपने और अपने परिवारजनों सहित समाज के सजन हो तो इस बात को गहराई से समझो और मनमत के अधीन रहने के स्थान पर गुरुमत अपना कर सही मायने में इंसान बन जाओ और ए विध् अपने स्थान को पाओ।

अंत में यह बात भी ध्यान से सुनो कि चाहे आपको ग्रन्थ में विदित आत्मिक ज्ञान के साथ जोड़ने के लिए तरह-तरह का यत्न किया जा रहा है और उसके अंतर्गत आपको मौखिक व लिखित रूप से भी समझाया जा रहा है पर आपको सावधान रहना है कि आपने जो भी विचार जीवन में उतारने हैं वह केवल सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी को पढ़-समझ कर ही उतारने हैं। अतैव

मानो कि इसके लिए आपको केवल सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को नियमित रूप से पढ़ने की आदत ही नहीं डालनी होगी वरन् उसमें विदित शब्द विचारों को युक्तिसंगत अनुशीलन द्वारा आत्मसात् भी करना होगा।

सजनों ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति हम किसी विध् भी कमज़ोर न पड़ें उसके लिए श्री साजन जी, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के बल व शान की उपमा करते हुए जो संदेश दे रहे हैं उसे ध्यान से सुनो, पढ़ो, समझो व विदित युक्ति अनुसार समभाव-समदृष्टि पकड़ अपने अन्दर से खोट निकाल, खालस सोना हो जाओ व अमर नाम कहाओः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शहनशाह हनुमान बलवान है, ऊच्ची ओन्हां दी शान है।
उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है
उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।।
परउपकारी जिन्हां दा नाम है, परउपकारी जिन्हां दा नाम है।
उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।
उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।।

(अब सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

असां संग रहूं तुहाडे, तुसां संग रहो असाडे।
इको रूप कहाने हां, असां संग तुहाडे रैहने हां।
इको रूप कहाने हां, असां संग तुहाडे रैहने हां।।
भक्ति जेहड़ा सजन लैंदा है फड़, शक्ति लैंदा धारण कर।
जेहड़ा वचन करे प्रवान, ओहदे कोलों भक्ति बड़ी बलवान।।
जेहड़ा वचन करे प्रवान, ओहदे कोलों शक्ति बड़ी महान।
जैंदे कोलों शक्ति है ताकतवर,
वैरी दुश्मन और बनचर उस सजन नूं किसे दा नहीं डर।।
जेहड़ा पकड़े अपने आप नूं इन्सान, ओहदे कोलों भक्ति है बड़ी बलवान।

जेहड़ा पकड़े अपने आप नूं इन्सान, ओहदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।।
भक्ति सजन प्रबल फड़, फिर महाराज जी दा दर्शन कर।
जिन्हां सजनां ला लिया ध्यान, ओहदी भक्ति है बड़ी बलवान।

जिन्हां सजनां ला लिया ध्यान, ओहदी शक्ति है बड़ी महान।।
समभाव समदृष्टि फड़, बेख़ौफ़ा बेख़तरा विचर।
सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों भक्ति है बड़ी बलवान।
सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।।
शहनशाह हनुमान बलवान, ऊंची है जे ओन्हां दी शान।
है अमर ओन्हां दा नाम, हैन ओ शक्तिवान।
है अमर ओन्हां दा नाम, हैन ओ शक्तिवान।।
जिन्हां शक्ति नूं जान लिया, जिन्हां शक्ति नूं पहचान लिया।
ओ फिरदे ने मालो माली, ओ फिरदे ने मालो माली।
खालस सोना खोट न राहवे, ओ चाल चले निराली।।

शब्दः-

भक्ति सच धर्म दी कर, फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर।
शक्ति दा हथियार हाथों में फड़, बेख़ौफ़ा बेख़तरा जगत में विचर।।

सबकी जानकारी हेतु सजनों अगले सप्ताह इसी विषय पर आगे चर्चा करेंगे।

दिनाँक 16 अगस्त 2020 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत कक्षा में जो युक्तिसंगत पुरुषार्थ द्वारा, बुधवार और वीरवार के बोर्डों में वर्णित, ब्रह्म शब्द विचारों को आत्मसात् करते हुए, अपने हृदय को सचखंड बना अमरता को प्राप्त होने की बात समझी है, अगर उस अभिलाषा को सुनिश्चित रूप से सहज ही सिद्ध करने के योग्य बनना चाहते हो तो ध्यान से सुनो किः-

इस सृष्टि के रचनाकार व सारी विश्व के मालक-पालक निर्गुणिया परमेश्वर, माया के आवरण में ढँकी हुई शरीरधारी जीवात्माओं यानि प्रतिबिम्बित अपनी ही सुरतों को, अपने जीवन का प्रयोजन समयबद्ध सिद्ध करने के प्रति सचेत करते हुए, अखंडता से शब्द ब्रह्म में लीन रह, निर्विकारता से सर्गुण-निर्गुण के खेल-खेलते हुए गगनमंडल में स्थित रहने का आदेश देते हैं। यही नहीं इस परम आदेश की पालना के प्रति सबको मानसिक रूप से स्थिरता प्रदान करने हेतु, सभी सुरतों के वाली श्री साजन जी, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म यानि मूलमंत्र आद् अक्षर ओ३म् की महिमा सविस्तार गहनता से समझाते हुए कहते हैं किः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।
ओ३म् दे विच है जोत मेरी, ओ३म् दे विच मैनूं ही जान
ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा।।
ओ३म् दे विच मैं जाप रिहा, ओ३म् ही प्रकाश मेरा जान।
ओ३म् दे विच है चानणा, हर अन्दर मेरा ओ जानणा।
ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् चमके चार चुफेरी, उस तों निर्लेप जोत मेरी जाण।
जोत चमके ओ चमक दिखावे, चमक रिहा हूं निर्वाण।
ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् जपे लोक लुकाई, ओ३म् दी कीमत किसे विरले पाई।
ओ३म् जपे ओ सुजान, बिन सूरजों प्रकाश ओहदा जान।
ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् विच अटल है जोत मेरी, जग मग जगदी आई।
जोत जगे ओ लोक लुकाई, जैंदी हर अन्दर रौशनाई।
ओ३म् दे विच मैं चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।

इस संदर्भ में सजनों अगर हम परमेश्वर के इस जीवन विजयी होने के प्रति दिए गए आदेश पर दिल से खरे उतरना चाहते हैं तो हमें इस कीर्तन को न केवल एक विवेकशील, विद्वान इंसान की तरह अत्यन्त ध्यानूपर्वक पढ़ते हुए, इसके भावार्थों को यथार्थ रूप से समझना होगा अपितु समुचित पुरुषार्थ दिखा इसमें विदित विचारों को जीवन में उतारना भी सुनिश्चित करना होगा। जानो ऐसा करने पर ही हम इस सार्थक शब्द ब्रह्म की कीमत पा, एकरसता से इसका विधिवत् जाप कर पाएंगे और इसे अपने ख़्याल में रमा अपने हृदय को प्रकाशित रखते हुए समस्त चराचर जीवों में उसी प्रकाश का अनुभव कर

पाएंगे। इस तरह तभी हम बिन सूरजों प्रकाश में हृदय सुशोभित, आद् पुरुष, निरंकार, ज्योति स्वरूप, परब्रह्म परमेश्वर, भक्त वत्सल परमेश्वर का साक्षात्कार कर, उन्हीं की अनुकम्पा से, इस मायावी जगत के ब्रह्ममय होने का भाव अपने हृदयगत कर पाएंगे और कह उठेंगेः-

ओ३म् ओ३म् ओ३म् विच जड़या होया हां।
ओ३म् ओ३म् ओ३म् विच खड़ा होया हां।।

यहाँ हमें 'ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा' की यथार्थता का बोध हो जाएगा। ऐसा विचित्र होने पर हमारे लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाएगा जो अपने आप में समस्त जगतीय फुरनों से आज़ाद होने की बात होगी।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि ए विध् जब हमें ईश्वर की सर्वव्यापकता का भान हो जाएगा तो स्वतः ही ईश्वरीय कृपा से कई जन्मों से लगा 'हौं-मैं' का रोग मिट जाएगा। इस तरह तेरी-मेरी, ईर्ष्या-द्वेष आदि जैसे दुर्भाव समाप्त हो जाएंगे और परमार्थ के रास्ते पर निष्कंटक आगे बढ़ते रहने के लिए हमें असुरसिंघारी, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग भाने लगेगा। इस प्रकार सुनिश्चित रूप से सजनों जब उन भक्ति-शक्ति के दाता जी संग लगन लग जाएगी तो हमारे लिए समर्पित भाव से उनके मार्गदर्शन में बने रहते हुए, सत्-शास्त्रों के विचारों अनुरूप सम, संतोष व धैर्य का सिंगार पहन, उत्तम सुपुत्र की तरह सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रहना सहज हो जाएगा। ऐसा होने पर ही हम एक शक्तिशाली इंसान की तरह अपने मन को शांत रखते हुए, एकता, एक अवस्था में बने रह पाएंगे और मुकम्मल अफुर अवस्था को प्राप्त हो जाएंगे। फिर सजनों जैसे ही हमारा ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल स्थिर हो जाएगा तो आत्मिक ज्ञान गंगा का अविरल प्रवाह हमारे शरीर के रोम-रोम, रग-रग को इस तरह पवित्र कर देगा कि हमारे

शारीरिक स्वभावों की सफाई हो जाएगी। कहने का आशय यह है कि हमारी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना-बाना स्वतः ही निर्मल हो जाएगा। ए विध् उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल होते ही हमारी भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर हो जाएगी। इस प्रकार एकरूपता के भाव से इस जगत में विचरते हुए फिर हमारे मन में 'सब सजन हुण वैरी कौन' का भाव जाग्रत होगा जो अपने आप में 'एक निगाह एक दृष्टि होकर एक दर्शन में' स्थित होने जैसी मंगलकारी बात होगी।

इस मंगलकारी उपलब्धि के तहत् सजनों आप भी जैसे बताया है तद्नुरूप भरसक पुरुषार्थ दिखाओ और सद्मार्ग पर प्रशस्त हो जाओ। सजनों अगले सप्ताह इसी विषय पर आगे चर्चा करेंगे।

दिनाँक 23 अगस्त 2020 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह अपने जीवन में मूलमंत्र आद् अक्षर की महान महत्ता को जानने के पश्चात् हमें समझ आया कि हमारे लिए सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार शब्द गुरु मूलमंत्र आद् अक्षर को एकरसता से चलाते हुए ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करना नितांत आवश्यक है। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम सर्व-सर्व उस ब्रह्म प्रकाश का आभास कर सकते हैं और अपने मन को कामनामुक्त रखते हुए निष्कामता से सत्य-धर्म के रास्ते पर प्रशस्त होने का पुरुषार्थ दिखा परोपकार कमा सकते हैं। जानो यह अपने आप में निज ब्रह्म स्वरूप में स्थिर बने रह एक जितेन्द्रिय इंसान की तरह सारे ब्रह्मांड को सजन मानते हुए, मौत के भय से निर्भय हो संकल्प रहित जीवन जीने की बात है। इस उपलब्धि के तहत् सजनों आप भी इस उत्तम अवस्था को प्राप्त करने हेतु हिम्मत दिखाओ और सजनता के प्रतीक बन व दिव्य दृष्टि का सबक़ ले एकात्मा हो जाओ और परमात्मा से मेल खा ज्योति स्वरूप नाम कहाओ।

इस संदर्भ में सजनों हम ऐसा करने में कामयाब हो जाएं इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत निम्नलिखित कीर्तन के माध्यम से हमें ख़्याल द्वारा मूल मंत्र आद् अक्षर ओ३म् की रटन लगाने का आवाहन दे रहे हैं ताकि हम इस कीर्तन में वर्णित सत्य को दृष्टिगत रखते हुए, किसी विध् भी इस हितकर क्रिया को घड़ी की टक-टक की तरह निरन्तर करने में कमजोर न पड़ें और कलुकाल के प्रभाव में फँस अपना जीवन व्यर्थ न गँवा बैठें:-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

ओ मूर्ति विशाल हर अन्दर ओ पई वसदी।
ओ मूर्ति विशाल मन मन्दिर ओ पई दिसदी।।
संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।
ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।
रघुवंशमणि पये लोचदे सारे हिन पये सोचदे।
आप दी प्रिय है ज़बान कैसे पये हो शोभदे।।
संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।
ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।
रहमत रमता है, रहीमत रमैया रमने वाला है।
रोशन है ओ सारे जगत ते, रोशनी देने वाला है।।
संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।
ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।

ओ३म् चमके ओ३म् दा मन्दिर विच चमके ओ३म् दा सांईं है।
सर्वव्यापी है नाम तेरा, सर्व ही जग माही है।।
संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।

ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।

ओ३म् विच विशेष है, ओ३म् तों निर्लेप है।

हर अन्दर ओ चमत्कार है सब सनां दा यार है।।

संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।

ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।

ओ३म् दा ही मन्त्र है ओ३म् ही स्वतन्त्र है।।

ओ३म् दे हिन चार वेद, छः शास्त्रां दा प्रकाश है।

ओ३म् दे हिन चार वेद, छः शास्त्रां दा प्रकाश है।

ओ३म् तों निर्लेप है उसे दा जप जाप है।।

संख चक्र गदा पद्म ओ है पद्मधारी।

ओ है पद्मधारी, ओ है पद्मधारी।।

(श्री साजन जी कहते हैं)

चरण तुआडे महाबीर जी जेहड़ा देखे ठरदा ओही ए।

चरण सब दे डिट्ठे बहुतेरे, इन्हां चरणां जिहा न कोई ए।।

उपरोक्त कीर्तन को सुनने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपनी दिनचर्या पर गहन विचार करें कि कहीं हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम-अक्षर चलाने की युक्ति पर मजबूती से बने रहने में किसी विध् भी कमज़ोर तो नहीं पड़ रहे। अगर ऐसा है तो सजनों अभी वक्त है संभल जाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि:-

'वेद पुराण कुरान सजनों सब कोई अलफ़ दा मंत्र बतांदा है

एहो मूलमंत्र दा सिमरन करके फिर ओ ये नूं पांदा है

इस संदर्भ में सजनों उपरोक्त अवस्था को प्राप्त हो जो शास्त्रविहित् युक्ति अपना 'ये'

की पहचान कर लेता है, वह बिन सूरजों प्रकाशित हो, ज्योति स्वरूप नाम कहाता है और इस प्रकार जन्म की बाज़ी जीतकर अपना जीवन सफल बनाता है।

आपके जीवन का परिणाम भी ऐसा ही उत्तम हो इस हेतु सजनों हम बार-बार हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं कि 'मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगा सर्गुण का नज़ारा पा लो और फिर महाराज जी की युक्ति अनुसार 'ये' चलाकर निर्गुण में स्थिर हो जाओ। जानो ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर ही 'ये' में से शब्द आएगा यानि 'अलफ़' 'ये' का खेल समाप्त हो जाएगा और रूप-रंग-रेखा मिटते ही, बिन सूरजों प्रकाश हो परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाओगे।

सबकी सूचनार्थ अगले सप्ताह इसी विषय पर आगे बात करेंगे।

दिनाँक 30 अगस्त 2020 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों मानो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते आप सब कई विरलों में से विरले वे सौभाग्यशाली इंसान हो, जिनके पास जीवन को उन्नत कर सर्वविध् महान व सुमतिवान बनाने वाला 'सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ' है। इसे ईश्वरीय अनुकम्पा समझो या फिर कलुकालवासियों की बुद्धियों को पलटा खवा सीधे रास्ते पर लाने हेतु कुदरत की रहमत समझो, दोनों एक ही बात है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों अपने आपको खुशकिस्मत समझते हुए, इस पवित्र ग्रन्थ में, आत्मिक ज्ञान के रूप में विदित एक-एक शब्द का, अपनी अंतरात्मा से सम्मान करो व इन शब्द ब्रह्म विचारों को अपने हृदय में रमा, अपने अंतःकरण को इस तरह विशुद्ध कर लो कि बाह्य जगत के साथ-साथ अंतर्जगत भी आपके दृष्टिगोचर हो जाए और आप सहज ही परमेश्वर के इस लौकिक व पारलौकिक खेल की सार को पा अंतर्मन में परिपूर्णता का अनुभव कर सको।

जानो सजनों ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप एक सद्-विवेकी आत्मज्ञानी इंसान की तरह, आत्मविश्वास के साथ, निषंग होकर, सर्गुण-निर्गुण के खेल समरस खेलते हुए, अभेद दृष्टि हो स्थिर मानसिकता वाले इंसान बन पाओगे। यह होगा सजनों एक आत्मतुष्ट इंसान की तरह, समस्त फुरनों व झंझटों से

मुक्ति पा, समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार, धीरता से परस्पर सजन-भाव का व्यवहार करते हुए निष्काम हो जाना। इस अवस्था को प्राप्त होने पर सजनों आपके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताए, सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति-भाव पर स्थिरता से बने रह अपने स्थान को पाना व परोपकार कमाना, कोई कठिन बात नहीं रहेगी। कहने का आशय यह है कि मात्र यह पुरुषार्थ दिखाने पर, परमार्थ का रास्ता आपके लिए इतना साफ और स्पष्ट हो जाएगा कि फिर आपके लिए स्वार्थपरता का रास्ता छोड़, मानव धर्म के परिचायक इस विचारयुक्त मार्ग पर स्थिरता से बने रहना सरल व सहज हो जाएगा। सजनों जानो ऐसा होते ही आपके स्वभाव मानवता अनुकूल ढलने लगेंगे और धीरे-धीरे शारीरिक स्वभावों पर फतह पा आपकी सुरत कंचन हो जाएगी और दिव्य पुरुष के साथ जा जुड़ेगी। तदुपरांत इस अलौकिक मिलन के आनन्द का अनुभव कर आपका मन स्वतः ही शब्द ब्रह्म में लीन हो उसी का हो जाएगा और चित्त-निवृत्ति प्राप्त हो जाएगी। यहाँ चित्त-निवृत्ति से तात्पर्य चित्त की संसार के प्रति विरक्ति से है। ऐसा होते ही सजनों चित्त सुख-दुःख आदि भावों से विमुक्त हो, प्रसन्न व शांत अवस्था को प्राप्त हो विशुद्ध हो जाएगा। अन्य शब्दों में कहें तो इस प्रकार मन में आत्मभाव के विकसित होते ही चित्त-वृत्ति निर्मल हो जाएगी और सब मानसिक संशय-भ्रम, दोष आदि मिट जाएंगे व हृदयगत सत्य उजागर हो जाएगा। इस प्रकार हृदय में सत्य के प्रकाशित होते ही चंचल मन एकाग्र हो जाएगा और आपके लिए निरासक्त भाव से अपने मन को बाह्य विषयों से हटा, अंतर्ध्यान हो, अन्तर्मुख होना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। जानो इस उच्च मानसिक अवस्था को प्राप्त होने पर आप 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो जाओगे व आत्मिक ज्ञान आपकी स्मृति का आधार बन जाएगा। इस तरह आपकी स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताना-बाना निर्मल हो जाएगा और आप एक बुद्धिमान उत्तम पुरुष की तरह सत्य-धर्म अनुरूप आचार-व्यवहार करते हुए मोक्ष प्राप्त कर लोगे व अमर नाम कहाओगे। इस उत्तम अवस्था की प्राप्ति के तहत् आओ सजनों अब उपरोक्त के संदर्भ में जानें कि बाह्य व अंतर जगत में क्या अंतर हैः-

जानो बाह्य का अर्थ है बाहरी और जगत का अर्थ है गतिशील, चेतन सृष्टि जो

नित्य, सत्य और परिवर्तनशील मानी जाती है। इस जगत की आत्मा यानि आधार एकमात्र परमात्मा है। माया के आवरण में ढँकी हुई शरीरबद्ध आत्मा के लिए यह मायावी दृश्य जगत विदेश की तरह अपरिचित स्थान है। अतः इस जगत में आविर्भूत होने के पश्चात् जो भी जीव इस बाह्य जगत के संग जुड़ आडम्बरयुक्त आचार-विचार व व्यवहार अपना बैठता है वह आत्मविस्मृत हो बहिर्मुखी हो जाता है। उसकी इसी महा भूल के कारण उसकी बुद्धि भ्रमित व भ्रष्ट हो कुंठित हो जाती है और उसके मन में असंतोष व अधीरता घर कर जाती है। फलतः इंसान इन अभावग्रस्त स्थितियों में सांसारिक विषयों की प्राप्ति की होड़ में रत हो, असत्य-अधर्म का रास्ता अपना पथभ्रष्ट हो जाता है और अविचार युक्त कवलड़े रास्ते पर चढ़, कुकर्म-अधर्म करते हुए, जन्म मरण के चक्रव्यूह में फँस जाता है व जीवन की बाज़ी हार जाता है।

आगे जानो कि अंतर्जगत का अर्थ है भीतर का समीप, प्रिय व आत्मीय घर। इस अंतर्जगत के संदर्भ में सजनों यह सत्य तो शास्त्रविदित है कि जब इंसान का ख़्याल मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगाकर अपने इस सच्चे घर में एकाग्रचित्तता से ध्यान स्थित हो जाता है तो उसे आत्मबोध हो जाता है और वह हृदय सुशोभित परमात्मा के साथ जा जुड़ता है। इस प्रकार बाह्य सृष्टि में रहते हुए भी उसके प्राणाधार के संग समर्पित भाव से एकरस बने रहने पर इंसान के ज्ञान रूपी नेत्र यानि अंतर्पट खुल जाते हैं और वह बाह्य जगत में अभेद दृष्टि होकर निष्काम भाव से विचरते हुए सजनता का प्रतीक बन जाता है।

जानो ऐसा समवृत्ति सजन पुरुष ही अंतर्गत रह, शुद्ध भावना से अन्दर की गुप्त बात पूरी तरह से सुन व समझ बाह्य जगत में विचरते समय, अलौकिक आचार-व्यवहार पर स्थिरता से बना रह सकता है और एक जितेन्द्रिय इंसान की तरह निष्पाप जीवन जीते हुए आत्मीयजन कहला सकता है।

अंतर व बाह्य जगत के भेद को जानने के पश्चात् सजनों जानो कि वेद-शास्त्रों अनुसार परमात्मा हमारे अन्दर भी है और बाहर भी परन्तु परमात्मा के विराट् रूप का बोध करने के प्रति सक्षम होने के लिए विधान है 'घर के बाहर मत

जाना, घर में ही रहना', क्योंकि सच्चे घर के विचार व आचार-व्यवहार का तरीका भिन्न और सत्यता अनुरूप निर्मलता से परिपूर्ण है। इस परिपूर्ण तरीके को अपनाने वाले का ख़्याल इस जगत की सुन्दरता को परमेश्वर के विराट रूप में देखता है और इसी कारण जगत के प्रति आसक्त हो उसके मिथ्या रंग-ढंग अपनाने व सांसारिक फुरनों में फँसने से बचा रहता है। इसके विपरीत बाहरी जगतीय विचार व आचार-व्यवहार का तरीका मनगढ़ंत होता है जिसको अपनाने की भूल करने वाले इंसान के ख़्याल का नाता सच्चे घर से टूट जाता है और वह एक आवारा इंसान की तरह दुनियां के रंग-ढंग से प्रभावित होकर अपने वास्तविक स्वभावों से पतित हो शारीरिक भाव-स्वभाव अपना बैठता है। ऐसा दुःखद होने पर सजनों उस बहिर्मुखी मंद बुद्धि इंसान को अपने घर की चाल नहीं भाती इसलिए तो उसे परमात्मा के शास्त्रविहित् विचारों को स्वीकारने के स्थान पर, मनमत पर चलना ही अच्छा लगता है। इस प्रकार वह सर्गुण-निर्गुण को भेद दृष्टि से देखते हुए द्वि-द्वेष का चलन अपना परमार्थ की जगह स्वार्थ की राह अपना इस बाह्य जगत का ही होकर रह जाता है और जन्म की बाज़ी हार जाता है।

हमारे साथ सजनों ऐसा न हो इसलिए तो सच्चेपातशाह जी हमें अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से इन अंतर व बाह्य जगत के साथ जुड़ने पर प्राप्त होने वाले अच्छे-बुरे परिणामों से परिचित कराते हुए, हमें अंतर्मुखी रहने की प्रेरणा इस प्रकार दे रहे हैं:-

अन्दर राहवाँ मैं बाहर न जावाँ, सदके जावाँ वारी महाराज।
सदके जावाँ बलिहार जावाँ, साँवले चरणाँ तो जावाँ वारी महाराज।।
अन्दर आवे प्रेम ते प्रीति, बाहर कामना सतावे महाराज।
कामना सतावे ते पई घबरावे, चैन न आवे दिन रात महाराज।।
अन्दर प्यार ते लाडाँ नू देखां, बाहर क्रोध सतावे महाराज।
क्रोध सतावे घर विच झगड़ा पवावे, वैर विरोध दिखावे महाराज।।
साँवले चरणां विच शान्ति आवे, बाहर लोभ सतावे महाराज।
लोभ सतावे रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे, भय दिखावे हरदम महाराज।।

मोह सतावे दुनियाँ विच फंसावे, घबराहट दिखावे हरदम महाराज।।
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ माला, बाहर दुःखां दी माला महाराज।
दुःखाँ दियाँ माला ते भरम दिखावन, भरमदी आई तुआडे द्वारे महाराज।।
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ सेजाँ, बाहर कंडियाँ दियाँ सेजाँ महाराज।
कंडियाँ दियाँ सेजाँ ते चोभा देवन, शरण मैं आई तुम्हारी महाराज।।
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ वर्षा, बाहर तृष्णा दी सर्पनी महाराज।
फुकारे मारे ते ज़हर खिलारे, रक्षा करो तुसीं आप महाराज।।
अन्दर देखां सम सन्तोष, बाहर अहंकार सतावे महाराज।
अहंकार सतावे अभिमान दिखावे, मौत खरीदी हुण आप महाराज।।
दासी ए पुकारदी ए, हुण पंजां तों बचाओ महाराज।
पंजां तों बचाओ पंजे मार मुकाओ, इको रूप दिखाओ महाराज।।

सजनों अंतर व बाह्य जगत के इस तुलनात्मक अध्ययन से हर विध् परिचित होने के पश्चात् हम मानते हैं कि आप सबके अन्दर यह भावना अवश्यमेव जाग्रत हुई होगी कि यथार्थ में 'मैं शरीर नहीं, अपितु आत्मा हूँ' और आत्मविजयी होने के लिए मुझे सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पढ़-समझ, आत्मा के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करनी है यानि आत्मज्ञानी बन आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जानने वाला आत्मज्ञ बनना है ताकि मैं जगत में विचरण करते समय अपने सारे कामों का केन्द्र आत्मा को मानते हुए, दूसरे लोगों के संदर्भ में अपने अस्तित्व और अपनी गतिविधियों के प्रति बहुत अधिक जागरूक रहने की प्रवृत्ति में ढल सकूँ व समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए आत्मतुष्ट हो जाऊँ। इस तरह आपको अब यह एहसास भी हो गया होगा कि आत्मतृप्त होकर ही मैं जितेन्द्रिय बन, निःस्वार्थ भाव से जीवन जीते हुए परोपकार कमा सकता हूँ और आत्मरक्षा करते हुए अपने ख़्याल को आत्म दर्शन में एकरसता से स्थित रख, अपने आध्यात्मिक बल का प्रयोग सर्वहित के निमित्त कुशलता से कर सकता हूँ। यही नहीं ए विध् ही मैं इस मिथ्या जगत में निष्पाप विचरते हुए यानि जगत में विशेष होते हुए भी उससे निर्लिप्त रह, अपना जीवन चरित्र परम पवित्र बना सकता हूँ

और सबके प्रति आत्मदृष्टि रखते हुए, आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास के साथ, अपने शास्त्रविहित् कर्त्तव्यों का अकर्त्ता भाव से पालन करते हुए आत्मकल्याण कर सकता हूँ। क्या सजनों आपको ऐसा ही एहसास हो रहा है जी?

हाँ जी।

तो फिर जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित अलौकिक वचनों को धारण करके ही आप अपने ख़्याल ध्यान को उस अलौकिक प्रकाश में स्थित रख सकते हो व दिव्य दृष्टि का सबक़ ले, दिव्य अवस्था को प्राप्त हो सकते हो। इस प्रकार श्रेष्ठता में बने रह, निर्गुण के खेलों को देखते-समझते हुए, लोकातीत होकर, निर्लिप्तता से सर्गुण के खेल-खेलते हुए अपने सुन्दर इलाही स्वरूप में बने रह सकते हो। कहने का तात्पर्य यह है कि इस अलौकिक दिव्य दृष्टि के सबक़ को आत्मसात् करते हुए दिव्य धर्मी यानि धर्मशील बन, सब इच्छाओं से मुक्त हो भूत, भविष्य और वर्तमान का सब कुछ जानने वाले बन त्रिकालदर्शी हो सकते हो और दिव्य रत्न कहला सकते हो।

उपरोक्त उपलब्धि के संदर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि स्वयं को सूक्ष्मतया परखो यानि आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने भावों, वृत्तियों, गलतियों, व्यवहार, प्रवृत्तियों, योग्यताओं-अयोग्यताओं और गुण-दोषों को भली-भांति समझने का प्रयत्न करो। ए विध् अपना मार्गदर्शन आप करते हुए, अपने ऊँचे आध्यात्मिक लक्ष्य को पाने के निमित्त, अपनी इच्छाओं और सांसारिक स्वार्थों का सहज ही त्याग कर, अपने हित या भविष्य के विषय में अपनी नीति स्वयं निर्धारित करो ताकि आत्मनिष्ठ बन सको। जानो ऐसा करने पर ही अफुरता से मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगा सकोगे और अंतर्ध्यान होकर ब्रह्म सत्ता का ग्रहण कर ताकतवर इंसान बन सकोगे। यही नहीं तभी हर प्राणी के प्रति परमात्म दृष्टि रखते हुए, आत्मलीन रहने वाले ब्रह्मज्ञानी बन सकोगे और आत्मोत्कर्ष कर अपना अनमोल मानव जीवन सफल बना पाओगे। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार हम तो यही कहेंगे:-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।
एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।
जन्म दी बाज़ी जित चाहे हार, फिर जीत हार है तेरे हाथ।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।
कुदरत ने तैनुं इन्सान बनाया,
इस जगत ते तां तूं आया उस ईश्वर दी है करामत।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।
माता सजन जी दे गर्भ विच आया, उस ईश्वर ने तेरा अंग अंग सजाया।
सूरज चांद दा डिट्ठा प्रकाश, अपने जन्म नूं न कर घात,
अपने जन्म नूं न कर घात।।
उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।
उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन दौलत चलेगा साथ।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।
खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं।
अकल न कर बरबाद, अकल कर लै तू आज़ाद।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।
अकल है सारा जगजीत मीतां दी ओ है ओ मीत अकल अपनी टिकाणे ला।
फिर तूं उस ईश्वर नूं पा, फिर जीत जीत है तेरे हाथ।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकलवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न, अकल इन्सानां नूं करदी है दंग।
अकल वेदों में है विदित, अकल वेदों में है अस्थित।
अकल है तुम्हारे पास, अपने जन्म नूं न कर घात,
अपने जन्म नूं न कर घात।।

शब्दः-

सजनों जे दुनियां वल्लों मुख मोड़ लिया,
फिर दुनियां वल मुख करना क्यों।
ऐह दुनियां है जे मुसाफिरख़ाना इस दुनियां वल फिर मुख फेरना क्यों।।

(श्री साजन जी दे मुख दी शाख)

(सुनो मेरे सजनों ईश्वर तुहानुं की कैहंदे हिन)

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।
अपनी अक्ल दे नाल कुल दुनियां नूं जगाओ, कुल दुनियां नूं जगाओ।
मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।
अपनी अक्ल दे नाल, दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ
दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ।
मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।
अपनी अक्ल दा है प्रकाश,
परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ।
मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि केवल अपने ही प्रयत्न से अपना उद्धार हो सकता है। अतैव इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि आत्मोद्धार करने हेतु समर्पित भाव से मति, बुद्धि और प्रेरणा को सावधान बनाने वाले सुमतिवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आ, उनसे बल, बुद्धि और आत्मज्ञान प्रदान की प्रार्थना करें और ए विध् आत्मिक ज्ञानी बन अपना हृदय सचखंड बना लें। कहने का आशय यह है कि उन मेहरों के वाली द्वारा बख़्शीश के रूप में प्रदत्त नाम-युक्ति व शब्द ब्रह्म विचारों को प्रवान कर, एक उत्तम पुरुष की भांति आजीवन उन पर सुदृढ़ बने रहने का अदम्य साहस दिखा स्वयं को कृतार्थ कर लें। जानो ऐसा होने पर ही जैसे ही हम प्राणशक्ति युक्त हो जाएंगे तो स्वतः ही मन में शांति का वास होगा। इस विषय में सतवस्तु

के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जहाँ शांति होती है वहीं शक्ति होती है। इस शक्ति विशेष को ग्रहण करने पर इंसान काल्पनिक जगत से ऊपर उठ एक विवेकशील आत्मपरक इंसान की तरह सशक्त होकर जन्म-मरण, रोग-सोग, ख़ुशी-गमी, मान-अपमान यानि दुःख-सुख, हर्ष-शोक आदि परिस्थितियों से अछूता रह, जीवन के परम पुरुषार्थों को सिद्ध कर लेता है और इसी जीवन में अपना उद्धार आप कर जीवनमुक्त हो जाता है यानि विश्राम को पा जाता है। यह है सजनों सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि जिसके लिए अब से आप सबको व्यावहारिक रूप से यत्नशील होना है और अपने ही भरसक प्रयास द्वारा जीवन के सार तत्त्व को पा, जन्म की बाज़ी जीत अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त करना है।

करबद्ध प्रार्थना
विश्वास रख, विश्वास रख
सजन श्री शहनशाह महाबीर जी पर विश्वास रख

हिम्मत दिखा, हिम्मत दिखा
और उनके वचनों पर चलते हुए
सहज ही भवसागर से पार हो जा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

चेतावनी-सुझाव सहित

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

इस पुस्तिका के अंत में सजनों चेतावनी देते हुए यही कहेंगे कि हर कलुकालवासी को कुमति से सुमति में आ, इसी जीवन में अपना आत्मोद्धार करने के प्रति जो अब तक ध्यान-कक्ष में लगने वाली कक्षाओं के माध्यम से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित यथार्थ ज्ञान से परिचित कराने का यत्न किया गया है, उसे अपने निर्धारित लक्ष्य को समयबद्ध प्राप्त करने हेतु संजीवनी मानो। आशय यह है कि इस यथार्थ ज्ञान को विधिवत् ग्रहण कर जीवन-शक्ति देने वाले के सम होने का, इस तरह गंभीरता से प्रयास करो कि सच्चे शौह से बिछुड़ी हुई आपकी वियोगिन सुरत का पुनः शब्द ब्रह्म के संग योग हो जाए और इस प्रकार वह संचित कर्मों यानि पूर्व जन्मों में किए हुए वे सब कर्म जिनका फल भोगना शेष है, से विमुक्त हो जगत से आज़ाद हो जाए व अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाए।

सजनों मानो कि यह अपने आप में आत्मस्मृति में आ, सतवस्तु के कुदरती शास्त्र में विहित्, शब्द ब्रह्म विचारों को ध्यानपूर्वक सुनने-पढ़ने के उपरान्त, उन्हें विचारसंगत धारण कर, अपने आचरण व व्यवहार में गहनता से आत्मसात् कर अकलमंद नाम कहाने जैसी सर्व मंगलकारी बात है।

इस तथ्य को समझते हुए सजनों हम सबके लिए आवश्यक हो जाता है कि इस युग परिवर्तन के दौर में अपना जीवन लक्ष्य भेदने के योग्य बनाने के प्रति जिस प्रकार कुदरत हमारा संचालन करना चाहती है, हम बिना तर्क उस व्यवस्था को सहर्ष स्वीकारते हुए समय की गति अनुसार आगे बढ़ जाएं और पुनः चेतनायुक्त स्फूर्ति से भरपूर नवजीवन प्राप्त कर, उसे इस जगत के रचनाकार परमेश्वर के निमित्त ही समर्पित कर दें। सजनों जानो यह अपने आप में 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो यानि उत्तम पुरुष बन सर्वहित के प्रति जीवन समर्पित कर परोपकार कमाने जैसी महान बात है।

यहाँ अर्पणार्थ जीवन जीने की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए जानो कि संसार की तरफ से मुख मोड़ जो भी ए विध् प्रभु की तरफ मुख घुमा लेता है और ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने में कुशल हो जाता है उसका संजीवनीकरण हो जाता है यानि आत्मिक ज्ञान अर्जन द्वारा, पूर्ण सचेतन अवस्था को प्राप्त कर उसका मन आत्मतृप्त हो जाता है और मनःशांति उसका आधारभूत स्वाभाविक गुण बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उस संकल्प रहित निष्कामी आत्मज्ञ सजन के लिए फिर संतोष-धैर्य का सिंगार पहन, सच्चाई-धर्म की राह पर प्रशस्त रहते हुए परोपकार कमाना सहज हो जाता है क्योंकि उसकी आत्मा माया के आवरण में ढके होने के बावजूद भी जीव रूप में जिस प्रयोजन की सिद्धि हेतु इस जगत में नश्वर शरीर धार कर आई होती है, वह स्वतन्त्र रूप से उसे पूरा कर पाने में सक्षम हो जाती है। ऐसा कमाल होने पर परमात्मा के प्रति समानता का भाव रखने वाला वह आत्मज्ञानी अपने ख़्याल को गगनमण्डल में स्थित रखते हुए त्रिकालदर्शी हो जाता है जो अपने आप में आद्, जुगाद व परम आद् की वास्तविकता से परिचित हो, शून्य दृष्टि होने की बात होती है। जानो शून्यहृदय होने की यह सर्वोच्च अवस्था अपने आप में जीवनमुक्ति की स्थिति कहलाती है।

इस परिप्रेक्ष्य में यह भी ज्ञात हो कि जो भी मानव इस आत्मीय अवस्था को प्राप्त हो जाता है उसकी सुरत सदा कंचन रहती है और वह दिव्य दृष्टि, तेजस्वी संतोष-धैर्य के सिंगार से अलंकृत हो, इस जगत में सहज मानवीय स्वभाव

अनुकूल निर्विकारता से विचरता है। इस प्रकार जब उसके मन-वचन-कर्म द्वारा वास्तविक रूप से मानव होने की छवि झलकती है तो उसकी इलाही आकर्षक शोभा देखते ही बनती है। जानो ऐसा होने पर ही वह जीवनयुक्त विचारशील सजन, अन्यों को भी सजीवता से जीवन जीने के प्रति उत्साहित करने जैसा अद्भुत कृत्य कर पाता है और इस प्रकार सजनता का प्रतीक बन जाता है।

सजनों यह अपने आप में कुसंग में फँसे हुए अविवेकी, पथभ्रष्ट इंसानों को, संसारी धन-दौलत का संचय करने के स्थान पर, परमार्थी धन एकत्रित करने में प्रवृत्त करने जैसी अतुलनीय बात होती है क्योंकि ऐसा सुनिश्चित कर पाने पर ही कोई इंसान परमेश्वर की शास्त्रविहित् आज्ञाओं का पालन करते हुए अपना जीवन परम अर्थ के निमित्त अर्पित कर, अपना व सबका उद्धार कर पाता है।

सजनों परोपकारी दाता सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होते हुए, हम व आप सब अपने इस सर्वोपरि कर्त्तव्य की भाल कर सर्वहितकारी बन पाएँ इस हेतु ही तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि जानो आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते सतवस्तु की सभा के सौभाग्यशाली सदस्य हो, इसलिए आपके लिए बनता है कि आप सतवस्तु के आने से पूर्व ही, अपना जीवन बनाने हेतु उस युग की निराली चाल पकड़ लो यानि समभाव-समदृष्टि पर स्थिर रह सर्वप्रथम अपनी जिह्वा स्वतन्त्र कर लो। ऐसा सुनिश्चित करना अति आवश्यक मानो क्योंकि शास्त्र कह रहा है कि सतवस्तु में वही रहेगा जो अपने बचाव के लिए समभाव के सबक़ को परिपक्व कर लेगा। इसी के साथ हीः-

'श्री राम ओ रोम रोम में रम रिहा,
हर जनचर में जड़ प्रकाशे, चेतन प्रकाशे,
श्री राम ओ रोम रोम में रम रिहा हर बनचर में
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान',

इस मंत्र के भावार्थ अनुरूप नज़रिया अपनाकर अपना संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन कर लो। इस तरह जन्म-मरण के झोले से सदा के लिए मुक्ति प्राप्त कर

लो और सतवस्तु की जनता बन सतवस्तु का नज़ारा देखने के योग्य सजन पुरुष बन जाओ।

सजनों ऐसा ही हो इस हेतु अविलम्ब शास्त्रविहित् नीति-नियमों अनुसार सच्चाई-धर्म के रास्ते पर चलते हुए नाम-ध्यान में महाराज जी के साथ जुड़े रहो और इस प्रकार भक्ति-शक्ति धारण कर व अपना गृहस्थ आश्रम ठीक चलाते हुए यशस्वी बनो। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही यानि सत्य को धारण कर धर्म के निष्काम रास्ते पर सीधा विचरते हुए जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग अन्दर देखने की प्रवृत्ति में ढलने पर ही, आप एक निगाह एक दृष्टि हो सतवस्तु में इन्सान बन सकोगे। यही नहीं ए विध् ही आपकी सुरत रानी बनकर अन्दर महाराज जी के साथ टापू-टापू में विचरती हुई सर्गुण में पहुँच जाएगी और महाराज जी के साथ रहते हुए पटरानी बनकर उनकी चालें पकड़ेगी और महाराज जी के साथ मेल खा जाएगी। इस तरह आवागमन का चक्कर मिट जाएगा। कहने का आशय यह है कि :-

इस वक्त दी शुद्ध कमाई दे मुताबिक ओ सजनों
सतवस्तु में मौज उड़ानी जे, ओ मौज उड़ानी जे
सतवस्तु में एक दृष्टि एक दर्शन

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए सजनों बचे हुए थोड़े सालों में ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार परमार्थी कमाई कर लो यानि जाँचना-तोलना और तुलना करते हुए अपनी शरीर रूपी मशीनरी ठीक कर लो। ए विध अपनी चाल तबदील कर सतयुग का पहरेवा पहन लो और इसी वृत्ति पर स्थिर रह अपना घर सतयुग बना लो व एकता, एक अवस्था में आ विश्राम को पा लो। यहाँ याद रखो कि यदि यत्न करें इन्सान तो क्या कुछ नहीं हो सकता। इसीलिए सब सजनों को सुझाव है कि वे जल्दी से जल्दी घर सतयुग बना बेफिक्रे हो जाएं।

सजनों आप सब ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने में समर्थ हों ही हों, उसके लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार सतवस्तु के बारे में मुकम्मल बात 'सतवस्तु'

नामक पुस्तक में सविस्तार संकलित कर आप सब तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है ताकि आप समयबद्ध अपने जीवन का महान प्रयोजन सिद्ध कर उत्तम गति को प्राप्त हो सको। सबकी जानकारी हेतु समभाव दिवस के शुभावसर पर यानि दिनाँक 7 सितम्बर 2020 को इस पुस्तक का विमोचन किया जाएगा। अतः सजनों यदि आप भी अपना जीवन बना, घर सतयुग बनाना चाहते हो तो इस महान मंगलकारी कार्य की सिद्धि हेतु इस पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन करते हुए, वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को सतत् चिंतन एवं मनन द्वारा जीवन व्यवहार में लाना। जानो ऐसा करने पर ही जीवन के उन्नति पथ पर प्रशस्त हो विचार पर खड़े हो पाओगे व वर्तमान संक्रमण काल में अपना व अपनी कुल का बचाव कर पाओगे।

सारतः सजनों हम तो यही कहेंगे कि सच्चेपातशाह जी ने समय अनुसार आपको सब कुछ है दे दिया है अतः अब अपने जीवन का उद्धार करना या न करना यह स्वयं आपके अपने हाथ में इस संदर्भ में उचित तो यही है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए मन को प्रभु में लीन रखो। इस प्रकार जितेन्द्रिय बन अविलम्ब जगत से आज़ाद रहने की हिम्मत दिखाओ और जन्म की बाज़ी जीत रोशन नाल रौशनाई हो जाओ।

अंत में याद रखोः-

चमत्कार एक है, एक ही विशेष है
हर अन्दर प्रवेश ओ सजनों एक है
चमत्कार एक है, सजनों चमत्कार एक है

निवेदन

इस पुस्तक को और अधिक जीवन उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES
Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA
Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH
B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY
UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities.
Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH
World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA
Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation.
Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org

SATYUG KINDERGARTEN
A place where a child can play, explore and learn. It creates a classroom environment that respects the individual needs of each child and provides a flexible schedule based on these needs.
www.satyugkindergarten.in

SATYUG GRAM SHIKSHA KENDRA
Aimed to upgrade the education levels of the downtrodden children of weaker sections of the society through after-school study classes, and creating livelihood opportunities for out-of-school children by setting up Vocational Training Centers.

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org